वैश्विक संवाद

7.4

17 भाषाओं में प्रति वर्ष में 4 अंक

पत्रिका

International Sociological Association

कारी पोलानयी लेविट के साथ वार्ता

ट्रम्पवाद की प्रकृति

पीटर इवान्स,
राका रे,
क्रिस्टीना मोरा,
रूथ मिल्कमेन,
डायलन राइले,
सिहान तुगल,
गे सीडमन

अर्जेन्टीना में समाजशास्त्र की रक्षा

जुआन पियोवानी,
फर्नान्डा बिजेल,
अलेजेन्ड्रो ग्रिमसन,
ऑगस्टिन साल्विया,
बर्निस रूबियो,
गेब्रियल केसलर

विशिष्ट कॉलम

> अली शरीयाती को याद करते हुए

> *वैश्विक संवाद* का चीनी संस्करण

अंक 7 / क्रमांक 4 / दिसम्बर 2017
http://isa-global-dialogue.net/

GD

> सम्पादकीय

वैश्विक संवाद का संक्षिप्त इतिहास

वैश्विक संवाद 2010 में एक आठ–पृष्ठीय पत्रिका के रूप में प्रारम्भ हुआ। यह चार भाषाओं–अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश एवं चीनी में प्रारम्भ हुआ और यह एक सरल माइक्रोसोफ्ट प्रोग्राम जिसमें चार लोग कार्य करते थे, के साथ प्रस्तुत किया गया। सात वर्ष पश्चात् यह प्रति वर्ष चार अंग, प्रत्येक लगभग 40 पृष्ठ लंबा, सत्रह भाषाओं में प्रकाशन के साथ एक पूर्ण पत्रिका बन गया है। प्रत्येक अंक में विश्व भर से सौ से अधिक लोगों का सहयोग सम्मिलित होता है। अभी तक प्रकाशित 31 अंकों में लगभग 550 लेख 69 देशों के लेखकों द्वारा लिखे गये हैं। प्रारम्भ से ही, हमने सभी के लिए लेखों तक पहुंच सुलभ बनाने की कोशिश की है। यह दोनों अनुवाद में आसानी और प्रसार के एक सिद्धान्त के रूप में कार्य करता है। आखिरकार, समाजशास्त्र में बहु–आपदाओं की तरफ छलांग लगा रही दुनिया के लिए महत्वपूर्ण संदेश है–और अधिक महत्वपूर्ण संदेश।

जहां हमारे पास उपलब्ध नई प्रौद्योगिकी इन आपदाओं में तेजी ला सकती हैं, वहीं वे हमें नये अवसर भी प्रदान करती हैं। डिजीटल मीडिया ने वैश्विक संवाद को संभव बनाया लेकिन इसे कम नहीं समझा जाना चाहिए, इतने सारे लोगों के मानवीय श्रम के बिना नहीं। यद्यपि आई एस ए इस कार्य के लिए एक टोकन राशि की पेशकश में सक्षम थी, वरिष्ठ सहयोगियों के मार्गदर्शन में युवा समाजशास्त्रियों ने वैश्विक संवाद को उनकी भाषाओं विशेष रूप से वे जो वैश्वीकरण की प्रक्रिया में हाशिये में थी, में अनुवादित करने के अवसर को पकड़ा। उनका उत्साही सहयोग सबसे अधिक निहारने योग्य रहा है।

प्रारंभ में ही हमारे ग्राफिक डिजाइनर आगस्ट बाग (उर्फ अर्बु) ने वैश्विक संवाद को एक रोमांचक रूप रंग देने का प्रस्ताव रखा। वह लोला बुसुतिल, जो आई एस ए की तीन भाषाओं में पारंगत थी, के साथ टीम बना प्रबंध संपादक बने। लोला सम्पूर्ण कार्य के देखरेख करती हैं। वे यह ध्यान रखती हैं कि प्रत्येक भाषा का प्रत्येक अंक उच्च मानकों का पालन करें। उनकी जोड़ी ने सुन्दर और कुशल मैगजीन को प्रदान किया जो वैश्विक संवाद की वेबसाइट को डिजाइन और चलायमान रखने वाले गुस्तावो तानिगुती द्वारा सभी के लिए उपलब्ध कराई जाती है।

मेरे आई. एस. ए. के उपाध्यक्ष, और फिर बाद में अध्यक्ष होने के दौरान मुझे दुनिया के हर कोने से समाजशास्त्रियों को जानने का सौभाग्य मिला। उन संपर्कों ने पत्रिका की सामग्री को पोषित किया। जब लेखों को एक सुलभ प्रारूप में संपादित करने का कार्य अधिक होने लगा तो मैंने गे सीडमैन को मदद करने को कहा। एक प्रतिष्ठित समाजशास्त्री होने के पहले वे एक पत्रकार और संपादक रही थीं। उन्होंने बड़ी उदारता से ''सोशियोलोजीस'' को सरल लेकिन सुरूचिपूर्ण अंग्रेजी में बदलने के अक्सर चुनौतीपूर्ण कार्य को स्वेच्छा से स्वीकार किया। वे लेखकों पर ध्यान देते हुए अपने निष्पादन में कुशल और प्रभावी थी और पूरी प्रक्रिया में सलाहकार के रूप में कार्य करती थी। गे द्वारा अपनी सुरूचि पूर्ण कला लगाने के पूर्व, बर्कले के स्नातक छात्रों का एक दल गैर–अंग्रेजी प्रस्तुतियों को अंग्रेजी में अनुवाद करता है।

मुझे बहुत सारे लोगों को धन्यवाद देना है, लेकिन उस सूची के शीर्ष पर राबर्ट रोजेक है, जिसने शुरू में ही बिना किसी शर्त के सेज से वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई। प्रारम्भ से ही, आई. एस. ए. की संगठनात्मक रूप से निपुण और समर्पित कार्यवाहक इजाबेला बारलिंसका वैश्विक संवाद की समर्थक रही हैं। इन सात वर्षों में मुझे आई. एस. ए. की कार्यकारिणी का समर्थन प्राप्त हुआ है, जिसके बिना यह पूरा उद्यम संभव नहीं हो पाता। मेरे अध्यक्ष काल के अंत के बाद, मार्गरेट अब्राहम और विनिता सिन्हा ने उत्साह से वैश्विक संवाद को जारी रखने का समर्थन किया। अब हमारे पास दो शानदार नये संपादक हैं, ब्रिजिट आलनबाकर एवं क्लाउस डोरे जो वैश्विक संवाद को नई उँचाइयों पर ले जाएंगे। वैश्विक संवाद की सामग्री और दिशा के बारे में नये विचारों और सुझावों के साथ उन्हें लिखने में संकोच मत करियेगा।

वैश्विक संवाद के पृष्ठों को पढ़ने में वैश्विक इतिहास का प्रवाह दृष्टिगत होता है। हमने 2010 में, 2008 के वैश्विक मंदी के परिणामों, और आशावान् सामाजिक आंदोलनों–कब्जा करो, अरब स्प्रिंग, इंडिगनाडोस और श्रमिक पर्यावरणीय, नारीवादी और अन्य सामाजिक न्याय आंदोलनों के साथ पिक्वेटोरोस के उभार के साथ, प्रारम्भ किया। लेकिन 2013 के प्रारम्भ में संकट के बादल गहराने लगे और हमने प्रतिक्रियावादी, लोकतंत्र विरोधी रूझान देखा। हमने कार्ल पोलानयी को अपने मसीहा के रूप में अपनाया। कार्ल पोलानयी की द ग्रेट ट्रास्फोर्मेशन ने जो हमें काफी पहले सीखाया था उसे पुनः सीखा : बेलगाम बाजारों के प्रति विरोधी आंदोलन उतने ही फासीवादी हो सकते हैं जितने समाजवादी, उतने ही सत्तावादी चिंतन जितने लोकतांत्रिक। पूंजीवाद और लोकतंत्र के मध्य विरोधा–भासों के उनके विश्लेषण से अभी हमें बहुत कुछ सीखना है। अतः यह काफी उपयुक्त है कि मेरा अंतिम अंक कार्ल पोलान्मी लेविट के साथ वार्तालाप के साथ प्रारम्भ होता है जहां वे अपने पिता की प्रतिभा और जीवन को दुनिया के साथ साझा करती है।

मैंने राष्ट्रीय समाजशास्त्रों के व्यापक फैलाव पर परिसंवाद आयोजित करने का प्रयास किया है लेकिन मैंने कभी भी अमरीका पर इस तरह ध्यान केन्द्रित नहीं किया। वैश्विक संवाद के अंतिम अंक के सम्पादक के रूप में, मैंने सात मित्रों और सहयोगियों को उनके व्यक्तिगत रूचिक के लेंस के माध्यम से ट्रम्पवाद के उभार चिंतन करने के लिए आमंत्रित किया है। उन्होंने अमरीका को दक्षिणपंथ की तरफ ऐतिहासिक और वैश्विक सम्मान के संदर्भ में देखा है। इस प्रतिक्रियावादी काल की एक विशेषता समाजशास्त्र को बचाव की मुद्रा में रखना है–न सिर्फ नवउदारवाद के खिलाफ बल्कि अधिकतर उभरते अधिनायकवाद के खिलाफ रखना है। अर्जेन्टीना में जुआन पियोवानी के नेतृत्व में समाज वैज्ञानिकों ने समाजशास्त्र के पेशेवर, नीतियोग्य, विवेचनात्मक एवं लोक आयामों को दर्शाने वाले अध्ययनों के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर इसके बचाव का अभियान छेड़ा है। यहां पर पांच लेख उनकी दृष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह प्रोजेक्ट अभी प्रारंभिक अवस्था में है लेकिन अन्य राष्ट्रीय समाजशास्त्रों को इस पर ध्यान देना चाहिए।

> >

अंत में, हमें अपने पूर्ववर्तियों–समाजशास्त्री जिन्होंने सत्तावाद के खिलाफ लड़ाई लड़ी जैसे प्रख्यात मार्क्सवादी एवं इस्लामी चिंतक अली शरीयाती जिनकी मृत्यु इरानी क्रांति, जिसका आगाज उन्होंने किया था, के दो वर्ष पूर्व हुई, को नहीं भूलना चाहिए। उनके विचार उस क्रांति को निरंतर परेशान करते हैं कि वह क्या हो सकती थी, क्या हो सकती हैं। हमें आज इस तरह के भविष्यवक्ता की बहुत जरूरत है जो नियतिवाद और आदर्शवाद के मध्य संतुलन को बनाने वाले समाजशास्त्र को प्रेरित कर सकते हैं। वैश्विक संवाद एक ऐसा स्थान है जहां हम सामूहिक रूप से नई संभावनाओं की पहचान और कल्पना कर सकते हैं और साथ ही हमारे छोटे से ग्रह के विनाश के खिलाफ चेतावनी भी दे सकते हैं। ■

अपने पिता विख्यात कार्ल पोलानयी के बारे में माइकल बुरावे के साथ बातचीत करती ***कारी पोलानयी लेविट***

पीटर रवान्स, राका रे, क्रिस्टिनी मोरा, रूथ मिल्कमेन डाइलन राइले, सिहान तुगल *और* ***गे सीडमेन*** *ट्रम्पवाद के उद्भव और अर्थ पर चर्चा करते हुए।*

> ***वैश्विक संवाद*** को आईएसए वैबसाइट पर 17 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियां **ब्रिगिट ऑलेनबेचर** और **क्लाउस डोरे** को प्रेषित की जा सकती हैं।

GD

सेज प्रकाशन की उदार ग्रांट से ***वैश्विक संवाद*** का प्रकाशन संभव है।

> संपादक मण्डल

सम्पादक: माइकल बुरावे

सह–सम्पादक: गे सीडमेन

प्रबन्ध–सम्पादक: लोला बुसुती, अगस्त बागा

परामर्श सम्पादक मण्डल:
Margaret Abraham, Markus Schulz, Sari Hanafi, Vineeta Sinha, Benjamín Tejerina, Rosemary Barbaret, Izabela Barlinska, Dilek Cindoğlu, Filomin Gutierrez, John Holmwood, Guillermina Jasso, Kalpana Kannabiran, Marina Kurkchiyan, Simon Mapadimeng, Abdul-mumin Sa'ad, Ayse Saktanber, Celi Scalon, Sawako Shirahase, Grazyna Skapska, Evangelia Tastsoglou, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

क्षेत्रीय सम्पादक

अरब दुनिया:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

अर्जेंटीना:
Juan Ignacio Piovani, Pilar Pi Puig, Martín Urtasun.

बांग्लादेश:
Habibul Haque Khondker, Hasan Mahmud, Juwel Rana, US Rokeya Akhter, Toufica Sultana, Asif Bin Ali, Khairun Nahar, Kazi Fadia Esha, Helal Uddin, Muhaimin Chowdhury.

ब्राजील:
Gustavo Taniguti, Andreza Galli, Ângelo Martins Júnior, Lucas Amaral, Benno Alves, Julio Davies.

भारत:
रश्मि जैन, ज्योति सिदाना, प्रज्ञा शर्मा, निधि बंसल, पंकज भटनागर

इंडोनेशिया:
Kamanto Sunarto, Hari Nugroho, Lucia Ratih Kusumadewi, Fina Itriyati, Indera Ratna Irawati Pattinasarany, Benedictus Hari Juliawan, Mohamad Shohibuddin, Dominggus Elcid Li, Antonius Ario Seto Hardjana.

ईरान:
Reyhaneh Javadi, Sina Bastani, Mina Azizi, Hamid Gheissari, Vahid Lenjanzadeh.

जापान:
Satomi Yamamoto, Masataka Eguchi, Kota Nakano, Aya Sato, Kaori Sayeki, Riho Tanaka, Mariye Yamamoto.

कजाखिस्तान:
Aigul Zabirova, Bayan Smagambet, Adil Rodionov, Gani Madi, Almash Tlespayeva, Kuanysh Tel.

पोलैण्ड:
Jakub Barszczewski, Katarzyna Dębska, Paulina Domagalska, Adrianna Drozdrowska, Łukasz Dulniak, Jan Frydrych, Krzysztof Gubański, Sara Herczyńska, Kinga Jakieła, Justyna Kościńska, Karolina Mikołajewska-Zając, Adam Müller, Zofia Penza-Gabler, Anna Wandzel, Jacek Zych, Łukasz Żołądek.

रोमानिया:
Cosima Rughiniș, Raisa-Gabriela Zamfirescu, Maria-Loredana Arsene, Timea Barabaș, Diana Alexandra Dumitrescu, Radu Dumitrescu, Iulian Gabor, Dan Gîtman, Alina Hoară, Alecsandra Irimie Ana, Alexandra Isbășoiu, Rodica Liseanu, Cristiana Lotrea, Mădălina Manea, Anda-Olivia Marin, Bianca Mihăilă, Andreea Elena Moldoveanu, Rareș-Mihai Mușat, Oana-Elena Negrea, Mioara Paraschiv, Codruț Pînzaru, Ion Daniel Popa, Anda Rodideal, Adriana Sohodoleanu.

रूस:
Elena Zdravomyslova, Anna Kadnikova, Anastasia Daur.

ताईवान:
Jing-Mao Ho.

टर्की:
Gül Çorbacıoğlu, Irmak Evren.

मीडिया परामर्शक: Gustavo Taniguti.

> इस अंक में

सम्पादकीय : वैश्विक संवाद का एक संक्षिप्त इतिहास **2**

द ग्रेट ट्रांसफोर्मेशन को आकार देना : कारी पोलानयी लेविट के साथ वार्तालाप
माइकल बुरावे, यू. एस. ए. द्वारा **5**

> ट्रम्पवाद की सामाजिक उत्पत्ति

ट्रम्प के आर्थिक राष्ट्रवाद के शब्दाडम्बर के पीछे
पीटर इवांस, यू. एस. ए. द्वारा **11**

ट्रम्पवाद एवं श्वेत पुरूष कामगार वर्ग
राका रे, यू. एस. ए. द्वारा **14**

आव्रजन और ट्रम्प–काल राजनीति
जी. क्रिस्टीना मोरा, यू. एस. ए. द्वारा **16**

ट्रम्प का श्रमिकों पर आक्रमण
रूथ मिल्कमेन, यू. एस. ए. द्वारा **18**

अमेरिकन ब्रुमेयर?
डाइलन रिले, यू. एस. ए. द्वारा **21**

लेनिनवादी दक्षिण पंथ का उभार
सिहान तुगल, यू. एस. ए. द्वारा **24**

ब्राजील एवं दक्षिण अफ्रीका में लोकतांत्रिक व्याकुलता
गे डब्ल्यू. सीडमन, यू. एस. ए. द्वारा **27**

> अर्जेन्टीना में समाजशास्त्र की रक्षा

जांच के दायरे में अर्जेन्टीना
जुआन इग्नेसियो पिओवानी, अर्जेन्टीना **30**

अर्जेन्टीना के सामाजिक विज्ञानों का मानचित्रण
फर्नान्डा बीगल, अर्जेन्टीना **32**

अर्जेन्टीना में सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता
अलेजेन्ड्रों ग्रिमसन, अर्जेन्टीना **35**

समकालीन अर्जेन्टीना में सामाजिक असमानता
ऑगस्टिन साल्विया एवं **बर्निस रूबियो,** अर्जेन्टीना **38**

अर्जेन्टीना में सामाजिक पूंजी की खोज
ग्रेबियल केसलर, अर्जेन्टीना **41**

> विशिष्ट स्तम्भ

अली शरीयात, इस्लाम का भूला हुआ समाजशास्त्री
सुहील रसूल मीर, भारत **43**

वैश्विक संवाद का चीनी संस्करण
जिंग–माओ हो, ताइवान **45**

> द ग्रेट ट्रांसफोर्मेशन को आकार देना

कारी पोलानयी लेविट के साथ वार्तालाप

कारी पोलानयी लेविट

एम. बी. : चलो प्रारम्भ से शुरू करते हैं। हमें कार्ल पोलानयी को हंगरी निवासी के रूप में सोचने की आदत है लेकिन वे वास्तव में वियना में पैदा हुए थे। सही है?

के. पी. एल. : हां, यह सही है। दिलचस्प बात यह है कि मेरे पिता और मैं दोनों वियना में पैदा हुए थे और मेरी मां का जन्म वियना जो निश्चित रूप से बौद्धिक जीवन का एक महान केन्द्र, आस्ट्रो–हंगेरियन साम्राज्य का महान महानगर था से थोड़ी ही दूर एक छोटे शहर में हुआ था।

उनका परिवार यानि की कार्ल पोलानयी के माता–पिता वियना में एक हुए। कार्ल की मां सीसिलिया बोहल को उनके पिता ने विलना, जो तब रूस में था, से वियना काम सीखने भेजा था। अपनी शिक्षा

कार्ल पोलानयी समाजशास्त्र और उसके आगे एक विचारक बन गये हैं। उनकी पुस्तक द ग्रेट ट्रांसफोरमेशन एक शास्त्रीय कृति है जो समाजशास्त्र के लगभग हर उपक्षेत्र को छूती है। उसका प्रभाव समाजशास्त्र से कहीं आगे अर्थशास्त्र, राजनैतिक विज्ञान, भूगोल एवं मानवशास्त्र तक फैला है। बाजार व्यवस्था द्वारा समाज के ताने बाने को नष्ट करने के तरीकों की आलोचना करने के कारण, इसने नवउदारवाद चिंतन और व्यवहार के पिछले चार दशकों में कहीं अधिक समर्थक जुटा लिए हैं। इसी समय यह पुस्तक वस्तुकरण के स्त्रोतों और परिणामों का अन्वेषण और वस्तुकरण के विरोधी आंदोलनों – वे आंदोलन जिन्होंने फासीवाद और स्तालिनवाद के साथ साथ सामाजिक लोकतंत्र को बढ़ाया, का विवरण प्रस्तुत करती है। अतः इसकी हमारे वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट प्रासंगिकता है। कार्ल पोलानयी का काल 1886 से 1964 के मध्य का है। उनकी पुत्री कारी पोलानयी लेविट के साथ इस साक्षात्कार में, वे अपने पिता के जीवन एवं द ग्रेट ट्रांस्फोर्मेशन अग्रेषित प्रभावों का वर्णन करती हैं। वे अपनी मां इलोना डकजिनस्का, जो खुद आजीवन एक राजनैतिक कार्यकर्त्ता एवं बुद्धिजीवी थी के साथ अपने पिता के विशेष सम्बन्ध पर भी ध्यान आकर्षित करती हैं। यहां **कारी पोलानयी लेविट** कार्ल पोलानयी के जीवन के चार चरण : हंगरी का चरण, आस्ट्रिया का चरण, इंग्लैंड का चरण और फिर उत्तर अमरीका का चरण को करती हैं। डा. लेविट स्वयं एक अर्थशास्त्री हैं जो मांट्रियल में रहती हैं। वे कई कृतियों की लेखिका हैं जिसमें फ्रॉम द ग्रेट ट्रांसफोर्मेशन टू द ग्रेट फाइनेनशलाईजेन (2013) और कार्ल पोलानयी के जीवन और कार्य के संपादित संग्रह (1990) सम्मिलित हैं। नीचे आने वाला साक्षात्कार दुनियाभर में होने वाली अनेक कार्ल पोलानयी कांफ्रेस, जो ब्रिजिट ऑलेनबाच और उसके सहयोगियों द्वारा योहानेस केप्लर विश्वविद्यालय, लिंज (ऑस्ट्रिया) में जनवरी 10–13, 2017 में आयोजित हुई, के अंत में **माइकल बुरावे** के साथ सार्वजनिक बातचीत का एक संक्षिप्त संस्करण है।

> >

के कारण, वे रूसी और जर्मन भाषा बोलती थी। वे, कार्ल के पिता, एक युवा हंगेरियाई यहूदी इंजीनियर, मिहाली पोलासेस्क से वियना में मिली। वे हंगेरियाई और जर्मन भाषा बोलते थे।

इसलिए परिवार ने जर्मन भाषी परिवार के रूप में जीवन प्रारम्भ किया। और कुछ समय पहले ही, मुझे पत्राचार से पता चला कि मेरे पिता ने बुडापेस्ट में व्यायामशाला में प्रवेश करने तक हंगेरियन भाषा नहीं सीखी थी।

मेरे पिता का हंगरी का समय, जो निश्चित रूप से बहुत महत्वपूर्ण है, भी रूसी प्रभाव से आकारित हुआ था। यह रूसी प्रभाव उस समय के राजनैतिक रूप से सामाजिक लोकतंत्रवादी से काफी भिन्न रूसी समाजवादियों के माध्यम से आया। यह समाजवाद देहात, किसानों के प्रति अधिक उन्मुख था। इसके अराजकवादी तत्व थे। कम्यून इस राजनैतिक विन्यास के बहुत बड़ा हिस्सा थे।

और मुझे यह कहना पड़ेगा कि यह रूसी उनके पिता, जो एक एंग्लोफाइल थे की ओर से संतुलित था। और यदि मेरे पिता के जीवन में दो महत्वपूर्ण साहित्यिक व्यक्ति थे तो एक शेक्सपीयर थे–वे उनकी अंग्रेजी लेखनी के संग्रह को युद्ध में ले गये थे और सभी महान रूसी लेखकों में, मैं कहूंगी दोस्तोवेस्की थे।

एम. बी. : और फिर वहां रूसी प्रवासी क्रांतिकारियों का प्रभाव था–उनमें से एक क्लैच्को नामक व्यक्ति था।

के. पी. एल. : हां, सैमुअल क्लैचको एक असाधारण व्यक्ति थे। वे वियना में रहते थे। वे रूसी क्रांतिकारियों को अंतर्राष्ट्रीय और यूरोपीय लोगों के साथ जोड़ने वाले अनौपचारिक दूत थे। वे विलना के एक यहूदी परिवार से थे और उन्होंने अपनी जवानी कन्सास में एक रूसी कम्यून में बिताई थी। कम्यून ज्यादा दिन तक नहीं चला। वह अंततः टूट गया और लोग कहते हैं कि वे 3000 मवेशियों को शिकागो लाए और उसके बाद उन्होंने न्यूयोर्क में अंतरराष्ट्रीय महिला कपड़ा श्रम संघ का दौरा किया। वे एक कार्यकर्त्ता थे। कन्सास कम्यून का नाम निकोलई शाइकोवस्की नामक एक रूसी हस्ती पर रखा गया था।

लेकिन जब क्लैचको वियना आये, उनकी पोलासेस्क परिवार के साथ घनिष्ठ मैत्री हुई और वे मार्क्सवादी साहित्य को खरीदने वाले या जिसके लिए भी वे वियना आये थे, रूसी लोगों का ध्यान रखते थे।

और मेरे पिता ने मुझसे कहा – जिसे मैं कभी नहीं भूली – कि इन लोगों का उन पर और उनके चचेरे भाई इरविन स्जाबो, जिसने हंगरी के प्रबुद्ध जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी; वे भी एक प्रकार के आराजक समाजवादी थे, पर भारी प्रभाव डाला। उनमें से कुछ के पास जूते नहीं थे और वे अपने पैरों को अखबारों में बांधते थे। मेरे पिता इन लोगों की शूरता और साहस से अत्यधिक प्रभावित थे। और कुल मिलाकर मेरे पिता की इन क्रांतिकारियों के लिए.... मैं कहने वाली थी ''रूमानी'' लेकिन बहरहाल काफी सम्मान था और विशेषकर बकुनिन के लिए जो मेरा अनुमान है इनमें से सबसे बड़ी हस्ती है, एक आदमी जो यूरोप के प्रत्येक जेल को तोड़ कर बाहर निकल आया।

एम. बी. : और सामाजिक क्रांतिकारी सहानुभूति उनके जीवन पर्यन्त चलती रही जो उनकी बोल्शेविक के प्रति संदिग्धता की आंशिक रूप से व्याख्या करती है।

के. पी. एल. : हां, यह उनके जीवन पर्यन्त चलता रहा। यह रूस के सामाजिक लोकतंत्रवादियों के प्रति उनके प्रतिरोधी सम्बन्ध को समझाता है। उनमें वे सम्मिलित हैं जो बाद में बोल्शेविक बहुमत धड़ बन जाएंगे।

एम. बी. : आपके पिता अपने छात्र जीवन से ही राजनैतिक रूप से सक्रिय थे। क्या यह सही है?

के. पी. एल. : हां, वे गेलिलियो सर्कल नाम से जाने वाले छात्र आंदोलन जिसका जर्नल स्जाबाद गोडोंलत था, जिसका अर्थ ''मुक्त सोच'' है, के संस्थापक अध्यक्ष थे। वह राजतंत्र, अभिजात वर्ग, चर्च आस्ट्रो–हंगेरियन साम्राज्य के खिलाफ था। यह कोई समाजवादी आंदोलन नहीं था, यद्यपि इसके कई प्रतिभागी समाजवादी थे। और अंत में, इसमें व्यायामशालाओं के साथ विश्वविद्यालयों से भी युवा लोग शामिल थे। मैंने कहीं पढ़ा था, इसने 2000 तक साक्षरता कक्षाएं लगवाईं। तो इसकी मुख्य गतिविधि शिक्षा थी।

एम. बी. : और फिर वहां प्रथम विश्व युद्ध था।

के. पी. एल. : वे रूसी मोर्चे पर युद्ध में घुड़सवार सेना अधिकारी थे। परिस्थिति काफी भयानक थी। वह रूसी लोगों और आस्ट्रो–हंगेरियन दोनों के लिए समान रूप से भयानक थे। उन्हें टाइफस हो गया जो एक भयानक बीमारी है। आखिरकार, उन्होंने मुझे बताया, जब उनके घोड़े को ठोकर लगी और वह उन पर गिर कया उन्होंने सोचा कि वे मरने वाले हैं लेकिन जब वे उठे उन्होंने अपने आप को बुडापेस्ट के एक सैन्य अस्पताल में पाया।

एम. बी. : और युद्ध के अंत में वहां हंगरी की क्रांति थी।

के. पी. एल. : 1918 की हंगरी की क्रांति ने युद्ध को समाप्त किया और उसी वर्ष की शरद ऋतु में प्रथम गणराज्य के साथ काउण्ट करोल्यी प्रथम राष्ट्रपति बने। इसलिए यह आम तौर पर एस्टर या क्राइसेंथियम क्रांति या शरद ऋतु को दर्शाने वाला कोई अन्य फूल के नाम पर जानी जाती है।

यह फिर काउंसिल की अल्पकालिक क्रांति द्वारा अनुगामित हुआ जिसका 1919 के अगस्त में अंत हुआ जब वह हंगरी के बुद्धिजीवियों, कार्यकर्त्ताओं, कम्यूनिस्टों, समाजवादियों, उदारवादियों, जिसमें मेरे पिता भी सम्मिलित थे, के निर्वासन का कारण बनने वाली प्रतिक्रांति से पराजित हुई।

एम. बी. : तो तुम्हारे पिता क्रांति के अंत होने के पहले ही चले गये थे। क्या यह सही है?

के. पी. एल. : हां, वे अंत के पहले चले गये।

एम. बी. : उन्होंने हंगरी की क्रांति को किस प्रकार से देखा?

के. पी. एल. : वे कई अन्य लोगों की तरह उभयवाही थे। मुझे लगता है उन्होंने प्रारम्भ में पूरे देश में परिषदों के गठन का स्वागत किया। लेकिन जब परिषदों ने व्यापार का थो राष्ट्रीयकरण–सभी का–का निर्णय किया–मुझे लगता है उन्होंने सोचा इसका अंत काफी खराब होगा। जो वास्तव में हुआ।

एम. बी. : इसलिए हंगरी कम्यूनिस्ट पार्टी के नेता बुडापेस्ट से वियना भाग गये?

के. पी. एल. : हां। निर्वासित कम्यूनिस्ट पार्टी के दो नेता थे, बेला कुन और जार्ज लुकाक्स। इन दोनों के मध्य एक प्रतिद्वंदिता थी। और यहां एक हास्यास्पद कहानी है जिसमें मेरी मां शामिल है–जिसने 1919 का वर्ष मास्को में बिताया जहां उन्होंने अपनी भाषाई कौशल और शिक्षा के कारण द्वितीय कम्यूनिस्ट अंतरराष्ट्रीय की बैठकों को आयोजित करने हेतु कार्ल राडेक के साथ कार्यालय में कार्य किया। अंततः जब वे वियना लौटी, उन्हें निर्वासित हंगरी

>>

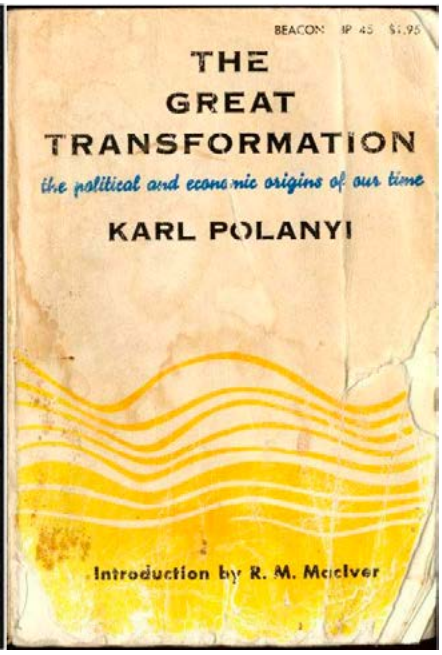

कार्ल पोलानयी,
द ग्रेट ट्रांस्फोर्मेशन के लेखक

के कम्यूनिस्टों को देने के लिए कुछ वित्तीय सहायता दी गई थी। यह एक हीरे के रूप में थी और उसे टूथपेस्ट की टयूब में रखा गया था। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि उन्हें इसे लुकाक्स को देनी थी, क्योंकि बैंककर्मी के पुत्र होने के कारण शायद उन्हें कुन से अधिक विश्वसनीय माना जा रहा था।

एम. बी. : लेकिन इस समय तक तुम्हारे माता–पिता नहीं मिले थे। असल में, वे अगले वर्ष 1920 में वियना में मिलेंगे। क्या यह सही है?

के. पी. एल. : यह एक प्राणहर मुलाकात थी–जो वियना के एक शुभचिंतक द्वारा हंगरी कम्यूनिस्टों और वामपंथी प्रवासियों के प्रयोग के लिए दिये गये विला में हुई। युवकों के समूह की चहेती के रूप में, मेरी मां के अनुसार, किसी ने भी यह अपेक्षा नहीं की थी कि वे अपने से दस वर्ष अधिक उम्र के व्यक्ति, जिसका जीवन पूरा हुआ प्रतीत हो रहा था–जो उदास था और कोने में नोट्स लिख रहा था, के प्रति आकर्षित होगी।

एम. बी. : लेकिन वे दोनों बहुत भिन्न प्रकार के लोग थे। एक अधिक कार्यकर्त्ता है और दूसरा अधिक बुद्धिजीवी है, एक अपना समय खाइयों में बिताती है और दूसरा अध्ययन में।

के. पी. एल. : हां और नहीं। आप जानते हैं, मेरे पिता जहां भी वे रहते, जो कुछ भी चल रहा है के साथ संलग्न रहते थे। वे आम जनता के लिए लेख लिखते थे, उसके लिए जो कोई भी उसे पढ़ता और जो कोई भी उसे प्रकाशित करता। हंगरी में ऐसा था। वियना में ऐसा था। और इंग्लैंड में भी।

इसलिए वे वास्तव में वर्तमान में संलग्न थे। हां वे एक बुद्धिजीवी थे। लेकिन वे एक स्थिर विचार वाले जुनूनी बुद्धिजीवी और जो जहां कहीं भी वे जाते हैं–एक जगह से दूसरी जगह–उसी विचार को अपने साथ ले जाते हैं, नहीं थे। नहीं, नहीं, कदापि नहीं।

मेरी मां ने वास्तव में हंगरी क्रांति में एक असाधारण युवा महिला के रूप में उच्च दर्जे की भागीदारी के साथ गतिविधियां प्रारम्भ की थी : एक तरह से अपने शेष जीवन में कुछ ऐसा नहीं कर सकती थी जो इसकी बराबरी कर पाता। और उनके बारे में कुछ उदासी थी। आपको पता है, जब आप बहुत ही कम उम्र को हासिल कर ले जिसकी आपकी आकांक्षा हो – जैसे इतिहास में, इस मामले में कम्यूनिस्ट समाजवादी आंदोलन में, स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाना – फिर आप अपने बाकी जीवन में जो चाहे कर लो, वह उसकी बराबरी नहीं कर पाता है।

एम. बी. : तो उन दोनों के ही अपने दुखी अनुभव थे लेकिन फिर 1923 में कुछ खास घटित हुआ। तुम्हारा जन्म हुआ। और तुम्हारे माता–पिता पुनर्जीवित हुए।

के. पी. एल. : हां, उनके विवरण के अनुसार, मेरे जन्म ने मेरे पिता की अवसाद से निकलने में मदद की जो ऐसी सभी चीजों की तरह एक निजी अनुभव था। फिर भी, उन्होंने इसके बारे में काफी लिखा। उन्होंने उन सभी भयानक घटनाओं, विशेष रूप से भयंकर, व्यर्थ और बेकार युद्ध के लिए जो उनके विचार में उनकी पीढ़ी की जिम्मेदारी थी, के बारे में लिखा। उन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध के बारे में बहुत लिखा – कैसे इसने बहुत कम परिवर्तन किया। यह सिर्फ एक भयानक नरसंहार था। एक मानवीय त्रासदी और उन्होंने अपनी पीढ़ी की जिम्मेदारी को महसूस किया।

और जिम्मेदारी की वह भावना–दुनिया की स्थिति, देश की स्थिति के लिए सामाजिक जिम्मेदारी–मैं सोचती हूं कि क्या वह उस पीढ़ी के चरित्र की एक विशेषता थी और जिम्मेदारी की यह भावना अब खत्म हो गई है। क्या हमारे पास अभी भी ऐसे लोग हैं, बुद्धिजीवियों सहित, जो हमारे समाज के लिए जिम्मेदारी की भावना रखते हैं जैसा वे और उनकी पीढ़ी के कई अन्य लोग रखते थे?

एम. बी. : यह वास्तव में बहुत ही खास पीढ़ी थी और अनेक कारणों से। लेकिन इसमें से एक कारण रेड वियना था–1918 से 1933 तक वियना का सामाजिक पुनर्निर्माण। यह तुम्हारे पिता के द्वारा वियना में बिताए वर्षों के साथ ओवरलेप भी है।

के. पी. एल. : हां, रेड वियना इतिहास का एक अद्भूत प्रकरण – नागरिक समाजवाद में एक उल्लेखनीय प्रयोग था। यह वास्तव में एक ऐसी स्थिति थी जिसमें श्रमिकों को विशेषाधिकार प्राप्त थे और उन्हें सामाजिक रूप से भी विशेषाधिकार प्राप्त थे – सेवाओं के मामले में, जो अद्भुत सामूहिक घरों का निर्माण हुआ था, उनके संदर्भ में; इसमें से कार्ल–मार्क्स–हॉफ, बेशक, उसका उत्कृष्ट उदाहरण था।

लेकिन सिर्फ यहीं नहीं। माहौल और सांस्कृतिक स्तर काफी अनोखे थे। यह इस बात से अंकित होता है कि कार्ल पोलानयी जैसा कोई

>>

व्यक्ति, जिसकी कोई प्रस्थिति नहीं थी और वह किसी विश्वविद्यालय में सेवारत नहीं था, समाजवाद और अन्य मुद्दों पर सार्वजनिक व्याख्यान दे रहा था। वह स्थापित वित्तीय पत्रिका में लुडविग वान मिसिज की बाजार उन्मुख सोच को चुनौती दे सकता था। मिसिज उन्हें जवाब देते और मेरे पिता उन्हें प्रत्युत्तर देते। वहां विश्वविद्यालयों के बाहर, समुदाय में एक बौद्धिक जीवन था।

एम. बी. : तुम्हें इस अवधि की क्या स्मृति है?

के. पी. एल. : मैं बच्ची ही थी, लेकिन मुझे समाजवादी आंदोलन द्वारा साल्जबर्ग की मनोहर झीलों पर आयोजित अद्भुत ग्रीष्मकालीन शिविर याद हैं। और दुनिया भर से लोग रेड़ वियना को, आधुनिक नगरवाद के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण के रूप में, देखने के लिए आते थे।

यद्यपि मेरे माता–पिता में से किसी को भी सामाजिक लोकतंत्र से महान लगाव नहीं था, दोनों ने बाद में स्वीकार किया कि वियना तथाकथित रेड वियना– में बिताए वो वर्ष उल्लेखनीय और प्रशंसनीय थे। शायद वही एक समय था जब मैंने अपनी मां को सामाजिक लोकतंत्र के लिए कुछ भी सराहनीय कहते सुना था। मेरे पिता भी, हकीकत में, कोई बड़े समर्थक नहीं थे।

एम. बी. : 1922 में तुम्हारे पिता ने समाजवाद गणना पर एक प्रसिद्ध लेख लिखा जो समाजवाद के एक विभिन्न दृष्टि–गिल्ड समाजवाद का एक तरह से जश्न था। यह भी वियना के नागरिक समाजवाद से प्रभावित था।

के. पी. एल. : ठीक है, देखिये! उस समय दुनिया में कोई देश नहीं था जहां समाजवादी अर्थव्यवस्था थी, सही है? रूस एक क्रूर युद्ध से उबर रहा था। तो वहां एक समाजवादी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के आयोजन की संभावना पर बौद्धिक बहस छिड़ी हुई थी और मिसिज ने पहला शॉट दागा। वे पहले व्यक्ति थे जिसने लेख में लिखा कि यह असंभव था क्योंकि कीमत आधारित बाजार के बिना संसाधनों के आवंटन का कोई तर्कसंगत मार्ग नहीं था। मुझे विश्वास है आप में से अधिकांश जो अर्थशास्त्र का अध्ययन करते हैं, इस तर्क से परिचित हैं। और फिर पोलानयी ने आंशिक रूप से ओटो बायर और आंशिक रूप से जी. डी. एच कोल पर आधारित साहचर्य समाजवाद के एक मॉडल से इसे चुनौती थी।

एम. बी. : तुम्हारे पिता जब वियना में थे, उनका 1917 की प्रथम रूसी क्रांति के प्रति क्या दृष्टिकोण था?

के. पी. एल. : अच्छा, सर्वप्रथम, 1917 में पहली रूसी क्रांति–फरवरी क्रांति थी–जिसने युद्ध को समाप्त किया। उनका मानना था कि यह बहुत अच्छा है क्योंकि हंगरी में सभी अन्य की भांति वे भी इस युद्ध का अंत चाहते थे। युद्ध अत्यन्त अलोकप्रिय था। फिर युद्ध का अंत हुआ। मैं सोचती हूं कि प्रारंभिक रूसी क्रांति का स्वागत किया गया।

एम. बी. : अक्टूबर क्रांति के बारे में क्या हुआ?

के. पी. एल. : पोलानयी के लिए फरवरी और अक्टूबर क्रांति दोनों ही बुर्जआ क्रांति थी। वे फ्रांस की क्रांति के बाद आने वाली, और जिसने यूरोप पार किया, अंतिम लहर थी जो यूरोप के सबसे पिछड़े देश रूस पहुंची। उन्होंने इसे इस तरह रखा।

एम. बी. : तो वास्तविक क्रांति सामूहीकरण और पंचवर्षीय योजनाओं की तरफ कदम के साथ बाद में आती है?

के. पी. एल. : हां। मेरे विचार से वे कहेंगे कि समाजवाद पंचवर्षीय योजनाओं के साथ ही 1928 या 1929 के बाद आया। इसके पूर्व, रूस एक मुख्य रूप से खेतिहर देश, एक कृषि प्रधान देश था। हमारे पास अब 1940 में बेनिंगटन द्वारा लिखा एक रोचक लेख है जो हाल ही में प्रकाश में आया है। इसमें वे रूस के आंतरिक दुविधा के बारे में बात करते हैं। सरल रूप से : श्रमिक वर्ग, जो कम्यूनिस्ट पार्टी का आधार था, का शहरों पर नियन्त्रण था और वे किसानों पर जिनका ग्रामीण क्षेत्रों में खाद्य आपूर्ति पर नियन्त्रण था, पर निर्भर थे। लेकिन फिर एक बाह्य दुविधा भी थी : रूसी किसानों के लिए अनाज, जो उस समय रूस की प्रमुख निर्यात वस्तु थी, को निर्यात करना संभव नहीं था क्योंकि अंतरराष्ट्रीय बाजार विश्वव्यापी मंदी में ध्वस्त हो गये थे।

इसने यूरोप के सबसे पिछड़े देश के तीव्र औद्योगीकरण को शुरू करने के और इसे न सिर्फ उद्योग बल्कि कृषि का भी राष्ट्रीयकरण के एक समाजवादी प्रोजेक्ट के रूप में प्रारम्भ करने के निर्णय में योगदान दिया।

एम. बी. : तो यह पहले से ही विरोधाभासी है, सही? क्योंकि निश्चित तौर पर हम उन्हें अभी तक सामाजिक क्रांतिकारियों और सहभागी लोकतंत्र के विचार का अनुमोदन करते हुए सुनते हैं लेकिन अब ऐसा लगता है कि वे स्तालिनवाद का समर्थन कर रहे हैं।

के. पी. एल. : हां। जैसा कि अन्य लोगों द्वारा भी इशारा किया गया है, मेरे पिता के जीवन के बारे में भी, यह बहुत प्रासंगिक था। और उनके सोच के बारे में निश्चित रूप से जो आकर्षक है और जो इसे कभी कभी विरोधाभासी भी बनाता है–यह है कि वह किसी एक सिद्धान्त से आगे नहीं बढ़ती है। यह स्थितियों और उनकी संभावनाओं से आगे बढ़ती है।

यह पहली विपरीतता है : यथार्थ और स्वतन्त्रता–वास्तविक स्थिति क्या है और उस समय रूस के लिए क्या संभावनाएं हैं? आप के पास एक क्रांति है जिसका नेतृत्व सर्वहारा दल ने किया है। आपके पास कृषक वर्ग है जो राष्ट्रीयकृत नहीं होना चाहते हैं–वे भूमि पर स्वामित्व चाहते हैं और उन्होंने किया एवं उनके साथ खाद्य आपूर्ति पर नियन्त्रण के द्वारा काफी शक्ति थी।

और फिर आप के समक्ष एक अंतरराष्ट्रीय स्थिति थी। कुछ ही समय पश्चात् 1930 के दशक में आपके पास फासीवाद था। केवल इंग्लैंड में ही, मेरे पिता सोवियत संघ के एक मजबूत समर्थक बनते है और ऐसा जर्मन विस्तारवाद एवं नाजीवाद के मध्य आसन्न संघर्ष के संदर्भ में हुआ।

एम. बी. : तो आपके पिता ने 1933 में वियना छोड़ दिया।

के. पी. एल. : हां, उन्होंने वियना आसन्न फासीवाद के कारण छोड दिया था। प्रसिद्ध आर्थिक पत्रिका डेर आस्टेरेजिस्जे फोल्कस्विरट जहां वे एक प्रमुख संपादकीय सदस्य थे, की संपादकीय समिति ने यह निर्णय लिया कि पोलानयी को इंग्लैंड जाना चाहिए क्योंकि वहां की राजनैतिक स्थिति काफी कमजोर थी। उनकीं अंग्रेजी उत्कृष्ट थी। उनके ताल्लुकात थे। इसलिए वे 1933 में इंग्लैंड चले गये। वे इंग्लैंड से लगातार लेख भेजते रहे जब तक 1938 में पत्रिका का प्रकाशन बंद नहीं हो गया।

हम एक परिवार के रूप में नहीं गये। मेरे पिता सन् 1933 में गये। मुझे 1934 में इंग्लैंड भेजा गया और मैं हमारे बहुत करीबी अंग्रेजी मित्र डोनाल्ड और इरीन ग्रांट, जिन्हें हम वियना में बहुत अच्छे से जानते थे, के साथ रहने गई। वे ब्रिटेन के छात्र ईसाई आंदोलन के लिए युद्ध पश्चात् के दरिद्र आस्ट्रियाईयों को सहायता प्रदान करने का कार्य करने वाले ईसाई समाजवादी थे और इसी तरह हमारी

>>

लिंज, आस्ट्रिया में माइकल बुरावे के साथ संवाद में कारी पोलानयी लेविट

मुलाकात उनसे हुई थी। और मैं उनके साथ रही। मेरी मां दो वर्ष पश्चात् 1936 में आईं।

एम. बी. : चलिए, हम आपके पिता, जो अब इंग्लैंड में थे, की तरफ चलते हैं। उन्होंने वहां क्या किया?

के. पी. एल. : जब वे प्रथम बार 1933 में पहुंचे उनके पास कोई निश्चित रोजगार नहीं था। बेट्टी एवं जॉन मैकमुररे एवं ग्रांट परिवार जो तथाकथित ईसाई वामपंथ के समर्थ थे उनके सहयोगी थी। वहां कम्यूनिस्ट भी थे और धार्मिक नेता, अधिकांश प्रोटेस्टेंट, भी थे।

उन्होंने फासीवाद के सार, जिसे वे ईसाई मूल्यों के प्रति अवज्ञा समझते थे, पर एक लेख लिखा जो उनके द्वारा सह–सम्पादित पुस्तक, ईसाई धर्म और साजिक क्रांति, में शामिल होगा। मेरे पिता ने अपने अंग्रेज ईसाई मित्रों के एक अध्ययन समूह का मार्क्स की प्रारंभिक लेखन के दो खण्ड जिसमें द जर्मन आइडियोली और प्रसिद्ध पेरिस पांडुलिपियां जो 1932 में ही प्रकाशित हुई थी, सम्मिलित थी, का नेतृत्व किया। उन्होंने उन्हें इन लेखों से पढ़ कर और अंग्रेजी में अनुवाद कर के सुनाया।

वे इन कृतियों के बारे में बड़े उत्साहित थे। मुझे उनके साथ सहमति की उनकी भावना याद है। मैं कार्ल मार्क्स के प्रारंभिक लेखन को मार्क्स और पोलानयी का समान प्रारम्भ बिन्दु मानती हूं।

एम. बी. : वे ऐसा ही कुछ द ग्रेट ट्रांसफोर्मेशन में कहते हैं। तो उनके शिक्षण में क्या सम्मिलित था? इंग्लैण्ड ने उनकी सोच को कैसे प्रभावित किया?

के. पी. एल. : 1937 में जा कर कार्ल को श्रमिक शिक्षा संघ (WEA), एक बहुत बड़ा और पुराना प्रौण शिक्षा आंदोलन, के साथ रोजगार प्राप्त हुआ। इंग्लैंड में यह रस्किन कॉलेज, जो विश्वविद्यालय जाने में अक्षम कामगार वर्ग के लोगों को आगे शिक्षा प्राप्त करने के लिए योग्य बनाता है, के साथ जुड़ा था। मेरे पिता को केन्ट और ससेक्स में अंग्रेजी प्रांतीय शहरों में पढ़ाने का अवसर मिला। वे परिवारों के साथ रात भर रहते थे। उन्हें कामगार वर्ग के परिवारों के जीवन को अधिक अंतरंगता से देखने का अवसर मिला और वे उनकी परिस्थितियों, वास्तव में, उनके निम्न सांस्कृतिक स्तर पर अचंभित थे। वियना के कामगार वर्ग की तुलना में वे सांस्कृतिक रूप से गरीब थे, भले ही पैसे के मामले में आस्ट्रिया ब्रिटेन से कहीं अधिक गरीब देश था।

उन्हें पढ़ाने के लिये अंग्रेजी, सामाजिक और आर्थिक इतिहास, जिसके बारे में वे कुछ नहीं जानते थे, विषय मिले। यह उनके लिए स्वाध्याय का काल था। यदि आप द ग्रेट ट्रांसफोर्मेशन पुस्तक के पार्श्व में देखेंगे–आप को उनके द्वारा किये गये प्रचुर अध्ययन की श्रंखला को देखेंगे। यह मार्क्स की ग्रण्डरिसे, जो मजेदार बात है इसी प्रकार के लेखक–रिकार्डो, माल्थस और अन्य पर निर्भर है। ये लेखक प्रारंभिक औद्योगिक क्रांति पर लिख रहे थे।

इसलिए मेरी मां ने लिखा–और यह द लाइलीहुड ऑफ मैन पुस्तक की प्रस्तावना, जो मरणोपरांत प्रकाशित हुई, में लिखा है कि इंग्लैंड में ही कार्ल ने बाजार समाज, जो लोगों को मानवता से वंचित करता है, के प्रति समर्पित नफरत की जड़ों को मजबूत किया है। वे इसे इस तरह रखती हैं।

फिर, निस्सन्देह, उन्होंने इंग्लैंड में वर्ग प्रणाली को खोज लिया। यह अभिभाषण के अंतर में निहित थी। और उन्होंने वर्ग व्यवस्था का भारत की जाति के और अमरीका में प्रजाति के समान वर्णन किया।

एम. बी. : 1940 में कार्ल पोलानयी को यू. एस. के बेनिंग्टन कॉलेज में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया।

के. पी. एल. : हां, बेनिंग्टन में उन्हें रॉकफेलर फाउंडेशन से द ग्रेट ट्रांसफोरमेशन लिखने के लिए दो–वर्षीय फैलोशिप मिली। उन्हें बेनिंग्टन के अध्यक्ष से अच्छा समर्थन प्राप्त था लेकिन उन्हें रॉकफेलर फाउंडेशन को रिपोर्ट करना पड़ता था। वे जो भी उन्हें पढ़ने को देते, वह उन्हें पसंद नहीं आता। उन्हें उनके विश्वविद्यालय में होने की उपयुक्तता के बारे में गंभीर संदेह था।

उन्होंने लिखा कि वास्तव में उनकी अधिक रूचि ''हंगरी के कानून और कॉलेज व्याख्यान एवं दर्शन'' में थी। यह कहना कि उनकी रूचि दर्शन में थी, एक तरह से नीचे जाना था। हालांकि उन्होंने ग्रांट का नवीयन कर दिया। दो वर्षों की समाप्ति पर–अब हम 1943 में है–मेरे पिता इंग्लैंड वापिस जाने के लिए बहुत उत्सुक थे। वे संयुक्त राज्य अमेरिका में नहीं रहना चाहते थे। वे इंग्लैंड में युद्ध–पश्चात के नियोजन में भाग लेना चाहते थे।

इस समय तक स्तालिनग्राद की लड़ाई ने युद्ध के ज्वार को बदल दिया था; यह स्पष्ट था कि मित्र राष्ट्र जीतने वाले थे और उन्होंने द ग्रेट ट्रांसफोर्मेशन के अंत से पहले के दो अध्याय अधूरे छोड़ दिये। और अगर आप देखों, इन अध्यायों में अधूरा होने के संकेत है। अंतिम अध्याय नहीं, लेकिन अंतिम के पहले दो अध्यायों में।

यदि वे पुस्तक खत्म करने के लिए रूके होते, मुझे लगता है कि प्रस्तावित पुस्तक ''कॉमन मेन्स मास्टर प्लान'' की ड्राफ्ट रूपरेखा को वे शायद इन दो अंतिम अध्यायों में सम्मिलित करते। कुछ ऐसा ही उन्होंने सहकर्मियों के पास छोड़ दिया। इन दो अंत से पहले अध्यायों पर काफी विवाद और झगड़ा था।

>>

“बाजार तंत्र को मनुष्यों एवं उनके प्राकृतिक वातावरण के भाग्य का एकमात्र निर्देशक बनने की अनुमति देने का परिणाम समाज का विध्वंस होगा।”

कार्ल पोलानयी

एम. बी. : लेकिन अंत में, वे अमरीका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में नोकरी के लिए वापस लौटेंगे लेकिन तुम्हारी मां का अमरीका में रहना वर्जित था इसलिए वे कनाड़ा में रहने लगे।

के. पी. एल. : दूसरा विकल्प इंग्लैंड में रहना हो सकता था, जहां मेरे पिता डब्ल्यू. ई. ए. के लिए कार्य करना जारी रख सकते थे। लेकिन यह भी स्पष्ट था कि वास्तव में उनके पास कहने को कुछ था। उन्हें एक पुस्तक लिखनी थी और उनके पास करने के लिए काम था। और उन्हें इंग्लैंड के किसी विश्वविद्यालय में कोई नियुक्ति नहीं मिलने वाली थी। वह भी बहुत स्पष्ट था। इसलिए 1947 में कोलम्बिया से यह प्रस्ताव आया। वह द ग्रेट ट्रांसफोर्मेशन पर आधारित था। पुस्तक में कोलम्बिया विश्वविद्यालय, जो अर्थशास्त्र के स्कूलों में अपने संस्थावाद के लिए जानी जाती है और एक तरह से पोलानयी के दृष्टिकोण–के राबर्ट मैकआइवर का प्राक्कथन था।

फिर लंदन में इलोना को बताया गया कि उन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रवेश से निषेध किया गया है। यह एक बड़ी समस्या थी। मेरे पिता बहुत, बहुत परेशान थे। वे चाहते थे कि अमरीकियों पर उनका विचार बदलने के लिए दबाव डालें और उन्होंने कहा कदापि नहीं। यह संभव नहीं है।

इसलिए उन्होंने यह विचार बनाया कि शायद वे कनाड़ा में घर बसा सकते हैं और अंततः उन्होंने उन्हें मनाया कि यही व्यवहार्य समाधान था और उन्होंने टोरोण्टो के बाहरी इलाके में एक ग्रामीण क्षेत्र में उनके लिए एक सुन्दर छोटा सा घर बसाया। ऐसा 1950 में हुआ। वे एक छात्र की तरह न्यूयोर्क से नियमित रूप से आते थे। वे क्रिस्मस और ईस्टर और गर्मी की छुट्टियों के लिए आते थे।

और अंत में जब वे 1953 में शिक्षण से सेवानिवृत्त हो गये, उन्होंने अधिक समय कनाड़ा में बिताया। उनके विद्यार्थी उनसे मिलने लगातार कनाड़ा आते रहे। और कई अन्य लोग भी आये।

एम. बी. : और उनका शोध एक नई दिशा में मुड़ गया। वे मानवविज्ञान अध्ययनों में अधिक रूचि लेने लगे। लेकिन मुझे लगता है वह एक अन्य बातचीत के लिए कहानी है। कार्ल पोलानयी के जीवन के अद्भूत वृत्तान्त के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। आपने द ग्रेट ट्रांसफोर्मेशन की असाधारण प्रागैतिहास में गहन शोध किया। मेरे विचार से अब हम यह बेहतर समझते हैं कि वह कैसे बीसवीं शताब्दी के बहुत भिन्न ऐतिहासिक अनुभवों का परिणाम थी और यह आज भी इतनी महत्वपूर्ण क्यों बनी हुई है। ■

> ट्रम्प के आर्थिक राष्ट्रवाद के शब्दाडम्बर का पार्श्व

पीटर इवांस, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यू. एस. ए. और आई. एस. ए. की अर्थव्यवस्था और समाज (आर सी 02), भविष्य शोध (आर सी 07), श्रम आंदोलनों (आर सी 44), सामाजिक वर्ग एवं सामाजिक आंदोलन (आर सी 47) एवं ऐतिहासिक समाजशास्त्र (आर सी 56) पर शोध समिति के सदस्य।

अमरीका प्रथम का राष्ट्रपति ट्रम्प की बयानबाजी

"आर्थिक राष्ट्रवाद'' का एक सम्मानित इतिहास रहा है। एलेक्जेंडर हैमिल्टन से लेकर फ्रैडरिख लिस्ट तक, लेटिन अमरीका, अफ्रीका और एशिया में उनके बीसवीं सदी के उत्तराधिकारियों तक अमीर देशों को पकड़ने की कोशिश कर रहे गरीब देशों के लिए आर्थिक राष्ट्रवाद एक बौद्धिक और वैचारिक उपकरण रहा है। क्या ट्रम्प का ''अमरीका पहले'' का शब्दाडम्बर

> >

और ब्रिटेन के वैश्विक आर्थिक संबंधों की ब्रेक्सिट की अस्वीकृति एक नये प्रकार के ''आर्थिक राष्ट्रवाद के उदय'' की तरफ संकेत तो नहीं है। करीब से देखने से पता चलता है यह संविन्यास गंभीर रूप से भ्रामक है।

''आर्थिक राष्ट्रवाद'' का डोनाल्ड ट्रम्प का संस्करण निष्प्रभावी दादागिरी के साथ रिबन काटने की बयानबाजी का मिश्रण है। ''पहले अमरीका'' डोनाल्ड ट्रम्प का पसंदीदा नारा है, लेकिन जहां ''आर्थिक राष्ट्रवाद'' का उनका संस्करण वैश्विक नवउदारवादी पूंजीवाद की असफलता की लोकप्रियता का आभारी है, यह वैश्विक पूंजीवाद को कोई खतरा नहीं प्रदान करता है। निष्क्रिय ट्रांस–पैसिफिक पार्टनरशिप (टी. पी. पी.) की कब्र पर एक अतिरिक्त बेलचा भर कर मिट्टी डालने से आनंदपूर्ण क्षण की प्राप्ति हो सकती है लेकिन मौजूदा व्यापार समझौतों में मूलभूत परिवर्तन अब एक विलक्षण प्रोजेक्ट लगते हैं। अमरीकी कॉर्पोरेशन को विदेशों में नौकरियां स्थानांतरित नहीं करने के लिए दबाव डालते प्रबोधन उत्कृष्ट अभिनय हो सकता है लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं है कि दलीलें वास्तव में वैश्विक उत्पादन नेटवर्कों को बाधित कर रही हैं।

स्टीव बेनन – जो दुर्भाग्य से ट्रम्प मण्डली के ''बड़ी तस्वीर'' के रणनीतिकार के निकटतम थे, ने क्यों दावा किया कि ''आर्थिक राष्ट्रवाद'' प्रशासन के तीन मुख्य स्तम्भों में दूसरा है? ट्रम्प की भांति, बेनन जानते हैं कि ''आर्थिक राष्ट्रवाद'' एक मेम हैं जिसे संचित असंतोष का लाभ उठाने के लिए, नस्लवाद और अज्ञातजनभीत अपील में इजाफा और विस्तार करने के लिए काम में लिया जा सकता है। इसके साथ ही मौजूदा राजनैतिक व्यवस्था को कमजोर किया जा सकता है।

चार दशक पूर्व जब द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् ''पूंजीवाद के स्वर्णिम युग'' समाप्त होने के साथ, नवउदारवादी पूंजीवाद के अंतर्गत जिंदगी अधिकांश अमरीकियों के लिए उदार नहीं रही है। जैसे आय और विशेषाधिकार और अधिक बेरहमी से शीर्ष के 0.001% (हाल ही में पिकेटी, सईज और जैकमेन द्वारा लिपिबद्ध) पर स्थानांतरित हुई है, स्थिर वेतन चिंताजनक और कम प्रतिष्ठा वाले यथार्थ के साथ मिल गये हैं। सहस्त्राब्दी के अंत तक चिंता आसक्ति की एक नई महामारी और कम शिक्षित श्वेत पुरूषों के लिए जीवन प्रत्याशा में अभूतपूर्व ऐतिहासिक गिरावट के रूप में परिवर्तित हो गई है।

पारंपरिक अमरीकी राजनैतिक व्यवस्था ने स्वयं को कटघरे में पाया। पूंजी की शक्ति का लोकप्रिय लामबंदी से सामना करने की जोखिम को उठाने के अनिच्छुक लेकिन सेहत में गिरावट और बढ़ते लोकप्रिय गुस्से के प्रक्षेपवक्र को बदलने में असमर्थ, स्थापित नेता पहले से ही दशकों से आम अमरीकी को यह समझाने कि 'मुक्त व्यापार' पर आधारित वैश्विक शासन ही उनके जीवन को बेहतर कर सकती है के असफल द्विदलीय प्रयासों से गुजर चुके हैं।

ट्रम्प द्वारा ''आर्थिक राष्ट्रवाद'' के शब्दाडम्बर का आक्रामक रूप से अपनाया जाने ने उन्हें डरपोक व्यवस्था की इस कमजोर वैश्विक विरासत से अलग कर दिया। पूंजीवाद के विदेशी नेताओं के साथ सौदेबाजी में कमजोरी के संरचनात्मक द्वारा संचालित ऋणात्मक प्रभावों को कम करने – कमजोरी जिसे जुझारू राष्ट्रवादी सौदेबाज द्वारा पलटा जा सकता था – से आर्थिक राष्ट्रवाद ने उसकी आर्थिक नीति के वास्तविक कसौटी से ध्यान हटा दिया : इसने पूंजी को और अधिक व्यवहार से कुछ सुरक्षा प्रदान करने वाले विनियमों को हटाने की अनुमति दे दी। इस राजनैतिक छलकपट को समर्थन देने से आर्थिक राष्ट्रवाद ट्रम्प के एजेण्डे का दूसरा स्तम्भ बनता है। आधुनिक राजनैतिक इतिहास में ट्रम्प अमरीकी राष्ट्रपतियों में से सबसे कम लोकप्रिय है, लेकिन आर्थिक राष्ट्रवाद उसका सबसे प्रभावशाली वैचारिक अस्त्र है। उसके बिना, नस्लवाद और विद्वेष की अपील ही उसके वैचारिक अस्त्र होते।

''वैश्विक मुक्त बाजार सभी के लिए संपन्नता लाते हैं'' के मंत्र के राजनैतिक दिवालियापन पर ब्रेक्सिट एक पूरक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। डेविड़ कैमरून ने शायद यह मान लिया हो कि आम ब्रिटेनवासी लंदन शहर के बैंकर्स के प्रति उनके उत्साह को साझा करेंगे। ये वे बैंकर्स थे जिनके लाभ वैश्विक वित्तीय बाजार में उनकी प्रतिष्ठित स्थिति पर आधारित थे लेकिन उनकी शेखी ने ब्रिटेन के लोगों को आर्थिक वैश्वीकरण के एक विशिष्ट पर प्रत्यक्ष मत डालने का अवसर दिया – ऐसेट कुछ पर क्लिंटन से लेकर ओबामा तक किसी भी अमरीकी राष्ट्रपति ने अनुमति देने का साहस नहीं किया। विश्ववाद की अस्वीकृति पर ब्रिटिश संस्थान अभी भी अचंभित है।

ट्रम्प और ब्रेक्सिट वैश्विक पूंजी की लाभ निकालने की क्षमता के लिए खतरा नहीं हैं लेकिन वे वैश्विक नवउदारवाद के राजनैतिक बुनियादी ढाँचे में उथल पुथल का संकेत या शायद पुष्टि कर सकते हैं। वैश्विक उत्तर में, राजनैतिक अभिजन लेनिन की उक्ति ''एक लोकतांत्रिक गणराज्य पूंजीवाद का संभवतः सर्वोत्तम राजनैतिक खोल है'' को अब मान नहीं सकते हैं। अभिजनों के लिए साधारण नागरिकों को वैश्विक पूंजीवाद से सम्बन्धित मुद्दों पर मत डालने की अनुमति देना जोखिम भरा प्रतीत होता है। मतदाता अभिजन अविश्वास का प्रतिफल देते हैं और इस बात पर संदेह करते हैं कि सामान्य रूप से उपलब्ध रोस्टर में से राजनैतिक नेतृत्व का चयन बेहतर जीवन देगा। अभिजन और आम जन दोनों ही सवाल करते हैं कि क्या उदारवादी लोकतांत्रिक प्रक्रियाएं उनके हित में कार्य करेगी और यह संभावना बढायेगी कि जैसा बोल्फगैंग स्ट्रीक कहते हैं, ''लोकतंत्र के साथ पूंजीवाद का जबरदस्ती का विवाह टूट रहा है।''

वैश्विक दक्षिण में, यह मुद्दा अपने आप और अधिक स्पष्टता से दिखाई देता है। वैश्विक दक्षिण के राजनेता जानते हैं कि उन्हें वैश्विक पूंजी की शक्ति एवं उसके द्वारा लगाये गये नियमों के द्वारा प्रदत्त राजनैतिक स्पेस में ही तिकड़म लगानी होगी। जब जिनपिंग दावोस में बोलते हैं तो वे ध्यान रखते है कि वे आर्थिक राष्ट्रवादी की तरह न बोलें। डब्ल्यू. टी. ओ. में ब्राजील, चीन और भारत की आश्चर्यजनक जीत भी उदारवादी व्यापार नियमों के विवादास्पद क्षेत्र पर लड़ी गई थी। राष्ट्रवादी उद्देश्यों की वैधता की घोषणा करने के बजाय रणनीति उत्तर को अपने ही ''मुक्त व्यापार'' के नियमों को मानने की पाखंडी अस्वीकृति से जोडने की थी।

फिर भी, यह अब वह दुनिया नहीं रह गई जिसका डेविड़ हार्वे ने एक दशक पूर्व वर्णन किया था जिसमें नवउदारवाद के वैचारिक आरोहण मान लिया जा सकता था। बाजार के गौरवशाली काल्पनिक प्रभावों ने देंग जियाओपिंग को शायद मोहित कर लिया हो लेकिन क्सी जिनपिंग सच्चे समर्थक नहीं है। चिली के पिनोशे मर चुके हैं और सहस्त्राबी के मोड़ पर दक्षिण अफ्रीका के थाबो मबेकी के बराबर नवउदारवाद के प्रति वफादारी का मिलना अब मुश्किल है।

नवउदारवादी फोर्मूले के विश्वास के खत्म होने के साथ भी, वैश्विक दक्षिण में नेता अभी भी वैश्विक पूंजीवादी की शक्ति के चपेट में हैं और उन्हें ट्रम्प के समान आर्थिक राष्ट्रवादी बनने के बहुत विरले ही अवसर मिलते हैं। आर्थिक राष्ट्रवाद के कार्ड में अभाव में, नवउदारवादी रणनीतियों के विफल होने के समय नेता

>>

नस्लवाद, अज्ञात जनभीत और दमन के मददे हथियारों की तरफ मुड़ते हैं।

एरडोगन के तुर्की का विकास, जिसका वर्णन सिहान तुगल ने वैश्विक संवाद 6.3 (सितम्बर 2016) में किया था, इस संदर्भ में एक चेतावनी पूर्ण मसला है। ''मध्य पूर्व में सबसे धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक देश'' से प्रारम्भ हो एरडोगन की जस्टिस एवं डेवलपमेंट पार्टी ने नव उदारवादी पूंजीवाद को सर्वप्रथम अपनाया। यह पता चलने पर कि नवउदारवादी पूंजीवाद पारंपरिक लोकतांत्रिक नियमों के अन्तर्गत राजनैतिक आधिपत्य का भौतिक आधार प्रदान नहीं कर सकता, शासन व्यवस्था ''जन लामबंदी और कट्टरता'' पर विश्वास कर, जिसे तुगल ''कठोर सर्वसत्तावाद'' कहते हैं, की तरफ मुडती है।

भारत में नरेन्द्र मोदी का शासन भी इस थीम की विविधता है। धार्मिक कट्टरता का सबसे चरम रूप ऐसी राज्य व्यवस्था में छोड़ा है जहां धर्मनिरपेक्ष चुनावी लोकतंत्र (यद्यपि अत्यधिक अपूर्ण तरीके से) लगभग 70 वर्षों से सभी बाधाओं के बावजूद अस्तित्व में है। सहस्त्राब्दी के मोड़ पर, भारत द्वारा नवउदारवादी पूंजीवाद को गले लगाने से देश की अधिकांश आबादी पीछे छूट गई है लेकिन मोदी की भा. ज. पा. (भारतीय जनता पार्टी) ने बड़ी पूंजी से अपने नजदीकी नातों को एक खुली हिन्दू कौमपरस्त रणनीति की तरफ जा, मुस्लिमों के साथ अन्य ''बाहरी'' एवं ''विश्वासघाती'' हिन्दूओं को आतंकित कर ध्यान बटांया है।

ध्यान चाहे ट्रम्प पर हो या वैश्विक दक्षिण पर, वैश्विक व्यापार और उत्पादन नेटवर्कों से होने वाले लाभ ''आर्थिक राष्ट्रवाद के उभार'' से संकट में नहीं आते हैं। साधारण लोगों एवं समुदायों की खुशहाली को वास्तविक खतरा प्रतिक्रियावादी राजनैतिक रणनीतियों के उभार से है। ये रणनीतियां उन अभिजनों की शक्ति को बनाये रखने का उद्देश्य रखती है जिनमें राजनैतिक इच्छाशक्ति और वैश्विक नवउदारवादी पूंजीवाद के दंडित प्रभाव को चुनौती देने का अभाव होता है।

डोनाल्ड ट्रम्प एक वैश्विक खतरा है, इसलिए नहीं कि वह आर्थिक राष्ट्रवादी है, बल्कि इसलिए कि वह दुनिया के सबसे खतरनाक सैन्य मशीन का प्रमुख कमांडर है। अभी तक लागू की गई वास्तविक नीतियों के द्वारा आंका गया, कि वे राजनेता के रूप में इतने आर्थिक राष्ट्रवादी नहीं है। उन्होंने यह पाया कि आर्थिक राष्ट्रवादी अलंकार उनके निर्वाचकों को पूंजीवादी वर्चस्व के सबसे पतित विशेषता के प्रति उनकी निष्ठा से ध्यान बंटाने में मददगार है। अन्य नेता जिन्हें पूंजीवाद की विफलताओं के साथ रहना पड़ता है लेकिन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं के उपर वैश्विक पूंजी की शक्ति के कारण उन पर आर्थिक राष्ट्रवाद के कार्ड को खेलने पर रोक लगती है। ऐसे नेता शक्ति बनाये रखने के लिए और अधिक शातिर रणनीतियों का उपयोग करने की तरफ अधोमुख हैं।

किसी प्रकार का ''निष्ठुर'' तर्क हमें या तो खुशहाली में वृद्धि को पूरा करने में पूंजीवाद की वर्तमान विफलता या नेताओं द्वारा अपनी सत्ता को बनाये रखने के लिए काम में ली जाने वाली घृणित रणनीतियों को स्वीकार करने के लिए दबाब नहीं डालता है। जब तक राजनैतिक प्रतिष्ठानों को नीचे से प्रगतिशील लामबंदी के सदमें से झटका नहीं लगेगा, वे हमेशा यह समझेंगे कि आर्थिक बाधाएं परिवर्तन की रोकती हैं लेकिन राजनैतिक रूप से अप्रत्याशित अप्रत्याशित संभावनाओं के साथ निरूत्साहित करने वाले उलटाव को पैदा करती है।

झूठे आर्थिक राष्ट्रवाद का आह्वान कर पूंजीवाद के अधिक प्रतिक्रियावादी संस्करण पर वापसी के प्रयासों को छिपाने के ट्रम्प के प्रयासों ने अमरीकी लोगों की नापसंदगी के रिकार्ड स्तर से बचने की अनुमति नहीं दी है। वर्तमान में उच्चतम अनुमोदन रेटिंग का आनंद बर्नी सान्डर्स उठा रहे हैं जिन्होंने संयुक्त राज्य के इतिहास में कुछ अप्रत्याशित करने के विश्वसनीय प्रयास किये हैं – जैसे समाजवादी के रूप में कार्य करते हुए, दो मुख्य दलों में से एक के राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनना। ■

सीधा संपर्क करे : पीटर इवांस <pevans@berkeley.edu>

> ट्रम्पवाद एवं श्वेत पुरूष कामगार वर्ग

राका रे, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यू. एस. ए.

ट्रम्प के मुख्य समर्थक – श्वेत कामगार वर्ग

मीडिया एवं विद्वानों के लेखों में ट्रम्प को वोट देने वाले लोगों को और जो लोग चार्लट साबिले वर्जीनिया में होने वाले दक्षिणपंथी विरोधों में बड़ी संख्या में आते हैं, को ''गुस्सैल श्वेत पुरूष'' कहना आम बात हो गई है। वाशिंगटन पोस्ट पूछता है, ''इतने सारे श्वते पुरूष इतना गुस्सा क्यों हैं?'' समाजशास्त्री माइकल किमेल सुझाव देते हैं कि ''पीडित की पात्रता'' उन्हें एकजुट करती है। गत अमरीकी चुनाव के पश्चात अब मतों की गणना कर विश्लेषण किया तो एक बड़ा विशिष्ट निर्वाचन क्षेत्र उभरा : बिना कॉलेज डिग्री वाले 71% श्वेत पुरूषों ने ट्रम्प को मत दिया जबकि कॉलेज डिग्री वाले आधे से अधिक (53%) श्वेत पुरूषों ने भी ट्रम्प को मत डाला।

जिसे वामपंथी और दक्षिण पंथी दोनों ही ''गुस्सैल श्वेत पुरूष'' मतदान कहते हैं, पर बहुत कुछ कहा गया है, मेरा सुझाव है कि हमें इसके प्रत्येक तत्व की निकटता से जांच करनी चाहिए। मतदाताओं का यह समूह एक साथ श्वेत और पुरूष और कामगार वर्ग है; अतः प्रजाति एवं वर्ग और जेण्डर का विश्लेषण अवश्य करना चाहिए और उन्हें एक साथ समझना चाहिए।

अमरीका में, फोर्डवाद का पतन और तदनुसार ''अच्छी'' नौकरियों में कमी केवल वर्ग का मुद्दा नहीं था। अमरीका में बीसवीं सदी के प्रारम्भ और अंत के मध्य फोर्डवाद ने मानकित वस्तुओं के समनुक्रम उत्पादन प्रक्रिया से अच्छी नौकरियां उपलब्ध कराई। उन्हें उच्च वेतन प्रदान किया ताकि श्रमिक अपने द्वारा निर्मित उत्पादों का क्रय कर सकें और अपेक्षाकृत सतत रोजगार का वादा किया। लेकिन यथार्थ में, फोर्डवाद का अर्थ इससे कहीं अधिक था। बड़े पैमाने के औद्योगिक उत्पादन और घरेलू उपभोक्तावाद पर आधारित होने के कारण फोर्डवाद कभी भी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की एक विशेषता मात्र नहीं था। इसने साथ–साथ पितृसत्ता को भी प्रतिबिंबित किया : फोर्डवाद की विचारधारा ने पारिवारिक मजदूरी के विचार कि एक की आय पूरे परिवार को पाल सकती है – को अपने में समाहित कर लिया। पारिवारिक मजदूरी एक श्रम विभाजन को मानती थी जहां पुरूष उत्पादन का कार्य करते जबकि महिलाएं उपभोग (और वे श्रमिकों की सामाजिक पुनरूत्पत्ति एवं पोषण में सहायता करती थी) का ध्यान रखती थीं। यह विचार कि महिलाओं के बजाय पुरूष इन अच्छी नौकरियों पर कार्य करेंगे, पुरूष और महिलाओं की सही जगह की लैंगिक मान्यताओं से उपजा था और इस तथ्य से भी कि (पुरूष और महिलाओं के बीच समान वेतन के किसी प्रावधान के अभाव में) महिलाएं, जिनकी कमाने की क्षमता काफी कम थी, को घर पर रहना चाहिए। दरअसल, पुरूष के रूप में पुरूषों की समझ के बिल्कुल मध्य में अपने परिवारों का भरण पोषण करने की क्षमता निहित है।

> >

पारिवारिक मजदूरी नियमों से वे लोग बाहर थे जिनकी मजदूरी पर्याप्त नहीं थी : अश्वेत और अप्रवासी। इस प्रकार फोर्डवाद श्वेत, कुशल अव्यावसायी पुरूष कामगारों को विशेष अधिकार देता है। इसके अलावा महिलाएं जो पुरूषों के साथ अनुलग्न नहीं थीं और वे महिलाएं जिनके साथी पुरूष स्वयं के द्वारा अपने परिवारों के जीवनयापन के लिए पर्याप्त नहीं कमा सकेंगे, भी बाहर कर दी गई। यह वह काल भी था जब स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और वृद्धावस्था में राज्य निवेश हो रहा था, एक अच्छा जीवन श्वेत कामगार–वर्ग के पुरूषों कल्पनाशील और उनके पकड़ में था।

फोर्डवाद का पतन अश्वेत महिलाओं और लोगों द्वारा समानता, समान वेतन, प्रजनन अधिकार, स्वतन्त्र अभिभाषण की स्वतन्त्रता, युद्ध के खिलाफ और यौन स्वतन्त्रता की मांग रखने वाले सामाजिक आंदोलनों की लहरों के साथ ही हुआ। फोर्डवाद और पारिवारिक आय के ह्रास के साथ ही दुहरे अर्जक परिवारों का उदय और पारिवारिक आय की मूल विचारधारा को धक्का लगा। वैश्वीकृत और वित्तीय पूंजीवाद की वर्तमान शासन व्यवस्था के अन्तर्गत उत्पादन को दुनिया के कम–मजदूरी वाले क्षेत्रों में स्थानांतरित कर दिया गया है और कई नौकरियां स्वचलीकरण के कारण पूरी तरह से गायब हो गई हैं। नई शासन व्यवस्था ने महिलाओं को सवैतनिक कार्यबल में भर्ती किया है और समाज कल्याण से राज्य और कार्पोरेट के विनिवेश को प्रोत्साहित किया है।

40 वर्षों से अधिक समय तक, श्वेत पुरूषों की औसत आय, मुद्रास्फीति समयोजित करने के बाद, लगभग स्थिर रही है जबकि श्वेत महिलाओं की लगभग दुगुनी हो गई है। अश्वेत महिलाओं की औसत आय दुगुनी से अधिक हो गई हैं और अश्वेत पुरूषों की औसत आय में थोड़ी वृद्धि हुई है। महान मंदी, और मामूली आर्थिक वृद्धि के साथ भी, श्वेत महिलाओं, अश्वेत पुरूष और अश्वेत महिलाओं ने कुछ प्रगति की है। लेकिन श्वेत पुरूषों की आय में कोई भी वृद्धि अधिकतर अमीरों को गई है।

चूंकि फोर्डवाद एक साथ वर्ग और प्रजाति और जेण्डर के बारे में था, ह्रास के बारे में प्रतिक्रिया इन तीन पर आधारित है : जब श्वेत कामगार वर्ग के पुरूषों ने नौकरियां खोई, उन्होंने पुरूषत्व के बोध, महिलाओं पर उनका नियंत्रण और अश्वेत लोगों पर अपने पूर्व श्रेष्ठता को खो दिया। उन्होंने, वे क्या सोचते थे, वे हैं को खो दिया। ''पीड़ित पात्रता'' शब्द शायद उचित लगे, मेरे विचार से यह अपर्याप्त है।

दार्शनिक नेन्सी फ्रेजर द्वारा अमरीका में हाल ही में होने वाली दो प्रकार के राजनैतिक संघर्ष–पुनर्वितरण पर संघर्ष और मान्यता पर संघर्ष, का विवरण इन नुकसानों से उत्पन्न राजनीति के बारे में विचारने के लिए एक उपयोगी तरीका प्रदान करता है। पुनर्वितरण के संघर्ष को फ्रेजर भौतिक असमानता के संघर्ष – आय एवं सम्पत्ति स्वामित्व, सवैतनिक कार्य तक पहुंच, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के रूप में परिभाषित करती है। फिर पुनर्वितरण सामाजिक–आर्थिक अन्याय को दर्शाता है। मान्यता/पहचान का संघर्ष, दूसरी तरफ, प्रतीकात्मक अन्याय जैसे सांस्कृतिक प्रभुत्व, गैर–पहचान और अनादर, जैसे उपेक्षित समूह–वे जो समलैंगिक है या ट्रांस, या अश्वेत या महिलाएं सम्मान और समावेशन के लिए संघर्ष कर रहे हैं, को दर्शाता है।

जहां फ्रेजर विश्लेषणात्मक रूप से पुनर्वितरण और पहचान के संघर्ष को अलग करती हैं, तथापि व्यवहारिक रूप में, लोगों के जीवन में, ये बातें अक्सर आपस में गुथी होती है। 2016 में बिना कॉलेज की डिग्री वाले श्वेत पुरूषों ने पहचान और पुनर्वितरण के लिए मतदान किया : वे ऐसे पुरूष के रूप में पहचान चाहते थे जो अपने परिवार के पालनकर्त्ता नहीं हो सकते थे और अतः जिन्हें यह डर था कि उन्हें पुरूष होने के अधिकार से वंचित किया जा रहा है। इस श्रेणी के कई लोगों ने महसूस किया कि उनके गोरेपन का उपहास किया जा रहा है, उनके लोगों को दुराग्राही माना जा रहा है, महिलाएं शक्तिशाली हो रही हैं और राज्य स्पष्ट रूप से सकरात्मक कार्यवाही की नीतियों से गैर–श्वेत लोगों का पक्ष ले रही है।

अमरीका के दक्षिणपंथी, वामपंथियों के बजाय, इस गतिकी को समझने में अधिक निपुण रहे हैं और वे उपलब्ध अमरीकी सांस्कृतिक वृत्तान्तों को भुनाने और बढ़ावा देने में सक्षम रहे हैं जैसे :

– सुपात्र बनाम अयोग्य गरीब (यह विचार कि कुछ इसलिए गरीब हो गये हैं क्योंकि उनकी नौकरियां छिन गई हैं बनाम् उनके जो बस काम नहीं करना चाहते हैं);

– देशजवाद (यह चिंता कि अप्रवासी न सिर्फ सुपात्र से नौकरियां छीन रहे हैं अपितु अपनी संख्या के कारण वे अमरीका को कम श्वेत स्थान में भी बदल रहे हैं);

– पुरूषों को पालनकर्त्ता होना चाहिए (जिसका तात्पर्य है नेतृत्व या प्रतिस्पर्धा को कोशिश करने वाली महिलाओं को उनके स्थान पर वापिस बैठा देना चाहिए)

पहचान और पुनर्वितरण के विमर्श का सफल प्रस्तरण श्वेत कामगार–वर्ग के पुरूषों को चिन्हित करने वाली अप्रसन्नता की राजनीति का निर्माण और पोषण करता है।

कुछ अपवादों के साथ, वामपंथी अमरीकी विमर्श में पुनर्वितरण और पहचान की राजनीति के मध्य अधिक बड़ा वियोजन सम्मिलित है। आर्थिक न्याय की राजनीति, सांस्कृतिक न्याय की राजनीति (उदाहरण के लिए ट्रांस–मित्रवत बाथरूम) और पर्यावरण की राजनीति अक्सर एक दूसरे के बैरी आंदोलनों द्वारा आगे बढ़ाये जाते हैं। ब्लैक लाइव्स मैटर जैसे समूह, जो पहचान और पुनर्वितरण की राजनीति सम्मिश्रण नहीं करते हैं, आज तक व्यापक दर्शकों से गुंजायमान नहीं हुए हैं। जहां वामपंथ को एकजुट करना–कई कारणों से, असंबद्ध और भौतिक दोनों ही, हमेशा से मुश्किल रहा है–कारकों का यह संयोजन शक्ति का अधिकार लाया अैर इसने कामगार वर्ग के श्वेत पुरूषों को अपने वादे में लीन होने के लिए मशगूल किया है। ■

सीधा संपर्क करे : राका रे <rakaray@berkeley.edu>

> आव्रजन और ट्रम्प–काल राजनीति

जी. क्रिस्टीना मोरा, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यू. एस. ए.

राष्ट्रपति ट्रम्प अमरीकी इतिहास के पहले नियम–यह कि अमरीका आप्रवासियों का देश है–का उल्लंघन करते हुए

नवम्बर 2016 तक के सफर में किसने अमरीका को महान बनाया और कौन इसका नैतिक और आर्थिक पतन लाएगा के बारे में काफी बयानबाजी सम्मिलित थी। इस बहस के मध्य अप्रवासी थे : तत्कालीन उम्मीदवार ट्रम्प के चुनावी अभियान और भाषणों में मेक्सिको एवं अन्य स्थानों पर ''बुरे आदमी'' और अपराधियों को बराबर, रखने के साथ नौकरी विस्थापन की निरंतर बातों ने राष्ट्रवादी, गैर–अप्रवासी टेक को गर्माया जो रिपब्लिकन राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान अपने चरम पर पहुंच गया। ऐसा तब हुआ जब अमरीका/मेक्सिको सीमा पर 'दीवार बनाओ' की मांग चिल्लाती हुई भीड़ के पार्श्व पर ट्रम्प खड़े थे।

कई अप्रवासी विद्वानों के लिए, यह उत्तेजना तीन कारणों से खतरनाक रूप से अनुपयुक्त प्रतीत होती थी। पहला, आव्रजन पिछले दशक से शून्य रहा है। प्रत्येक वर्ष अप्रवासियों के आने के साथ ही कई लौट जाते हैं और हाल के आंकड़े दर्शाते हैं कि यू. एस. में आने वालों से अधिक मेक्सिकन अमरीका छोड़ रहे हैं। अचानक ''अवैध'' धावे या एक भारी आव्रजन उछाल के राजनैतिक कोलाहल के बावजूद यू. एस. की तरफ व्यापक अप्रवास का युग खत्म हो रहा है। दूसरा, कांग्रेस के बजट कार्यालय से अनुसंधान सहित काफी अन्य अनुसंधान यह इंगित करते हैं कि अप्रवासी राष्ट्र को समग्र शुद्ध आर्थिक लाभ प्रदान करते हैं। अप्रवासी, अनाधिकृत लोग भी, कर चुकाते हैं, और दूसरी पीढ़ी के अप्रवासी देश के सबसे अधिक उद्यमी समूहों में से एक का निर्माण करते हैं। इसके अतिरिक्त, मूल निवासियों की तुलना में अप्रवासियों की सरकारी सहायता कार्यक्रमों में नामांकन करवाने की संभावना कम है। यह एक ऐसा तथ्य है जो लैटिन ''कल्याण रानी'' की चेतावनी देने वाले राजनेताओं और ब्लागस पर असर नहीं करता है। अंत में, अप्रवासी संघटित होना चाहते हैं। देश के लिए सांस्कृतिक खतरा बनने से दूर, अप्रवासियों का अधिकांश बहुमत, विशेष रूप से उनके बच्चे, अंग्रेजी सीखते हैं। और इसमें जो कुछ भी सही लगे अधिकांश अप्रवासी धार्मिक भी है; असल में, अमरीका में अधिकतर मैक्सिकन ''बुरे आदमी'' किसी प्रकार की ईसाई धर्म को मानते हैं–यह एक ऐसा तथ्य है जिसके कारण रोनाल्ड रीगन ने एक बार कहा कि लेटिनो रिपब्लिकन है, सिर्फ उन्हें यह अभी तक पता नहीं है।

लेकिन अनुसंधान के इस प्रकार के निष्कर्षों के काफी मात्रा में बावजूद, आप्रवास के खतरों के बारे में बयानबाजी दिन प्रतिदिन चलती रहती है। लेकिन क्या यह सिर्फ दक्षिण पंथी राजनीतिक के कारण है? पूरी तरह से नहीं। मध्यमार्गी मीडिया और मुख्यधाराई डेमोक्रेटस ने इस आग को और भडकाया है। रूढ़िवादी मीडिया के बराबर मुखर न होने, उदाहरणार्थ न्यू योर्क टाईम्स जैसे संस्थान आव्रजन के समाज पर होने वाले लाभ के बजाय इसकी लागत और अपराधों पर अधिक टिप्पणी करते हैं और डाका (डेफर्ड एक्शन फॉर चाइल्डहुड अरावइलस)[1] के पारित होने के बावजूद ओबामा प्रशासन ने बुश प्रशासन के दौरान लागू की गई निर्वासन नीतियों को काम में लिया और अंततः अपने दो पूर्ववर्तियों द्वारा निर्वासित के कुल से अधिक अप्रवासियों को देश से निकाला। इस रिकार्ड ने उन्हें ''डिपोर्टर–इन–चीफ'' का खिताब दिलवाया। यह बात सराहनीय थी कि उनके प्रशासन ने स्थापित अप्रवासियों की अपेक्षा नवागन्तुक अप्रवासियों को निर्वासित करने पर अधिक जोर दिया। लेकिन यह अप्रवासी अधिकार समर्थकों, जो व्यापक आव्रजन सुधार की आशा कर रहे थे और उनके ''हाँ हम कर सकते हैं'' के घोषणा अभियानों में बह गये थे, पर कुठाराघात को कम करने में बहुत कम मदद करता है।

और तथापि, यह विचार कि डेमोक्रेट आप्रवासी अधिकारों का समर्थन कर सकते हैं, नवम्बर 2016 तक के महीनों में आशावान् था। डेमोक्रेटिक उप–राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार टिम केन ने डेमोक्रेटिक राष्ट्रीय सम्मेलन में अपने भाषण को स्पेनिश मुहावरों से भरा और अप्रवासियों से वादा किया कि डेमोक्रेटिक पार्टी आव्रजन के व्यापक सुधारों को प्राथमिकता देगी। क्लिंटन ने टेक्सास और फ्लोरिडा में बड़े पैमाने की रैलियों का आयोजन किया और निरन्तर यह वादा किया कि वे आव्रजन पर ध्यान केन्द्रित करेंगी अैर वह करेगी जो ओबामा प्रशासन ने नहीं किया थ। हिस्पैनिक/लेतिनो लॉबी समूहों ने इन वादों का कस कर पकड़ा अैर बड़े पैमाने पर वोट प्राप्त करो अभियान छेड़ा जिसने अंततः कई दक्षिण–पश्चिमी राज्यों में डेमोक्रेट को चुनने एवं अमरीकी सीनेट में पहले लेतिनो को निर्वाचित करने में मदद की।

> >

एशियाई लॉबी समूह भी पीछे नहीं रहे। यद्यपि वे अपने लेतिनो सहयोगियों की तुलना में कम संख्या में थे, एशियाई संगठन आव्रजन अधिकार आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे। चुनाव के पूर्व के महीनों में, एशियाई लॉबी ने दावा किया कि वर्जिनिया और नेवादा जैसे राज्यों में एशियाई मतदाता प्रभावित करेंगे। उन्होंने प्रभावी मतदाता पंजीयन अभियान भी शुरू किया और चेतावनी दी कि डेमोक्रेटस के लिए आव्रजन सुधारों को अपने अभियान का केन्द्रीय हिस्सा बनाना बुद्धिमानी होगी।

लेकिन इन प्रभावशाली प्रयासों के बावजूद, लेतिनो और एशियाई मतदाता चुनावी परिणामों को नहीं बदल सके। देश का भाग्य मिशीगन, पेंसिल्वेनिया और ओहियो जैसे छोटे नगरीय समुदायों से, न कि तटीय अप्रवासीय मार्ग, द्वारा निर्णित हुआ। वास्तव में मध्य पश्चिमी रस्टबेल्ट राज्यों ने 1990 के दशक के प्रारम्भ से अप्रवासी आबादी को दुगुना होते देखा है। ऐसा अप्रवासियों के द्वारा न सिर्फ कृषि के क्षेत्र में बल्कि कारखानों में कार्य करने से हुआ। उनका 'बाहरी' स्वरूप और संस्कृति ने उन्हें अपने आधार को विस्तृत करने का एक मार्ग खोजने वाले दक्षिणपंथी राजनैतिक हस्तियों के लिए एक टार्गेट बनाया। राजनेताओं के लिए नौकरियों के ह्रास और आर्थिक संकटों के लिए अप्रवासियों पर दोष मढ़ना वैश्विक पूंजीवाद और बढ़ती असमानता के प्रक्रिया बारे में विस्तार से बात करने से अधिक आसान था।

तो यह आप्रवासी अधिकारों के मनोरथ को कहां छोड़ता है–विशेष तौर पर वाशिंगटन के राजनैतिक बहरों पर यदि आव्रजन तथ्य असर नहीं करते हैं। उत्तर स्पष्ट नहीं है सिर्फ इसके कि राज्य आव्रजन वकालत के शीघ्र शिकार होंगे। उदाहरण के लिए, केलिफोर्निया अप्रलेखित आप्रवासियों को स्वास्थ्य सुरक्षा और चालक लाइसेंस प्रदान करता है। इससे कुछ आराम और विधिक एकीकरण की भावना पैदा होती है। वहां के शहरों और अन्य ने भी स्वयं को ''अभ्यारण'' घोषित किया है। यह एक प्रतीकात्मक कदम है जो तथापि ट्रम्प प्रशासन के प्रति प्रतिरोध का संप्रेषण करता है।

फिर भी मार्ग अभी अंधकारमय है। ओबामा द्वारा परिष्कृत जटिल निर्वासन प्रणाली पर ट्रम्प का नियंत्रण है और अपने पहले वर्ष में उन्होंने आव्रजन को अपराध से जोड़ना जारी रखा है। उदाहरण के लिए, मुस्लिम सफर पर निषेध ने मुस्लिमों को आतंकवाद से जोड़ने के राष्ट्रीय संवाद को पुनः भड़काया है। जो अरपाइयो, अरिजोना का शेरिफ जिसने न्यायालय के आदेश का उल्लंघन करते हुए आप्रवासियों का सिर्फ इसलिए हिरासत में लिया क्योंकि वे अनाधिकृत थे, को क्षमा करके उसने अपनी 'बुरे आदमी' के संदेश की संप्रेषित किया है। इसके अलावा, ट्रम्प डी. ए. सी. ए. को खत्म करना चाहते हैं, भले ही वह कार्यक्रम ऐसे बच्चों के लिए है जो किसी गंभीर अपराध के दोषी नहीं है और नागरिक सुरक्षा के लिए खतरा नहीं है।

क्या इसका जवाब आंदोलन है? 2006 में लाखों आव्रजन अधिकार कार्यकर्ता ''आज हम मार्च करेंगे, कल हम मतदान करेंगे'' और ''अप्रवासी अधिकार मानवाधिकार हैं'' का जप करते हुए सड़कों पर उतर गये। एक दशक से भी अधिक बीतने के बाद, कोई भी वादा पूरा नहीं हो पाया। राजक्षमा के बिना, अप्रवासी मतदान करने

राष्ट्रपति ट्रम्प ओबामा के कार्यकारी आदेश डी ए सी ए (बाल्यकाल आगमन के लिए आस्थगित कार्यवाही) के अंतर्गत उन लोगों के लिए संरक्षण रद्द करने की धमकी दे रहे हैं जो अवैध रूप से अमरीका तब आये थे तब वे नाबालिग थे। वे स्वप्नदृष्टा कहलाते हैं।

वाले नागरिक नहीं बन पाये हैं और कार्यकर्त्ताओं की ''मानवा–धिकारों'' की अपील या यह आशा करना कि अमरीकी अप्रवासियों को सम्प्रदायिक वैश्विक नागरिक के हिस्से के रूप में देखेंगे, ट्रम्प स्टाइल अमरीकी राष्ट्रवाद के वर्तमान काल में खेदजनक रूप से नामुनासिब लगता है। और आज, कार्यकर्त्ताओं को यह डर है कि भावी विरोध प्रतिघात को भड़का सकता है : 2006 के विरोध के शीघ्र बाद अप्रवासी विरोधी स्थानीय नियमों में उछाल आया था।

अप्रवास सुधार दोनों पक्षों द्वारा इस्तेमाल किया गया है एक राजनैतिक मोहरा है। परिवारों के पुनर्मिलन और अप्रवासियों को उनके अमरीकी स्वप्न को पूरा करने का अवसर प्रदान करना निश्चित रूप से सराहनीय है और आव्रजन अधिकार कार्यकर्ता इस कार्य के लिए लगातार कार्य करते हैं। किसी भी अभिभावक को अमरीका में जन्में उनके बच्चों से अलग नहीं करना चाहिए और किसी भी व्यक्ति को सुरक्षा, आश्रय और अन्य अवसरों से सिर्फ इसलिए वंचित नहीं करना चाहिए क्योंकि वे दीवार के गलत तरफ पैदा हुए थे। उसी समय, हमें यह जानना चाहिए कि अमरीकी आव्रजन नीति में व्यापक परिवर्तन शायद कभी नहीं होगा क्योंकि व्यवस्था वही देती है जो उसे देना होता है। जिस प्रकार से यह डिजाइन किया गया है और संचालित होता है, यह बंदी श्रम शक्ति प्रदान करता है जो हमारे वैश्विक बाजारों को आर्थिक सहायता देता है और शोषण करता हैं। कोई अस्थायी राहत, नीति में मामूली बदलाव, या अल्पकालिक राज्य क्षमा कार्यक्रम इस वृहद गतिशीलता को परिवर्तित नहीं कर सकते हैं। ■

[1] द डेफर्ड एक्शन फॉर चाइल्डहुड अराइवल्स (DACA) ओबामा का एक कार्यकारी आदेश था, जिसने देश में नाबालिग के रूप में प्रवेश करने वाले व्यक्तियों और जो देश में अवैध रूप से आये या रह गये, को निर्वासन से दो वर्ष की लम्बित अवधि मिली और वे कार्य परमिट के लिए उपयुक्त माने गये।

सीधा संपर्क करे : जी. क्रिस्टीना मोरा <cmora@berkeley.edu>

> ट्रम्प का श्रमिकों पर आक्रमण

रूथ मिल्कमेन, सिटी विश्वविद्यालय, न्यूयार्क, यू. एस. ए. एवं श्रम आन्दोलनों पर आई. एस. ए. रिसर्च कमेटी के सदस्य (आर. सी. 44)

राष्ट्रपति उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रम्प के संघीय रैंक और फाइल से सफलतापूर्वक अपील के बाद, संघ के नेता राष्ट्रपति के पीछे आने लगे। यहां राष्ट्रपति ट्रम्प व्हाइट हाउस में संघ के नेताओं से घिरे हैं।

यू. एस. ए. के श्रम आन्दोलनों पर श्रद्धांजलियां, वामपंथी राजनीतिक विमर्श में प्रधान रही है। यह डोनाल्ड ट्रम्प के राष्ट्रपति पद के लिये, अनपेक्षित अधिरोहण, से काफी पहले से रहा है। अब कुछ दशकों से, श्रम शक्ति की संघीय एकता एवं हड़ताल की घटनाओं में काफी कमी आयी है। यह वो प्रवृत्ति है जो रोनाल्ड रीगन के 1980 के चुनाव के उपरान्त त्वरित गति से बढ़ी है, जिसकी रस्ट बेल्ट की श्वेत कामकाजी वर्ग के लिये जनवादी अपील ने 36 वर्ष उपरान्त ट्रम्प के अभियान को पूर्व आकृति दी। रीगन ने यूनियन घरों से 1980 में कुछ मामूली वोटो का ही भाग ज्यादा जीता था (45%), जो कि ट्रम्प ने पिछले वर्ष किया (43%)। यह एक ऐसा तथ्य है जो जन स्मृति से मिट गया है।

यह सही है कि बीच के कुछ वर्षों में श्रम में कमी ने यूनियन परिवारों के वोट डालने वालों की संख्या को काफी कम किया है। 2016 तक रोजगार वाले यू. एस. कामगार का सिर्फ 10.7% एवं निजी क्षेत्र से 6.4% यूनियन के सदस्य थे। यह संख्या 1950 के

> >

मध्य में 35% थी। 1980 से शुरू होकर हड़तालों की संख्या में भी काफी कमी आयी। यदि हड़तालें होती भी थीं, तो वे भी मालिकों के यूनियन को पूर्व में दिये गये लाभों को समर्पण करने पर मजबूर करने के प्रयासों के कारण हुई थीं। 2016 के अन्त तक, ''कार्य का अधिकार'' (जो निजी क्षेत्र में यूनियनों पर निषेध लगाता है) 27 राज्यों में फैल गया। (1975 में 20 राज्यों से बढ़कर) जिसमें पूर्व के ताकतवर यूनियन राज्य मिशीगन एवं विस्कोनसिन सम्मिलित थे। गत फरवरी में 28वां राज्य (मिसौरी) भी इनके साथ जुड़ गया। जैसा कि सभी जानते है कि गत 40 वर्षों में, आसमान को छूती असमानता एवं एक समय के ताकतवर यूनियन की लामबन्दी को तोड़ना, साथ साथ चला है।

हाल के वर्षों में संगठित श्रम के लिये निजी क्षेत्र एक अच्छा स्थान रहा है, जहां यूनियन बनाने की दर ज्यादा है एवं अपेक्षाकृत स्थायी है। परन्तु वृहद मन्दी के उपरान्त रिपब्लिकन–नियंत्रण के अधीन राज्यों में सार्वजनिक क्षेत्र के सामूहिक सौदेबाजी के अधिकारों को सीमित करने के लिये, नवीन कानून की लहर से इसमें भी बदलाव आने लगा। विसकोनसिन राज्य, जो 1959 में सार्वजनिक क्षेत्र में सामूहिक सौदेबाजी को वैध करने वाला प्रथम राज्य बना, इस किया। 2011 में, का उत्कृष्ट उदाहरण था। रिपब्लिकन गर्वनर स्कोट वाल्कर एक नव–निर्वाचित अतिवादी बिल लेकर आये जिससे सार्वजनिक क्षेत्र में यूनियन अधिकारों को सीमित करने वाले निषेध लगाये गये। वृहद जन प्रतिरोध के बावजूद यह बिल पारित हुआ एवं वाल्कर ने गर्व के साथ इसको कानून में परिवर्तित किया।

इसके परिणाम विध्वंसकारी रहे : विसकोनसिन के जन क्षेत्र के श्रमिकों की यूनियन में भागीदारी जो 2011 में 50.3% थी, 2016 में गिरकर 22.7% रह गयी। जैसा कि गोरडन लेफर ने 2017 में अपनी पुस्तक 'द वन परसेंट सोल्यूशन' में बताया, विसकोनसिन तो बस राईट विंग अभियान का, जो पूरे देश में जन–क्षेत्र यूनियन को दुर्बल बनाने का प्रारंभिक बिन्दु था। क्योंकि यूनियन हमेशा से डेमोक्रेटिक राजनीतिक अभ्यार्थियों के लिये राजनीतिक निधि–करण का अहम स्रोत रहा है। राष्ट्र की दृष्टि से जन–क्षेत्र यूनियन बनाने की दर में सिर्फ हल्की सी गिरावट आयी है, 2008 में 36.8% से 2016 में 34.4%। परन्तु यह बदल जायेगा क्योंकि ज्यादातर रिपब्लिकन राज्य विसकोनसिन के नेतृत्व का अनुसरण करेंगे।

रीगन के ऑफिस के प्रथम वर्ष के दौरान, श्वेत कामकाजी वर्ग को एक अभ्यर्थी द्वारा बुरी तरह से धोखा दिया गया, जोकि एक पूर्व श्रम संघ सदस्य था। रीगन ने हजारों की संख्या में एयर ट्रैफिक कन्ट्रोलर्स को निकाल दिया, जब उन्होंने 1981 में हड़ताल की। यह एक ऐसी घटना थी, जिसे यू. एस. के श्रम की गिरने की यात्रा के अहम क्षण के रूप में याद किया जाता था। इसे और करूण बनाया, इस तथ्य ने कि एक वर्ष पहले एयर कन्ट्रोलर के यूनियन ने रीगन के राष्ट्रपति अभियान का समर्थन किया था। हालांकि संघ के कार्यकर्ता को हड़ताल के लिये कानूनी रूप से प्रतिबंधित किया था, वो फिर भी किसी प्रकार समय समय पर कर ही लेते थे। रीगन का एयर कन्ट्रोलर्स की हड़ताल का क्रूर जवाब उत्तर युद्ध काल में बिना किसी पूर्विका के था।

रीगन काल में यूनियन का विध्वंस करना क्रूर श्रम ड्रामा था, परन्तु उनके प्रशासन ने भी यूनियन को दुर्बल करने के लिये कई कदम उठाये। यहां तक कि यूनियन सदस्यता के आंकड़े जो संघ द्वारा इकट्ठे किये गये थे को भी हटा दिया। यह एक ऐसा कदम था जिसे व्यापार प्रतिरोध के उत्तर में जल्द उल्टा कर दिया गया।

ट्रंप के अभियान के भाषण नियमित रूप से ''भूले हुये इंसान'' की बात करते, पुरूषत्व की शारीरिक आकृतियों को श्रम में पिरोते हुये, खासकर निर्माण कार्य उद्योग में जहां उन्होंने अपना भविष्य बनाया। साथ ही उन्होंने कॉलेज–शिक्षित रोजगार प्राप्त लोगों का तिरस्कार किया जो फैक्ट्री या निर्माण साइट की जगह डेस्क या क्यूबिकल में बैठते है। ट्रम्प की श्वेत कामकाजी वर्ग के लिये आलंकारिक परानुभूति एवं उसकी अभिजात–विरोधी दिखावा उन लोगों के पक्ष से, जिन्हें क्लिंटन ने ''निंदनीय'' के रूप में खारिज किया था, रीगन अपील का बदला है जिन्हें तक ''रीगन डेमोकरेट्स'' कहा जाता था। यहां तक कि नारा ''मेक अमेरिका ग्रेट अगेन'', पुनरावृत्ति है। यह पहली बार 1980 में रीगन के लिये बना था।

परन्तु अगर उनके शब्दों की पुनरावृत्ति इस तरह की गूंज के साथ होती है, तो ट्रम्प की वास्तविक श्रम नीतियां अभी बहुत दूर है। यह रीगन की हाई प्रोफाइल यूनियन–विरोधी हमलों से कम परोक्ष है। जैसे जैसे जनता ट्रम्प के बम रूपी ट्वीट एवं तानों से जो दूसरे विषयों पर होते हैं एवं कभी न खत्म होने वाला कोलाहल जो वाइट हाऊस में होता है, से आकर्षित होती है, एक श्रमिक–विरोधी एजेंडा जिसे लम्बे समय से दक्षिणपंथ पाल पोस रहा है, चुपचाप रेडार के नीचे से आगे बढ़ रहा है। ''नौकरी समाप्त करने वाले'' नियामकों के चुनावी वादो के लिये, ट्रम्प के प्रशासन ने विभिन्न श्रम नियामकों को जो ओबामा काल में लागू हुये थे, को विघटित कर दिया। सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण था, लम्बित वेतन सीमा की बढ़ोतरी (जो 1975 से ही बदला नहीं था), जिसमें अतिरिक्त कार्य पर स्वतः ही वेतन बढ़ जाने के लिये योग्य होना था, को हटा दिया गया। हालांकि इसे ''श्रम'' मुद्दा बताया गया, ''ओबामाकेयर'' (ओबामा का स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम) को रद्द करना, अनुपातहीन ढ़ंग से श्वेत कामकाजी वर्ग को क्षति पहुंचायेगा।

ट्रम्प का पांच सदस्यीय नेशनल लेबर रिलेशन बोर्ड (NLRB) का मनोनयन, एक ऐसी संस्था जो यू. एस. निजी क्षेत्र सामूहिक मोल–भाव का संचालन करती है, यूनियन–विरोधी के रूप में बदनाम रही है, यह रीगन वर्षों की एक और गूंज है। ट्रम्प द्वारा नियुक्त दो NLRB सदस्य आ चुके है एवं तीसरे भी इस दिसंबर में अपने पदस्थ कार्यकाल के खत्म होने पर उनसे जुड़ जायेंगे। तब ट्रम्प द्वारा नियुक्त किये गये सदस्य प्रभावशाली रूप से बोर्ड को नियंत्रित करेंगे। 2018 से, ओबामा वर्षों में लागू किये गये NLRB निर्णय जो श्रमिक हित मे थे, एवं जिनकी लम्बी श्रंखला है, को निश्चित रूप से रद्द किया जायेगा। ट्रम्प का यू. एस. लेबर विभाग के मुख्य के रूप में, एंड्रयू पुडजर, जो फास्ट फूड बादशाह है, की प्रारंभिक नियुक्ति, को बलपूर्वक निरस्त किया गया। परंतु यह इसलिये कि उनका आरोपित घरेलू हिंसा का इतिहास रहा है एवं उन्होंने ऐसे अप्रवासियों को नौकरी दी जिनके पास दस्तावेज नहीं थे, इसलिये नहीं कि वो श्रम नियमों का मौखिक विरोध करते थे।

यू. एस. यूनियन में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण ट्रम्प की नियुक्ति, सुप्रीम कोर्ट में नील गोरसुच की है। जनुस बनाम ए. एफ. एस. सी. एम. ई. के केस में जिसका अभी फैसला होना है, में गोरसुच का वोट निर्णयात्मक है, ऐसा सभी अवलोकनकर्ता उम्मीद करते है। यह केस, इलिनोइस जन कामगारों के छोटे से समूह के द्वारा लाया गया जिसे नेशनल राइट टू वर्ल्ड फेडरेशन एवं रूढ़िवादी लिबर्टी जस्टिस सेंटर का समर्थन मिला। यह जन–क्षेत्र सामूहिक मोलभाव समझौतों के अंतर्गत, गैरसदस्यों द्वारा दी जाने वाली ''एजेंसी'' फीस को हटाने की धमकी देता है। ज्यादातर राज्य नियमों की मांग करते हैं कि जन–क्षेत्र यूनियन उनके मोलभाव यूनिटों में सभी

>>

श्रमिकों का प्रतिनिधित्व करे, सिर्फ उन्हीं का ही नहीं जो सदस्य है। ''फेयर–शेयर फीस'' उस प्रतिनिधित्व के खर्चे को वहन करने के लिये है एवं ''मुफ्तखोरों'' पर लगाम लगाने के लिये है। कुछ राज्य (जिसमें विसकोनसिन एवं आइओवा शामिल है) ने ऐसी फीस पर पहले ही पाबंदी लगा दी है। जनुस इस प्रतिबंध को देशभर में लागू करेंगे। यह जन क्षेत्र यूनियन के लिये विध्वंसकारी तूफान होगा, जो कि डेमोक्रेटिक एवं रिपब्लिकन नियंत्रित राज्यों में समान होगा।

यह पूर्व निश्चित निर्णय नहीं है कि यह भारी प्रस्ताव सभी प्रकार के संगठित श्रम पर लागू होगा। आज तक, ट्रम्प के ट्रेड यूनियन से रिश्तों ने पुरातन ''विभाजित करो एवं राज्य करो'' वाली व्यूहरचना का अनुसरण किया है। यह उन रेखाओं के साथ है जो स्पष्ट रूप से प्रजाति एवं जेंडर द्वारा विभाजित होती है। अपने उद्घाटन के बाद, उन्होंने पहले दिन से ही जब कार्य शुरू किया, ट्रम्प ने वाइट हाऊस में निर्माण कार्य वाले ट्रेड यूनियन वालों को आमंत्रित किया। बाद में उन्होंने इस प्रकार की समान मीटिंग पुलिस यूनियन अफसरों के साथ भी रखी। ये श्रमिक नेता ऐसी सदस्यता का प्रतिनिधित्व करते है, जो ज्यादातर पुरूष प्रधान एवं श्वेत प्रधान है। संगठित श्रम के सबसे अधिक प्रतिक्रियावादी सेक्टर को परेशान करने के प्रयास में दूसरा तत्व है, ट्रम्प का ऐसे संघ से प्रेम–संबंध, जो बोर्डर नियंत्रण एजेंट का प्रतिनिधित्व करता है। जिनके कद को बढ़ाने के लिये उन्होंने पहले ही कदम उठा लिये है। उनकी NAFTA (नोर्थ अमेरिकन फ्री ट्रेड एग्रीमेंट) एवं अन्य फ्री ट्रेड एग्रीमेन्ट के विरोध की घोषणा, कुछ संघ नेताओं को समझ आयी होगी, जिनमें उत्पादक सेक्टर के अवशेष होंगे। हालांकि दूसरों ने यूनाइटेड स्टेट्स में फैक्ट्री रोजगार बनाये रखने के दावों की उनकी ''जाली सूचना'' पर प्रश्न उठाया है।

यद्यपि, जब सेवा क्षेत्र और सार्वजनिक क्षेत्र संगठनों की बात आती है जो अधिकांशतः महिलाओं और अश्वेत वर्ग से निर्मित होता है और कुछ मामलों में तो इसमें अप्रवासी कामगार भी सम्मिलित हैं, जिन्हें ट्रम्प की विदेशी द्वेषपूर्ण शब्दावली नियमित रूप से रगड़ती है, इस प्रकार के मैत्रीपूर्ण संबंध स्पष्ट रूप से अनुपस्थित पाये जाते हैं। यू. एस. में जन्मे कामगारों को, जिनमें अधिकतर यूनियन में नहीं है, को आप्रवासी कामगारों के विरूद्ध करने के उनके निरंतर प्रयास, उनकी ''विभाजित करो एवं राज्य करो'' की व्यूह रचना है। यहां पर ट्रम्प स्पष्ट रूप से रीगन ने अलग हटते दिखायी देते है, जिन्होंने पिछले महत्वपूर्ण आप्रवासी सुधार (1986 के आप्रवासी सुधार एवं नियंत्रण एक्ट) की अध्यक्षता की थी जिसने करोड़ों दस्तावेज रहित आप्रवासियों को क्षमादान प्रदान किया था। ट्रम्प की लेबर एवं यूनियन के लिये प्रवृत्ति ''ग्रेट कम्यूनिकेटर'' के समान है। अगर कभी पाठ्य पुस्तक में इतिहास की पुनरावृत्ति का केस हुआ होगा, तो प्रथम बार त्रासदी एवं दूसरी बार स्वांग, यह ऐसा ही है। ■

सीधा संपर्क करे : रूथ मिल्कमेन <rmmilkman@gmail.com>

> अमेरिकन ब्रुमेयर?

डाइलन रिले, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, अमेरिका

नेपोलियन बोनापार्ट III, फ्रांस के राष्ट्रपति 1848–52, कार्ल मार्क्स के करिश्माई नेता का प्रारूप जो राष्ट्रपति ट्रम्प जैसा दिखता है, जब पूंजीपति वर्ग अपने वर्चस्व को खो देगा।

क्या ट्रम्प की जीत ने अमेरिका की राजनीति में मौलिक बदलाव किया है? हां, लेकिन संभवतः उस तरीके से नहीं जैसी आप अपेक्षा करते हैं। प्रारंभिक फासीवाद को प्रदर्शित करने के स्थान पर ट्रम्प का राष्ट्रपति शासन ''नव–बोनापार्टवाद'' की प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है : जो एक संस्तरणमूलक परियोजनाओं के लिए एक करिश्माई नेता का विकल्प देता है। उन्नीसवीं

> >

शताब्दी की फ्रांसीसी क्रांति की तरह यह आधुनिक बोनापार्टवाद भी भौतिकतावाद के ह्रास से उत्पन्न आधिपत्य के संकट से जुड़ा हुआ है, जिसने अमेरिका के पूंजीवादी वर्ग को अपने हितों आगे बढ़ाने की स्वीकृति दे दी है, जबकि सामान्य रूप से वे समाज के लोगों का प्रतिनिधित्व करने का दावा करते हैं। पूर्व–आधुनिक राज्य के संदर्भ में इस संकट ने दलगत राजनीति को और एक अत्यधिक वि–राजनीतिकृत जनवसंख्या को कमजोर किया है। ट्रम्प ने एक पर्याप्त राजनीतिक प्रतिक्रिया द्वारा इन अंतर्निहित आर्थिक और राजनीतिक संस्थागत विशेषताओं को संबोधित किया जिससे उनका चुनाव संभव हो गया।

> प्रभुत्व और संकट

1930 से 1970 के दशक तक – आर्थिक संकट के पुस्तक–समाप्ति की अवधि तक – अमेरिका में पूंजीपति वर्ग ने उच्च मजदूरी, स्वस्थ मुनाफे और (अपेक्षाकृत) पूर्ण रोजगार के आधार पर फोर्डिस्ट प्रभुत्व को बनाए रखा। लंबे समय के युद्ध के बाद की वृद्धि/तेजी ने लोकतान्त्रिक (डेमोक्रेटिक) और गणतांत्रिक (रिपब्लिकन) प्रशासन को श्रमिक वर्ग को महत्वपूर्ण लाभ देने की अनुमति दी। लेकिन 1973 से अमेरिकी अर्थव्यवस्था में आई मंदी ने इस व्यवस्था को कमजोर कर दिया। व्यापारिक अभिजात वर्ग के लिए तीव्र उत्पादकता वृद्धि और बढ़ते हुए मुनाफे ने विस्तारित कल्याणकारी राज्य को सहनीय बनाया। लेकिन जर्मनी, जापान, एशियाई बाघ अर्थव्यवस्थाओं और अंततः चीन की तुलना में यहां लाभ दर कम हो गई, के परिणामस्वरूप खेल के नियमों में बदलाव आया। 1970 के दशक के मध्य से राजधानी आक्रामक हो गई और दोनों पार्टियों ने तेजी से समायोजित किया। अमेरिकी कल्याणकारी राज्य की छंटनी (राष्ट्रपति) कार्टर के शासनकाल में शुरू हुई और ओबामा के समय तक जारी रही। प्रभुत्व का नया फॉर्मूला नव–उदारवाद था, जिसने उपभोक्ताओं के रूप में पुनर्निर्मित श्रमिकों को बाजार के माध्यम से स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय का वादा किया था। वेतन वृद्धि और सामाजिक कार्यक्रमों के स्थान पर करों में कटौती को सहमति के भौतिक आधार के रूप में देखा गया।

इस नव–उदारवादी फॉर्मूले का संकट 3 अक्टूबर 2008 को तब समाप्त हो गया, जब 700 अरब डॉलर के संकटग्रस्त परिसंपत्ति राहत कार्यक्रम (टीएआरपी) ने बैंकों को जमानत दे दी। इस समय मुक्त–बाजार विचारधारा का पाखंड उभर कर आया। ओबामा के शासनकाल के दौरान पर्यावरण और एल. जी. बी. टी. क्यू के मुद्दों पर (अपेक्षाकृत मूल्य रहित) छूट के साथ नव–उदारवादी व्यवस्था भी बनी हुई थी। फिर भी ओबामा के शासनकाल को स्पष्ट रूप से नव–उदारवादी शासन की संज्ञा नहीं दी जा सकती। बुश की अपेक्षा ओबामा ने वित्त पूंजी और धनी परिसंपत्ति मालिकों को, विशेष रूप से किफायती देखभाल अधिनियम (अफोर्डेबल केयर एक्ट) (स्वास्थ्य बीमा हेतु ओबामा का कार्यक्रम, जिसे अक्सर ओबामाकेयर कहा जाता है) के हैंडआउट्स को बड़े पैमाने पर बीमा उद्योग को देने का समर्थन किया। ओबामा के शासन काल के दौरान निजी मालिकों और राज्य के बीच संबधों को पुनर्गठित किया गया था, क्योंकि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के क्षेत्र तेजी से राज्य पर आश्रित हो गए।

ट्रम्प ने नव–उदारवाद के पतन को राजनीतिक स्तर पर प्रभावी ढंग से प्रयुक्त किया। यद्यपि उनके आर्थिक कार्यक्रम को सम्मानजनक राय की श्रेणी से बाहर रखा गया – न्यूयॉर्क टाइम्स के स्तंभकार (और नोबेल–विजेता अर्थशास्त्री) पॉल क्रोगमैन ने ट्रम्प के उद्घाटन भाषण में ''सामाजिक और आर्थिक पतन वाले एक बर्बाद राज्य का आह्वान करने की निंदा की, जो अमेरिकी वास्तविकता के साथ थोड़ा संबंध रखता है''–बुनियादी समस्याओं को ट्रम्प स्पष्ट रूप में वास्तविक साबित करते हैं। 1980 में विनिर्माण के क्षेत्र ने अभी तक 22% रोजगार उपलब्ध कराया, जो मिसिसिपी के पूर्व के अधिकांश जिलों में, उत्तर और दक्षिण में, दक्षिणी कैलिफोर्निया और उत्तर–पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में बढ़कर 30% हो गया, विमान निर्माण क्षेत्र की नौकरियों ने इन आंकड़ों में वृद्धि की हैं। 2015 तक विनिर्माण रोजगार में 10% की गिरावट देखी गई, जिसने न केवल ऊपरी मध्य–पश्चिम की प्रसिद्ध ''जंग बेल्ट'' को प्रभावित किया बल्कि – और महत्वपूर्ण रूप से – दक्षिणी और दूर–पश्चिमी राज्यों को भी प्रभावित किया। वि–औद्योगिकीकरण ने गरीबी, नशीली दवाओं के दुरूपयोग और इस जैसे अन्य वास्तविक सामाजिक परिणामों को उत्पन्न किया।

यद्यपि जबकि अमेरिका का विनिर्माण उद्योग खोखला हो चुका है और औसत मजदूरी स्थिर है, सीईओ के वेतन में वृद्धि हुई है। इस प्रकार अमेरिकी पूंजीवादी वर्ग के हित व्यापक समाज से तेजी से अलग होते जा रहे हैं। विशिष्ट अर्थ में ट्रम्प के चुनाव सत्तारूढ़ वर्ग के नेतृत्व के संकट की एक अभिव्यक्ति हैं। अमेरिका का सामाजिक अभिजात्य वर्ग अब एक सच्चा दावा नहीं कर सकता है कि इसके विशेष हित बहुसंख्यक जनसंख्या के अनुरूप हैं।

> 2016 : बिना किसी योग्यता के आधार पर चुनाव होना?

एक अर्थ में, 2016 का चुनाव एक ऐतिहासिक वाइल्डकार्ड था अर्थात बिना योग्यता के चुनाव होना था। लेकिन तीन शक्तिशाली संरचनात्मक पहलुओं ने इसे संभव बनाया : पहला, दलीय प्रणाली का खोखला/कमजोर होना जिसने ट्रम्प और सैंडर्स दोनों के विद्रोह को अनुमति दी, दूसरा अमेरिकी राज्य का आधुनिक–पूर्व चरित्र और अंतिम, व्यापक राजनीतिक उदासीनता। पहले मुद्दे पर स्पष्ट रूप से अधिक चर्चा होना आवश्यक है, लेकिन अन्य दो मुद्दे भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

अमेरिकी राज्य की आधुनिक–पूर्व संस्थागत विशेषताओं ने ट्रम्प की जीत में बड़ी भूमिका निभायी। मतदान को विकृत करके गुलामधारक अल्पसंख्यक के हितों की रक्षा करने के लिए डिजाइन की गई अमेरिकी व्यवस्था जर्मन शासक विल्हेलामिन के राजशाही साम्राज्य या जीओलीटी के काल में इतालवी संसद की विशेषताओं जैसे सीमित मताधिकार, फर्स्ट–पास्ट–द–पोस्ट चुनाव प्रणाली, मतपत्रों तक पहुंच पर उच्च प्रतिबन्ध और राज्य–आधारित निर्वाचक मंडल को साझा करती है। ट्रम्प ने लोकप्रिय वोटों को खोने के बावजूद लगभग तीस लाख के अंतर से राष्ट्रपति पद जीता। दरअसल, अमेरिकी राजनीतिक प्रणाली की प्राचीन शासन की विकृतियां अब और भी अधिक स्पष्ट हुई है क्योंकि शहरीकरण जारी है।

व्यापक राजनीतिक उदासीनता ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है – मतदान–आयु वाली केवल 55% जनसंख्या ने चुनाव में भाग लिया। हमेशा की तरह, मतदान का झुकाव अमीर और बेहतर–शिक्षित मतदाताओं की ओर ही था। रिपब्लिकन की तुलना में डेमोक्रेटिक मतदाताओं के चुनावों से दूर रहने की संभावना अधिक होती है : एक सर्वेक्षण के मुताबिक, 46% पंजीकृत रिपब्लिकन मतदाताओं ने मतदान किया लेकिन मात्र 42% पंजीकृत डेमोक्रेटिक मतदाताओं ने मतदान किया, अश्वेत लोगों ने असमान ढंग से गैर–मतदाताओं का प्रतिनिधित्व किया। यहां तक कि (लोकतांत्रिक) डेमोक्रेटिक

>>

मतदाताओं के बीच भी थोड़ा अधिक मतदान होने पर ट्रम्प ने उन्हें रास्तों पर ही रोक दिया होगा।

> सहमति की समाप्ति

ट्रम्प का प्रस्ताव क्या समाधान देता है? कानून पास करने में उनकी असमर्थता को देखते हुए यह निर्माताओं, बिल्डरों और उपभोक्ताओं के लिए लागत को कम करने के लिए ''अनावश्यक'' सुरक्षा और पर्यावरणीय नियमों को तोड़ता है, जिससे मांग में उछाल आयेगा। उच्च आयात शुल्क और आव्रजन पर कार्यवाही से देशज विनिर्माण रोजगार को अधिकतम करने में मदद मिलेगी। लेकिन यह धारणा कि ''विनियमन'' अमेरिकी निवेश में एक बड़ी बाधा है, विचित्र है।

क्या भू–राजनैतिक आधार पर पुनः विन्यास की संभावना है? हालांकि ऐसा माहौल पैदा करने में निराशा पूर्ण ढंग से अक्षम रहे है जो सामान्यतः अमेरिकी विदेश नीति (टूथलेस पेरिस समझौते की समाप्ति, ''मानवाधिकार'' और ''लोकतंत्र'' के बारे में पवित्र ब्रोमाइड्स की अस्वीकृति) को बांधता हैं, लेकिन इसमें कोई बदलाव नहीं दिखता है : नाटो और जापान का पूर्णतः समर्थन किया जाएगा और बुश और ओबामा के युद्धों को अनिश्चित काल तक विस्तारित किया जाएगा।

> भविष्य

राजनीतिक संघर्ष के नए प्रतिमानों/स्वरूपों का भविष्य क्या होगा? अंतरराष्ट्रीय संबंधों में, ट्रम्प ने एक ''राज्य–पूंजीवादी'' आधार–संरचना केन्द्रित वृद्धि की योजना बनाई, साथ ही विदेशों में बिना नियम के बातचीत की रणनीति बनाई। लेकिन यह परियोजना मौलिक रूप से असंगत है। चीन की तरफ टकराव का रूख अपनाते समय अमेरिका भारी घाटे को कैसे उठा सकता है, जिनकी बचतों का इस्तेमाल इस खर्च के दौरान मौज मस्ती करने के लिए किया जाएगा? हमें संघीय राज्य के संसाधनों तक पहुंच की अलग–अलग मात्रा वाले प्रभुत्व वर्ग के विभिन्न भागों के बीच कठिन संघर्षों की आशा करना चाहिए।

ट्रम्प एक फासीवादी नहीं है क्योंकि उनमें पार्टी संगठन, नागरिक सेना और विचारधारा का अभाव है; उनकी विदेशी नीति प्राचीन फासीवादी अर्थों में विस्तारवादी के बजाय ''अलगाववादी'' है। इसे स्पष्ट रूप से बर्लुस्कोनी के समानांतर देखा जा सकता है, लेकिन इनमें दो प्रमुख अंतर है। सबसे पहला, यह इतालवी उद्योगपति ट्रम्प की तुलना में अधिक स्थापित था : उसके पास एक विशाल मीडिया साम्राज्य था, देश के राजनीतिक वर्ग के साथ उसके प्रत्यक्ष और घनिष्ठ संबंध थे जो कि ट्रम्प के पास नहीं हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है, शायद बर्लुस्कोनी के रोल मॉडल रोनाल्ड रीगन थे, और उन्होंने अमेरिकी–शैली की सामान्यता की इच्छा रखने वाली इतालवी जनता से अपील की। संक्षेप में, बर्लुस्कोनी उत्तर–काल का एक नव–उदारवादी सांचा था– जिसे ट्रम्प स्पष्ट रूप से तोड़ रहे हैं। पुतिन या ओरबान के साथ अधिक उपयोगी समानता हो सकती है। इस परिप्रेक्ष्य से, ट्रम्प को ''नव–रूढ़िवादी'' इकाई के रूप में देखा जा सकता है, जो अनुयायियों का एक अनौपचारिक दरबार स्थापित करेगा और उन्हें राज्य पोषित उदारता के साथ पुरस्कृत करेगा।

''ट्रम्प–कीनसियन'' आर्थिक कार्यक्रम– एक बढ़ती संदिग्ध संभावना – एक स्थायी निर्वाचित गठबंधन को जोड़ने की दिशा में संघीय संसाधनों का प्रवास ऊपरी मिडवेस्ट की तरफ मोड़ सकता है। लेकिन अमेरिकी अर्थव्यस्था में राज्य–निर्देशित पूंजीवाद के अवास्तविक स्वरूप के माध्यम से तेजी से विकास करने की परियोजना अत्यधिक अविश्वनीय लगती है। इसलिए हम इसमें निरंतर बहाव और गिरावट की आशा का सकते हैं। दूसरी तरफ, अभिजात वर्ग में अत्यधिक टूटन आने का मतलब है कि ट्रम्प की विजय अमेरिका में प्रगतिशील परिवर्तन के लिए संभावनाओं के रास्ते खोल सकती है। ■

सीधा संपर्क करे : डाइलन रिले <riley@berkeley.edu>

> लेनिनवादी दक्षिण पंथ का उभार

सिहान तुगल, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यू.एस.ए.

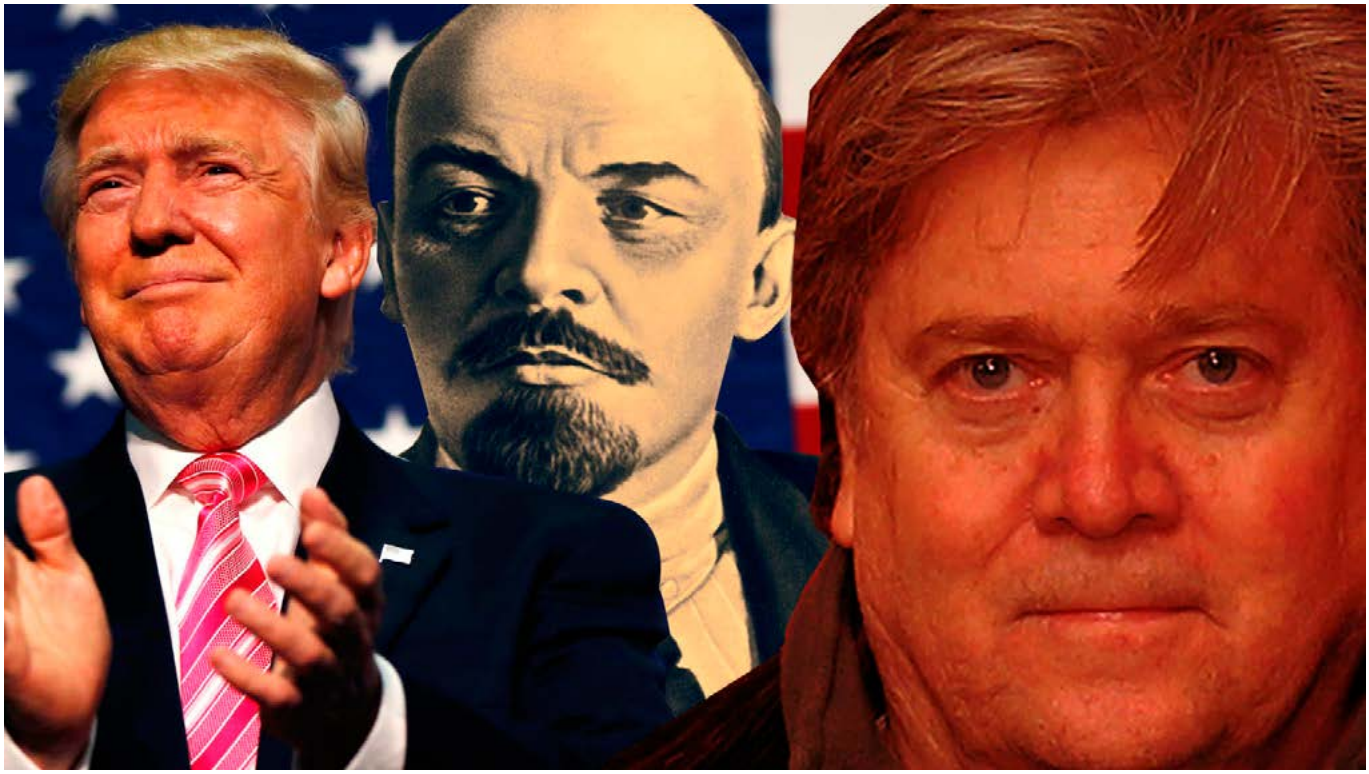

आल्ट–दक्षिणपंथ के बौद्धिक शिल्पकार स्टीव बैनन, जो राज्य को नष्ट करने के लेनिन के आह्वान से स्पष्टतया आकृष्ट होते हैं।

अमेरिका में दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद की जीत ने आधे देश को आश्चर्य में डाल दिया। यदि विश्व–ऐतिहासिक तरीके में संदर्भित किया जाये, यह चौंकाने वाली बात नहीं है। संक्षेप में, नवउदारवाद युग के चढ़ाव–उतार के चक्रों ने स्वयं को समाप्त कर लिया। आर्थिक संकट सीधे तौर पर व्यापक राजनैतिक समस्या में परिवर्तित नहीं होता, परंतु (1970 के दशक के बाद) समूहवाद के सभी प्रकारों के खिलाफ सैद्धांतिक हमलों ने पूंजीवाद से निपटने के केंद्रिय और वाम रंग के तरीकों को मानवता से वंचित कर दिया। नवउदार अपकर्ष और निरंतर समूहवाद–विरोध वैश्विक प्रतिमान है, और मैं उनके बारे में यहां कम कहूंगा। अमेरिका में, बीते कुछ दशकों में, लोकलुभावन भाषा के ऐतिहासिक स्थानांतरण और वाम से दक्षिण की ओर की राजनीति के कारण ये और गंभीर हो गया है। परिणामस्वरूप, वामपंथ कभी एक उचित लोकलुभावन चुनौती तक भी नहीं पहुंच सका (अकेला पूंजीवाद को बचा सके या उखाड फेंक सके), जबकि दक्षिणपंथ की चुनौती ऊर्जा, भावना और वादों से पूर्ण है–अगर वास्तविक समाधानों से नहीं।

> वामपंथ का उदारीकरण

वामपंथ अब और लोकलुभावन स्वर में विश्वासपूर्ण तरीके से नहीं बोल सकता है। यह नहीं जानता कि कैसे। किसी भी मामले

> >

में, इसकी अधिकांश विचारधारायें नहीं करना चाहती हैं। अमेरिकन वामपंथ के अंदर लोकलुभावन मकसदों की कमी को समझने के लिये, हमें हमारे युग के लोक–विरोध के प्रागैतिहास को देखना होगा।

मैं इस अपकर्ष को, विरोधाभासी रूप से, कागजों में बींसवी सदी के सबसे अधिक लोकतांत्रिक दिखायी देने वाले विद्रोह में ढूंढता हूं: 1968 (जैसा कि इसे पश्चिम में अनुभव किया गया)। इसके पूंजीवाद–विरोधी होने के साथ साथ, 1968 राज्यवाद और स्टालिनवाद की नौकरशाही ज्यादतियों, सामाजिक लोकतंत्र, और न्यू डील के खिलाफ विद्रोह था। यद्यपि कई संदर्भों में सही ठहराया गया, उस क्षण की नौकरशाही–विरोधी मनोदशा बहुत से लोगों को राज्यवाद के पतन और (नव) उदारवाद की जीत गलत पाठों तक ले गयी। 1968 एक जरूरी गलती थी। दक्षिणपंथ इससे उबर गया। वामपंथ नहीं।

पश्चिम में 1968 के दो प्रमुख उत्तराधिकारी–उदारवादी वामपंथ और स्वायतवादी/अराजकतावादी आंदोलन ने–ना सिर्फ संगठन, विचारधारा और नेतृत्व में, बल्कि बहुमत ''लोगों'' के नाम पर बोलने में भी असाध्य संदेह को विकसित कर दिया। ऐसी सारी बातें (और राजनीति) को ''अधिनायकीकृत'' और अधिनायकवाद (पूर्ण वाम की ओर से) या ''गैरजिम्मेदार'' और बेकार (उदार वाम के द्वारा) के रूप में ब्रांड कर दिया गया। दक्षिण यूरोप (जहां वामपंथी लोकलुभावनवाद घटनास्थल पर लौट आया, परंतु वर्ग, विचारधारा, और संगठनात्मक एंकर के बगैर) और लैटिन अमेरिका के अलावा, दक्षिणपंथियों ने उभरता हुये अंतर को अधिकार में ले लिया।

कागज पर हारी, 1968 की उदारवादी भावना ने नवउदारवाद के राज्यवाद–विरोध को ताकत दी। परंतु बाद में उत्तरआधुनिक नास्तिवाद और वाम उदारवाद के बीच वामपंथियों में विभाजन एक अधिक जहरीला परिणाम था।

वाम उदारवाद की परियोजना क्या थी? यद्यपि अपने कारणों और अभिव्यक्तियों में वैश्विक, वाम उदारवाद ने अपनी सबसे शुद्ध अभिव्यक्ति संयुक्त राज्य और ब्रिटेन में पायी। सबसे पकड़ वाला शब्द था समावेश, जिसने समानता की जगह ले ली। एंथोनी गिडेंस जैसे समाजशास्त्रीयों से प्ररित, एक नये एंग्लोफोन सेंटर (नये लेबर और क्लिंटनवाद) ने अधिक लोगों को मंच पर शामिल करने पर ध्यान केंद्रित किया। तीन दशकों में, नस्ल, लिंग और लैंगिक उन्मुखन के संदर्भ में समावेश बढा है–परंतु मंच स्वयं ही सिकुड गयी। तो हां, काले और लैटिनों पुरूष और महिलायें, यहां तक कि मुस्लिम, को भी संस्था में महत्वपूर्ण पद प्राप्त हुये जिनके लिये वे पहले सिर्फ सपना ही देख सकते थे; परंतु अमेरिका में काले और लैटिनों की जेल में आबादी बढ गयी, जैसे कि संयुक्त राज्य में बमबारी, प्रतिबंधित और भूख से ग्रसित मुस्लिमों की।

वाम–उदारवाद ने लक्षित कल्याण कार्यक्रमों के माध्यम से (अधिक सामान्य) अल्पसंख्यकों से बात की; परंतु लोकतांत्रिक नेताओं ने बड़ी मछलियों को दूर करने में शर्म की, यह सिर्फ श्वेत लोगों को सिकुडते मंच से हटाकर और उत्पीडित करके ही हो सकता था। अवक्रमित श्वेत लोगों को एक नस्लीयों के समूह ''खेदजनक लोगों का समूह'', लोग जिनसे हम अब बात नहीं कर सकते (एक वास्तविकता जो परियोजना द्वारा ही निर्मित हुयी), के रूप में देखा जाने लगा।

> वामपंथ का स्व–विनाश और दक्षिणपंथ की सेवा

परिणामस्वरूप, अल्पसंख्यक वहनीय तरीके से लामबंद और संगठित नहीं हुये (2016 के संयुक्त राजय चुनावों में प्रसिद्ध ''गायब'' काले मतों को पैदा करते हुये); अवक्रमित श्वेत लोग दोनों दलों पर अविश्वास करते हैं, परंतु उदारवादियों को अधिक घृणित पाते हैं। सैंडर्स के उदय तक, वाम स्थापना (उदार वाम और प्रगतिशील वाम दोनों) अभिजात–चालित ''विविधता'' और ''समावेश'' के उदारवाद खेल में फंस गयी। ये गहरी राजनीतिक वृत्तियों ने एक न्यू डील परिदृश्य के अत्यधिक असंभावित बना दिया।

पूर्ण वामपंथ का क्या? उदार वामपंथ की अत्यधिक नापसंद के बावजूद, कई उग्र बुद्धिजीवियों और कार्यकर्ताओं ने ''विचार–धारा के अंत'' के जश्न को साझा किया और नेतृत्व (वामपंथ में ''राइजोम्स'' और प्रगतिशील डेमोक्रेटस में इलेक्टोरलिस्म के रूप में परिणाम हुआ) संगठित किया। सिएटल के ऑक्यूपाइ तक, अमेरिकन वामपंथ ने ना सिर्फ बचने के लिये बल्कि संगठित नेतृत्व को कमजोर करने के लिये अपना सबसे अच्छा प्रयास किया। केंद्र के ढहने से, दक्षिणपंथ जवाब देने के लिये काफी अधिक सुसज्जित था। सबसे पहले और सबसे आगे, दक्षिणपंथ ने ना विचारधारा और ना ही संगठित नेतृत्व छोड़ा। कागज पर, वे दोनों के खिलाफ लड़े, परंतु सिर्फ तब जब विचारधारायें, संगठन और नेता राडार के अन्दर थे।

जब वामपंथ ने 1968 (तब भी जब 1968 का इसके उदारवादी और संस्कृति–विरोधी भावना के लिये जश्न मनाते हुये) की विचारधाराओं और संगठनों का जो भी बचा उसको दफना दिया, अमेरिकन दक्षिणपंथ ने 1968 के खिलाफ विद्रोह के रूप में संगठित हो गये। परंतु विद्रोह, जिसके लिये लडने का दावा किया गया, के अवशेषों के विपरीत दक्षिणपंथ संगठित और सैद्धांतिक था। इसकी सफलता मुख्यधारा से पूर्ण दक्षिण पंथ तबदीली वास्तव में 1968 की एक भुला दिये गये पक्ष की दमित कार्यनीतियों और युक्तियों पर आधारित है : लेनिन की क्रांति के सिद्धांत का एक विशेष पाठ।

> अमेरिकन दक्षिणपंथ का 'इक्कीसवीं सदी का लेनिनवाद'

ट्रम्प की राष्ट्रपति कार्यकाल की पहली वर्षगांठ से पहले स्टीव बैनॉन–यूएस ऑल्ट–राइट के अग्रणी बुद्धिजीवी–की बर्खास्तगी एक झूठी राहत के रूप में आयी। वास्तव में, बैनॉन का व्हाइट हॉउस रोमांच एक लंबी यात्रा का सिर्फ एक चरण था–क्रांतिकारी लोकलुभावन भाषा, युक्तियों और रणनीतियों का वामपंथ से दक्षिणपंथ की ओर स्थानांतरण। बैनॉन ने कथित तौर पर कहा था: ''मैं एक लेनिनवादी हूं। लेनिन राज्य को नष्ट करना चाहता था, और यही मेरा लक्ष्य भी है। मैं सब कुछ नीचे धराशायी, और आज के सभी प्रतिष्ठान नष्ट करना चाहता हूं।'' परंतु यह लेनिनवाद किस चीज से बना है? एक जटिल लोकतंत्र में, लेनिनवाद केवल एक लंबी क्रांति के लोकलुभावनवाद के रूप में अपने को बनाये रख सकता है। दशकों तक, सामाजिक विज्ञानों ने जोर दिया है कि गहराई में समायी संस्थाओं के कारण कोई तीसरा दल यूएस में सफल नहीं हो सकता। इस ''वैज्ञानिक तथ्य'' ने उदारवादी वामपंथियों और स्वायतवादीयों/अराजकतावादीयों में आत्म–निश्चितता (जिन्होंने वहां पर आगे क्रमशः नवउदारवाद के प्रति अधीनता और संगठित राजनीति के औचित्य ढूंढ लिये) के लिये सक्षम कर दिया। अमेरिकन पूर्ण दक्षिण पंथ ने इस ''तथ्य'' को उलट दिया। यह ऐसा था कि जैसे कि वे इक्कीसवीं सदी से दिशानिर्देशों का पालन कर रहे थे, लेनिन

>>

“मैं एक लेनिनवादी हूँ। लेनिन राज्य का विध्वंस करना चाहते थे, और मेरा भी वही लक्ष्य है। मैं सबकुछ को गिराना चाहता हूँ और आज के सभी संस्थापनों को नष्ट करना चाहता हूँ।”

स्टीव बैनन, 2014

का संक्षिप्त संस्करण (1902) क्या किया जा सकता है?, इस वाक्य से शुरू होता हुआः ''यदि आज एक दल नहीं बना सकते, तो दल को पंगु बना दो; इसे रोक दो; और इस पर कब्जा कर लो।'' उन्होंने ये तीनों एक साथ किया। हमारी कल्पना, संशोधित क्या किया जा सकता है? फिर जारी रहती है : ''आप दल के कानूनन नेता बने इससे पहले, सुनिश्चित करें कि इसकी सभी संस्थायें पंगु हो गयी हैं।'' यदि टी पार्टी (रिपब्लिकनस में एक लोकलुभावनवादी समूह) ने रिपब्लिकन स्थापनाओं को पहले ही पंगु ना किया होता, ये ट्रंप के उदय को रोक देते।

अमेरिकन दक्षिणपंथ लोकलुभावनवाद लोकतांत्रिक स्थितियों में लेनिनवाद है। रूसी बोलश्विक के विपरीत जिसे समाज और राजनीति के सभी उपरोक्त आधार अनदेखे करने पड़े थे, अमेरिकन दक्षिण पंथ ने समाज को अपनाया। संशोधित क्या किया जा सकता है? इसलिये यह कहेगा : ''समाज के हर भाग को संगठित करो। संगठन और राजनीति के किसी स्थान को कम मत आंको, चाहे यह (विशेषतः यदि) दुश्मन शिविर से संबंधित ही दिखायी दे।'' दक्षिणपंथ ने शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति को वामपंथ के एकाधिकार में ना छोडना सीख लिया। ''आपके दुश्मन के संगठनात्मक इलाके और विचारधारा को विनियोजित करो, जहां तक संभव हो। जो आप विनियोजित करने में विफल रहो उसे धराशायी कर दो।'' एंड्रयू ब्रेटबार्ट से ही शुरू करते हुये, ''आल्ट–राइट'' मीडिया आउटलेट के संस्थापक, दक्षिणपंथ फ्रेंकफर्ट स्कूल में पढ; इसने स्वासयि सेवा को बहुत बडा निा दिया; और ट्रंप और बैनॉन के उदय के साथ, यह नौकरियों और बुनियादी ढांचे का वादा करता है।

आज लेनिनवादी दक्षिणपंथ सामाजिक नक्शे पर अन्य संभावित लोकलुभावनवादी ताकतों के अस्तित्व को अनदेखा नहीं कर सकते, चाहे कितने अल्प ही क्यों ना हो। इक्कीसवीं सदी का क्या किया जा सकता है? एक वाक्य में इस प्रकार समाप्त होगाः ''यदि दुश्मन की कुछ खाईयां इन युक्तियों में किसी की भी पहुंचे से दूर प्रतीत हों, तो इसके रहने वालों को अपरिपक्व और अवैद्य कार्य के लिये भडकाओ।'' जैसा कि 2017 के शुरू में आल्ट–राईट कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्केले और अन्य बचे हुये वामपंथ प्रभाव के भागों में उतर आये, उदारवादी उनके बचाव के लिये आये जब पूर्ण वामपंथ ने बिना जनाधार के हमला कर दिया। शारलोटसविले में एक आल्ट–राइटिस्ट ने नस्लविरोधी भीड में घुसकर एक ट्रक चला देने के बाद से ''बोलने की आजादी'' के लिये उदारवादी उत्साह थोडा कम हो गया, परंतु वांशिगटन पोस्ट अभी भी पूर्ण वामपंथ की हिंसा और आल्ट–राइट की आजादी पर जोर देता है जब वह सितंबर 2017 में बर्केले लौटा। एक तीर से कई निशाने लगाये गयेः दुश्मन विभाजित हो गये इसका भ्रम, इच्छा की कमी, और कमजोरी उभर कर सामने आ गयी; इसकी प्रतिष्ठा तार–तार हो गयी; और पूर्ण दक्षिणपंथ स्वयं ही आगे प्रेरित हो गये।

चूंकि राज्य, बींसवी सदी की किसी भी परिभाषा जितना बता सकती है, उससे अधिक जटिल है, ''मुंहतोड़'' यह कम से कम अब 1917 की तुलना में कहीं कम नाटकीय कार्यों को शामिल करता है। हमें अभी भी नहीं पता है कि दक्षिणपंथ के पास क्या है उस समय के लिये जब मौजूदा संस्थायें पूरी तरह से अक्षम हो जाये, परंतु हमें जल्दी ही पता लग सकता है। अपने इस्तीफे के ठीक बाद, स्टीव बैनॉन ने अपने दुश्मनों के लिये ''युद्ध'' घोषित कर दिया, प्रसन्नता से यह जोडते हुये कि वह अपने ''हथियारों'' की ओर लौट रहा है (मतलब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया)। उदारवाद से ओतप्रोत (यद्यपि खस्ताहाल) एक भूमि में एक लोकलुभावनवादी क्रांती एक कठिन लडाई है, और असफलता झेलने के लिए बाध्य है। परंतु प्रस्तुति अभी खत्म होने से दूर है। ■

सीधा संपर्क करे : सिहान तुगल
<ctugal@berkeley.edu>

> ब्राज़ील एवं दक्षिण अफ्रीका में लोकतांत्रिक व्याकुलता

गे डब्ल्यू. सीडमन, बिस्कोसिन मेडिसिन विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं आई. एस. ए. की श्रम आन्दोलन शोध समिति के सदस्य (आर. सी. 44)

दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति जुमा, जो वित्तीय घोटालों में फंसे हैं, यहां अपने अपराध के साथी गुप्ता भाइयों से घिरे हुए।

ट्रम्प की अप्रत्याशित जीत के बाद से वैश्वीकरण की चुनौतियों और निरंकुश–लोकवाद की धमकी पर पानी फिर गया, परन्तु उस अधिकांश चर्चा ने वैश्विक–उत्तर के धनी देशों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया, परन्तु वैश्विक–दक्षिण के नए लोकतंत्र का क्या होगा?

पिछले 25 वर्षों से ब्राजील एवं दक्षिण अफ्रीका ने एक नए युग के गरिमापूर्ण प्रतिक के रूप में काम किया है : निरंकुश औद्योगिकीकरण के दशक के बाद विश्व के दो सर्वाधिक असमान समाज लोकतान्त्रिक ढंग से निर्वाचित राजनेताओं के साथ–साथ समावेशी सामाजिक कार्यक्रमों के साथ निरंतर आर्थिक विकास एवं वैश्विक एकीकरण के बीच संतुलन बनाते हुए एक लोकतान्त्रिक–संवैधानिक समाज बनाने के लिए धीमी गति से आगे बढे।

दोनों देशों में, 1990 के संयुक्त नागरिक समाज के प्रसिद्ध आन्दोलन, श्रम आन्दोलन एवं निर्धन समुदाय आन्दोलन उत्तर–औपनिवेशिक संभावनाओं के वैश्विक प्रतीक बन गए हैं। दोनों देशों में, प्रगतिशील परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध दल आर्थिक विकास एवं लोकतान्त्रिक नागरिकता को संतुलित करने के लिए लोकतान्त्रिक चुनाव के माध्यम से सत्ता में आये।

खनिजों और अन्य प्राथमिक वस्तुओं के निर्यातकों के रूप में दोनों देश 2000 के दशक के आरंभ में उच्च वस्तुओं की कीमतों से लाभान्वित हुए। लोकप्रिय दलों में, अंतराष्ट्रीय निवेशकों और स्थानीय नागरिकों को खुश रखने के लिए, लंबे समय से बहिष्कृत समुदायों के लिए नई ''गरीब–समर्थक'' सामाजिक नीतियों का लक्ष्य पूरा करने के लिए वैश्विक अर्थव्यवस्था के संबंधों को बनाए रखने के लिए व्यावहारिक संतुलन स्थापित हुआ।

लेकिन आज, वैश्विक वस्तुओं की कीमतों में अचानक आई गिरावट के कारण, दक्षिण अफ्रीका के एएनसी और ब्राजीलियाई श्रमिक पार्टी (पीटी) दोनों में ही अशांति छा गई, भ्रष्टाचार के आरोपों और तेजी से खो रहे लोकप्रिय समर्थन ने इन्हें विभाजित कर दिया। दोनों देशों में बड़े पैमाने पर हुए भ्रष्टाचार के घोटालों ने पार्टी के प्रमुख अधिकारियों को फंसा दिया। दोनों देशों की बड़ी निजी कंपनियों ने वृहद निर्माण परियोजनाओं, निजी व्यवसायों के लिए सब्सिडी, और आकर्षक सार्वजनिक अनुबंधों को जीतने के लिए पार्टियों और राजनेताओं को रिश्वत दी, जिससे लोगों में व्यापक नाराजगी/क्रोध पैदा हो गया।

निश्चित रूप से भ्रष्टाचार किसी भी समाज के लिए नया नहीं है। दोनों देशों में, निरंकुश औद्योगिकीकरण को अभिजात वर्ग के भीतर राजनीतिक सौदों द्वारा ऐतिहासिक रूप से भरा गया है : दमनकारी सरकारें बड़े निगमों से निकटता से जुड़ी हुई थी, जो उनकी सफलता के लिए राजनेताओं के पक्ष और राज्य अनुबंध पर अधिक निर्भर थी।

लेकिन लोकतंत्र ने नई पारदर्शिता स्थापित की है: लोकतांत्रिक संस्थानों और मीडिया ने ऐसे विवरणों का खुलासा किया है जो कभी भी अतीत में दिखाई नहीं दिए थे। दोनों देशों में, नए लोकतांत्रिक

> >

ढांचे के एक हिस्से के रूप में बनाए गए स्वतंत्र जांच दल ने, स्वतंत्र भाषण के लिए नई सुरक्षा के साथ, भ्रष्टाचार के उल्लेखनीय स्तर का विवरण प्रस्तुत किया है। लोकतंत्र में, राजनेताओं और राज्य एजेंसियों को खुली अदालतों में चुनौती दी जा सकती है, ने नई अंतर्दृष्टि प्रदान की है जो कि कभी सामान्यतः एक व्यवसाय होता था।

ब्राजील में, श्रमिक दल ने स्वतंत्र अभियोजन पक्षों को नई शक्तियां दीं, राज्य जांचकर्ताओं को सबूतों के बदले में गवाहों को हल्का दंड देने की स्वीकृति दी – यह एक ऐसा परिवर्तन था जो राजनेताओं को प्रत्येक राजनीतिक प्रोत्साहन के लिए टेप की गई बातचीत का उपयोग करके फंसाने, व्यापक लावा जाटो घोटाले और बाद के घोटालों को सुलझाने की अभियोजन पक्ष की क्षमता को ध्यान में रख कर किया था। दक्षिण अफ्रीका में, उत्तर–रंगभेदी संविधान में संसद द्वारा एक नई स्वतंत्र जांच इकाई को एक अवधि के लिए नियुक्त किया गया। 2016 के उत्तरार्ध में, ''सार्वजनिक संरक्षक'', एक संवैधानिक रूप से निर्मित लोकपाल, ने राज्य की संस्थाओं और निजी कंपनियों के बीच भ्रष्ट संविदाओं की एक वेब पर सूचना दी, जिसे ''राज्य अधिकृत रिपोर्ट'' कहा गया था। सरकारी और निजी कंपनियों के बीच बड़े पैमाने पर ई–मेल के लीक होने के बाद से दक्षिण अफ्रीका के स्वतंत्र समाचार आउटलेट्स को और अधिक विवरण मिला था, जिसने उन्हें अनुमति दी कि सरकार के ठेके निजी ठेकेदारों को कैसे समृद्ध करते हैं, को जनता की समझ से बाहर निकाला जा सके।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि इस तरह के रहस्योद्घाटन ने जनसाधारण के बीच हिंसा/आक्रोश को फैलाया। दोनों देशों में विपक्षी दलों ने बड़े पैमाने पर प्रदर्शन और विरोध प्रदर्शनों का व्यापक समर्थन किया – विशेष रूप से वस्तुओं की गिरावट ने दोनों देशों को मंदी में धकेल दिया। महत्वपूर्ण यह है कि गरीब समर्थक कार्यक्रमों को बड़े पैमाने पर धन या संपत्ति पर करों के बजाय मूल्य वर्धित और आयकर के माध्यम से वित्त पोषित किया गया जैसा कि मंदी के दौरान सामने आया है, नए शहरी मध्यम वर्ग ने अपना गुस्सा सोशल मीडिया पर और सड़क पर उतारा।

एक बार लोकप्रिय नेताओं पर कलंक लगने से उत्पन्न निराशा ने राजनीति में उथल–पुथल पैदा कर दी और कोई स्पष्ट विकल्प नहीं छोड़ा। ब्राजील के दक्षिणपंथी मीडिया उद्योगपतियों ने रूढ़िवादी राजनेताओं का समर्थन किया, जिसमें से कई पर्यवेक्षकों को ''नरम तख्तापलट'' की संज्ञा दी जाती है : पूर्व श्रमिक दल (पी. टी.) के राष्ट्रपति दिलमा रोसेफ को निजी भ्रष्टाचार की वजह से दोषी नहीं ठहराया गया था, बल्कि इसलिए कि उसने मंदी के दौरान सामाजिक कल्याण खर्च को जारी रखने के लिए लेखांकन को मंजूरी दे दी थी।

ब्राजील के रूढ़िवादी राजनेता अपनी शक्ति को मजबूत करने के लिए तेजी से आगे बढे। मौजूदा राष्ट्रपति माइकल टेमर (एक दक्षिण पंथी राजनीतिज्ञ जिन्होंने दिलमा के उप–राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया, जब तक कि उसने दिलमा को सत्ता से हटाने के अभियान का नेतृत्व नहीं किया) को अवैध रिश्वत और नकदी से भरे सूटकेस के साथ वीडियो टेप सबूत के माध्यम से जोड़ कर देखा गया, लेकिन टेमर ने सिद्ध कर दिया कि अस्पष्ट कानूनी तंत्र के उपयोग के माध्यम से सत्ता में बना रहा जा सकता है। ब्राजील के सीनेट में रूढ़िवादी राजनेताओं का वर्चस्व है – जिनमें से अनेक भ्रष्टाचार के आरोपों का भी सामना करते हैं; सीनेट ने पूरी तरह से टेमर का समर्थन किया, प्रारंभिक चुनावों की मांग को खारिज करते हुए,

राष्ट्रपति तेमर के साथ लोकप्रिय पूर्व राष्ट्रपति लूल सहित ब्राजील के प्रमुख राजनैतिक दलों का नेतृत्व भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरा

अभिजात वर्ग की माफी और शक्ति की ब्राजील की पुरानी परंपराओं को पुनः प्रभावशाली बनाया।

गरीब ब्राजीलियाई लोगों के लिए, सरकार में बदलाव का मतलब दैनिक जीवन और अवसरों में वास्तविक परिवर्तन होता है। टेमर की अनिर्वाचित कैबिनेट ने पेंशन और सामाजिक अनुदान में कटौती, सामाजिक सेवाओं में मिव्ययता/कठोरता लाने, नए श्रम कानूनों को निरस्त करने और भविष्य में सामाजिक व्यय को कम करने के लिए ब्राजील की अधिकांश ''गरीब समर्थक'' नीतियों को वापस ले लिया है।

घोटालों ने ब्राजील की एक बार–दुर्जेय श्रमिक पार्टी में अव्यवस्था उत्पन्न कर दी। पूर्व राष्ट्रपति लूला डा सिल्वा, पार्टी के सबसे लोकप्रिय व्यक्तित्व को भ्रष्टाचार के आरोपों में दस साल की जेल की सजा सुनाई गई है (एक धारणा है कि वह वर्तमान में अपील कर रहे हैं); ब्राजील के एक बार सेवानिवृत्त श्रम आंदोलन सहित पार्टी के आधार को निराश और असंगठित छोड़ दिया गया।

दक्षिण अफ्रीका की राजनीतिक गतिशीलता और ब्राजील की व्याकुलता में आश्चर्यजनक रूप से समानता देखी जा सकती है। चूंकि देश की वस्तु–केन्द्रित अर्थव्यवस्था मंदी के दौर से गुजर रही है, इसलिए मध्य एवं उच्च वर्ग के करदाताओं ने सरकारी पैसों के अपव्यय पर अत्यधिक क्रोध जताय। वर्तमान ए. एन. सी. के नेता

>>

घोटाले में उलझे हुए है, इनके पास संसदीय बहुमत होने के बावजूद वर्तमान में निरंतर बने रहने के लिए मुश्किल से ''अविश्वास मत'' बचा है।

राष्ट्रपति जैकब जुमा के व्यक्तिगत भ्रष्टाचार का लिखित दस्तावेज मौजूद हैः वे लाखों सरकारी डॉलर अपनी निजी संपत्ति पर खर्च कर चुके हैं, जबकि चल रहे कोर्ट केस और बड़े पैमाने पर ईमेलों के लीक होने से यह खुलासा हुआ है कि अवैध रूप से जूमा के परिवार और घनिष्ठ मित्रों को सरकारी अनुबंध/ठेके दिए गए हैं–जिनमें सबसे ज्यादा, विशेष रूप से गुप्ता को, जो हाल के आप्रवासियों का एक कबीला है, जिसका नाम अब सरकारी निधियों को बेईमानी से खर्च करने के लिए कुख्यात है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि राजनीतिज्ञ केवल किसी एक देश में बुरे अभिनेता नहीं हैं। जैसे कि ब्राजील की कई तेल कंपनियां, निर्माण कंपनियां और बड़े कृषि व्यवसायी को व्यक्तियों और दलों को भारी रिश्वत देते हुए पकड़ा गया था, आमतौर पर आकर्षक सरकारी अनुबंधों/ठेकों के बदले कई गोरे–स्वामित्व वाले दक्षिण अफ्रीकी व्यवसाय (साथ ही जर्मन, चीनी और ब्रिटिश बहुराष्ट्रीय कंपनियों के छोटे काले–स्वामित्व वाले स्टार्ट–अप के साथ–साथ) निविदा प्रक्रिया में जोड़–तोड़ करते हुए और व्यक्तियों को रिश्वत देते हुए पाए गए।

हाल की लीक की घटना ने वैश्विक लेखा–व्यवस्था और कानूनी फर्मों के लिए काम करने वाले पेशेवरों पर सार्वजनिक ध्यान आकर्षित किया है : लाइसेंस धारक एकाउंटेंट और वकीलों द्वारा प्रमाणित अवैध सौदे ही स्वीकार्य होते हैं, कभी–कभी उन्हें वैधता देने के लिए साफ बोलियां लगाई जाती हैं। यहां तक कि जनसंपर्क फर्मों ने भी सहभागिता की है : गुप्ता संघ की ओर से काम करते हुए विशाल ब्रिटिश जनसंपर्क फर्म बेल पोटिंगर ने एक शातिर सामाजिक मीडिया अभियान का आयोजन किया जिसने (पर्याप्त व्यंगात्मक ढंग से) जूमा के समीक्षकों को ''गौरों के एकाधिकार राजधानी'' के एजेंट के रूप में पेश करने की मांग की।

निश्चित रूप से संदर्भ और इतिहास महत्व रखते हैं। जबकि ब्राजील के दक्षिण–पंथी राजनेता एक लोकतांत्रिक ढंग से चुनी गई सरकार द्वारा स्थापित सुधारों को वापस लेने में कामयाब हुए हैं, दक्षिण अफ्रीका के काले बहुसंख्यकों ने कभी भी रंगभेद की गोरे रंग की श्रेष्ठता को वापस लाने की अनुमति नहीं दी। जैसे ब्राजील में, लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित सरकारों ने गरीब परिवारों को दैनिक जीवन में बिजली और बहते पानी से लेकर नकद अनुदान और पेंशन तक उनकी पहुंच में वास्तविक सुधार किया है।

यद्यपि अगर ब्राजील के श्रमिक दल ने अपने कई मध्यम वर्ग के समर्थकों को खो दिया है, तथापि काले दक्षिण अफ्रीकी कल्याणकारी कार्यक्रमों को विस्तार देने के ए. एन. सी. के प्रयासों के प्रति काफी हद तक सहानुभूति रखते हैं। दोनों देशों में नस्लीय बहिष्कार के लंबे इतिहास रहे हैं, लेकिन दक्षिण अफ्रीका की स्पष्ट नीतियों में गोरों के वर्चस्व की मोर्चाबंदी अभी भी बढ़ रही है; राजनीतिक वफादारी अभी भी रंगभेद के खिलाफ लंबे संघर्ष को दर्शाती हैं। इसके अलावा, अनेक मध्यवर्गीय काले दक्षिण अफ्रीकी, अभी भी दक्षिण अफ्रीका के गोरे–वर्चस्व वाले निजी क्षेत्र में शीर्ष पदों से बाहर थे, जबसे ए. एन. सी. ने सत्ता संभाली उन्होंने शिक्षकों, नर्सों, पुलिसकर्मियों, नौकरशाहों या राजनेताओं के रूप में सरकारी नौकरियां प्राप्त कीं जिसने वफादारी की भावना को मजबूत किया।

फिर भी, ए. एन. सी. के प्रति वफादारी कमजोर हो सकती है, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में, जहां युवा मतदाता उच्च बेरोजगारी दर, अपर्याप्त सामाजिक सेवाओं और धन एवं अवसरों में निरंतर नस्लीय असमानताओं पर व्यापक निराशा व्यक्त करते हैं। एक करिश्माई (और भ्रष्ट) पूर्व ए. एन. सी. युवा नेता ने कई युवा मतदाताओं को परिवर्तन के केवल अस्पष्ट वादे करके अपनी नई राजनीतिक पार्टी, आर्थिक स्वतंत्रता सेनानी (ई. एफ. एफ.) की ओर आकर्षित किया। यदि जूमा के अपने स्थान पर बने रहने की स्थिति में, ए. एन. सी. अगले चुनाव में अपने संसदीय बहुमत को खो सकता है, और निरंकुश–लोकवादी दल ई. एफ. एफ. को सत्ता हासिल हो सकती हैं।

आगे क्या होगा? दोनों देशों में, एक लोकतंत्र–विरोधी आंदोलन के खतरे को महसूस किया जा सकता है – ट्रम्प के चुनाव से यह खतरा स्पष्ट रूप से बढ़ गया है। 1990 के प्रारम्भ से ही, दोनों देशों ब्राजील एवं दक्षिण अफ्रीका के नागरिकों ने कमजोर लोकतंत्रों का समर्थन और रक्षा करने के लिए शक्तिशाली सहयोगियों, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका पर भरोसा किया। लेकिन ट्रम्प के शासन कल के तहत, व्हाईट हाउस से आने वाली चुप्पी ने वैश्विक पूर्वाभास की भावना को बढ़ावा दिया है : क्या लोकतांत्रिक लाभों को वापस लाया जा सकता है? सैन्य अधिग्रहण के बिना भी, यहां तक कि ब्राजील की वर्तमान सरकार एक निर्वाचित सरकार द्वारा स्थापित सामाजिक नागरिकता अधिकारों को समाप्त कर रही है; दक्षिण अफ्रीका में गोरों के वर्चस्व की वापसी को देखने की संभावना नहीं है, परन्तु निरंकुश–लोकवाद का खतरा बहुत वास्तविक लगता है। ■

सीधा संपर्क करे : गे डब्ल्यू. सीडमन <gseidman@wisc.edu>

> जांच के दायरे में अर्जेन्टीना

जुआन इग्नेसियो पिओवानी, ला प्लाता राष्ट्रीय विश्वविद्यालय एवं सदस्य आई. एस. ए. भविष्य का शोध की शोध समिति (आर. सी. 07) और तर्क एवं पद्धतिशास्त्र की शोध समिति (आर. सी. 33)

कोडेसोक के अधिकारियों और पिसाक के निदेशक, जुआन पियोवानी ने 2017 में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री से कार्यक्रम के भविष्य के बारे में चर्चा करने के लिए भेंट की। विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा चित्र।

अर्जेन्टीना के वैज्ञानिक समुदाय द्वारा नव स्थापित विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के जोशभरे स्वागत के कुछ ही समय पश्चात, मंत्री, लिनो बरानाओ नाम के प्रसिद्ध रसायनज्ञ ने अपना प्रथम गहन साक्षात्कार दिया। पजीना 12 समाचार पत्र से बात करते हुए, बरानाओ ने वैज्ञानिक शोध कैसे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ा सकता है, के बारे में बताया और साफ्टवेयर विकास, नेनोटेक्नोलोजी और जैव प्रौद्योगिकी को सहयोग देने की अपनी योजना का वर्णन किया। समाज विज्ञानों की भूमिका के बारे में, बरानाओ ने स्वीकार किया कि उन्हें सम्मिलित करना चाहिए, परन्तु, समाज विज्ञानों के ज्ञान की धर्मशास्त्र से तुलना कर उन्होंने जोर दिया कि एक अतिवादी पद्धतिशास्त्रीय परिवर्तन ही समाज विज्ञानों को सही मायने में वैज्ञानिक बना सकता है।

यह कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि बरानाओं की टिप्पणियों ने समाज वैज्ञानिकों के मध्य कड़वाहट पैदा की और काउंसिल ऑफ डीन्स ऑफ फैकल्टीस ऑफ सोशल एण्ड ह्यूमन साइंसेज ने तत्काल ही मंत्री से अपने दावे को स्पष्ट करने को कहा। डीन्स ने स्पष्टीकरण मांगा, यहां तक कि एक तरह से क्षमा की मांग रखी। उसी समय, उन्होंने आमने–सामने की बातचीत की मांग की, इस आशा में कि वे बता पायेंगे कि समाज विज्ञानों ने समाज में योगदान में क्या किया है–और क्या कर सकते हैं।

आखिरकार, मंत्री ने 2009 में कोडेसोक के प्लेनरी सत्र में भाग लेना स्वीकार किया जहां उन्होंने यह घोषणा की कि वे समाज में समाज विज्ञानों को प्रदर्शित करने के लिए एक बड़े प्रोजेक्ट का समर्थन और वित्तीय सहायता करने के इच्छुक थे। यह अर्जेन्टीना के समकालीन समाज पर राष्ट्रीय शोध कार्यक्रम (पीसाक) का प्रारम्भ बिन्दु था, जो 2012 से कोडेसोक के तत्वावधान में चलाया गया। इसमें सरकारी विश्वविद्यालयों के समाज विज्ञान के 50 शिक्षक सम्मिलित हैं और इसे उच्च शिक्षा नीति सचिव (एस पी यू) और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त होती है।

पीसाक को डिजाइन करने में बड़ी चुनौतियां आई। यह शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि कोई भी एक प्रोजेक्ट वैज्ञानिक और संस्थागत उद्देश्यों की व्यापक श्रंखला को पूरा नहीं कर सकता है। इसके बजाय, एक शोध कार्यक्रम अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है, जो सहभागी विचारों के कुलक पर देश भर वरिष्ठ और युवा शोधकर्त्ताओं को एक साथ लाता है।

पीसाक के प्रारंभिक दिनों से, हमने यह स्पष्ट कर दिया कि कार्यक्रम की कोई आधारभूत महत्वकांक्षा नहीं होंगी बल्कि यह अर्जेन्टीना के सामाजिक विज्ञानों की समृद्ध परम्पराओं पर आधारित होगा जो 1983 से देश लोकतंत्र पर लौटने के बाद विस्तारित, एकजुट हुई हैं। लेकिन हमने कई कमियों को स्वीकारा : विखण्डन, प्रादेशिक एवं संस्थागत असमानता, शोध थीमों और सामाजिक प्रघटना की वैज्ञानिक व्याख्या का ''महानगरीयकरण'' करने की प्रवृत्ति, समाजशास्त्रीय ज्ञान के परिसंचरण (अकादमिक क्षेत्र के अंदर और बाहर) में कठिनाइयां और सामाजिक शोध निष्कर्षों–विशेष कर वे निष्कर्ष जो अधिक ''परिधिय'' प्रादेशिक या संस्थागत संदर्भों में निर्मित हुए के अदृश्य रहने की प्रवृत्ति।

अर्जेन्टीना के समाज विज्ञान के विकास का आलोचनात्मक आकलन अंततः हमें तीन शोध मार्गों को परिभाषित करने को ले जाता है, जिसमें दस से अधिक प्रोजेक्ट समाहित है। पीसाक को तीन आधारभूत मुद्दों के इर्द गिर्द आयोजित किया गया। बेशक, मुख्य उद्देश्य समकालीन समाज का बहु वैषयिक दृष्टि से व्यापक वर्णन तैयार करना है, जो सैद्धान्तिक रूप से सूचित और अनुभवजन्य धरातल पर टिका है। लेकिन हमने उन संस्थागत और वैज्ञानिक परिस्थितियों जिनके अन्तर्गत देश के समाज विज्ञानों ने ज्ञान का निर्माण किया, को जांचने और पिछले शोध से उत्पन्न अर्जेन्टीनी समाज की पहले से मौजूद समझ को व्यवस्थित रूप से संकलित करने का अवसर भी लिया।

दिलचस्प बात यह है कि यह स्कीम माइकल बुरावे के चार प्रकार के समाजशास्त्रीय श्रम : विवेचनात्मक, पेशेवर, नीतिगत और सार्वजनिक के भीतर भी फिट होती प्रतीत होती है। पीसाक विवेचनात्मक समाजशास्त्र से यहां तक सम्बन्धित है कि अर्जेन्टीना में सामाजिक अनुसंधान कैसे किया गया, उसकी नींव और प्रभावशाली सैद्धान्तिक और व्यवहारिक आधार का अनावरण करना, ज्ञान निर्माण

>>

के प्राधान्य मॉडलों से उसका लगाव या उससे पृथक जाना एवं इत्यादि से। लेकिन पीसाक पेशेवर समाजशास्त्र के बारे में भी है : यह अनुभवजन्य अनुसंधान प्रश्नों को व्यापक रूप से मान्य तरीकों से संबोधित करता है और अकादमिक दर्शकों की तरफ निर्देशित वैज्ञानिक पत्रों में निष्कर्षों का प्रकाशन करता है। इसी समय, पीसाक आत्म–अभिमुख अकादमिक दुनिया के परे जाने के लिए भी प्रतिबद्ध है : पीसाक के कई अनुसंधान प्रश्न नीति निर्माताओं की प्राथमिकताओं को प्रतिबिंबित करते हैं। वे सार्वजनिक निकायों और सामाजिक आंदोलनों के साथ घनिष्ठता से कार्य कर विशेषज्ञ ज्ञान प्रदान करते हैं और सामाजिक नीतियों को प्रभावित करते हैं। अंत में, पीसाक अपनी उच्च प्रोफाइल का लाभ उठाते हुए सार्वजनिक बहस में, समाज की सामान्य बोध व्याख्या का विरोध कर, हस्तक्षेप करते हैं और मीडिया में अक्सर पुनः उत्पन्न सामाजिक स्टिरियोटाइपस की निन्दा करते हैं।

चूंकि हम ज्ञान उत्पादन की स्थितियों के लिए भी चिंतित है, हमने अपना ध्यान राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान व्यवस्था की तरफ किया और वैज्ञानिक एवं उच्च शिक्षण संस्थानों का भौगोलिक वितरण, शोधकर्त्ताओं के अकादमिक प्रक्षेप–पथ, शोध एजेंडा, वैज्ञानिक प्रकाशन और इत्यादि पर फोकस किया है। वैश्विक संवाद के इस अंक में फर्नांडा बीगल का लेख इस प्रोजेक्ट को दिखाता है जो अर्जेन्टीना में ज्ञान उत्पादन (एवं ज्ञान परिसंचरण) की विपरीत शैलियों का विश्लेषण करता है। ऐसा वह प्रभावी अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक नियमों के अनुरूप कार्य करने वाले वैज्ञानिक और वे जो अधिक अंतर्जात एजेंडा से जुड़े हुए है, के मध्य अंतर को उजागर करके करता है।

पिछले शोध निष्कर्षों को व्यवस्थित करने के क्रम में, हमने छः व्यापक विषयों पर ध्यान केन्द्रित करने का निर्णय किया : सामाजिक संरचना; जीवन स्थितियों; राज्य; सरकार एवं लोक प्रशासन; नागरिकता, सामाजिक लामबंदी एवं सामाजिक संघर्ष; सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता; सांस्कृतिक उपभोग एवं परिपाटी। प्रत्येक विषय एक बहु–संस्थानिक दल द्वारा संबोधित किया गया जिसने प्रासंगिक अकादमिक प्रकाशनों का विश्लेषण कर व्यवस्थित किया एवं एक तरह की साहित्य–समीक्षा का निर्माण किया; ये रिपोर्ट अब उपलब्ध हैं और एक मुक्त–एक्सेस संस्करण को www.clacso.org.ar/libreria-latinoamericana पर क्लासको की वर्चुअल लाइब्रेरी से और पीसाक की वेबसाइट http://pisac.mincyt.gob.ar से डाउनलोड किया जा सकता है। वैश्विक संवाद के इस अंक में एलेजैंड्रो ग्रिमसन का लेख दर्शाता है कि शोध निष्कर्षों ने कैसे अर्जेन्टीना की सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से सजातीय आधिकारिक छवि को चुनौती दी है। जैसा कि वे दिखाते हैं, सामाजिक शोध ने हमारे विविधता पूर्ण समाज की अधिक सटीक छवि को विकसित करने में और विभिन्न सामाजिक अल्पसंख्यकों के संघर्ष को प्रत्यक्ष दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अंत में, समकालीन अर्जेन्टीना के बारे में एक अधिक विस्तृत वृत्तान्त को अग्रेषित करने हेतु, हमने 2000 से अधिक आबादी वाले 339 नगरों में क्षेत्रीय कार्य कर तीन राष्ट्रीय सर्वेक्षण करने का निर्णय लिया। एक अध्ययन ने सामाजिक संरचना एवं जीवन स्थितियों पर ध्यान केंद्रित किया; दूसरे ने सामाजिक सम्बन्धों को संबोधित किया; और तीसरे ने मूल्यों, प्रवृत्तियों और अभिवेदन पर फोकस किया। हमने इस पद्धतिशास्त्रीय दृष्टिकोण को कई कारणों से चुना। एक तरफ, शोध वित्तपोषण ने बड़े पैमाने के प्रोजेक्ट को हतोत्साहित कर, विभिन्न संस्थानाओं और एवं शोध दलों में फैला कर सूक्ष्म–अनुदान को प्राथमिकता दी है। दूसरी तरफ, गुणात्मक उपागम पर अत्यधिक झुकाव का अर्थ है कि देश के समाज वैज्ञानिकों ने मात्रात्मक एवं संरचनात्मक विश्लेषण को लगभग छोड़ दिया है। चूंकि हमारे (अल्प वित्तपोषित) गुणात्मक शोध ने काफी सीमित सामाजिक परिदृश्यों का अध्ययन किया है, अक्सर प्रमुख नगरीय क्षेत्रों में, अर्जेन्टीनी समाज के अभी तक के वर्तमान चित्रण ने स्पष्ट क्षेत्रीय (एवं अन्य) विविधताओं को अनदेखा करने की प्रवृत्ति पाई गई है।

वैश्विक संवाद के इस अंक में, अगस्तिन साल्विया और बेरेनिस रूबियो अर्जेन्टीना के असमानता और गतिशीलता की संरचना और विशिष्ट सामाजिक समूहों की जीवन स्थितियों पर जोर देते हुए पहले सर्वेक्षण की चर्चा की है। गेब्रियल केसलर सामाजिक सम्बन्धों पर सर्वेक्षण के वैज्ञानिक उद्देश्य और तर्क की चर्चा करते हैं जो सामाजिक पूंजी, सुजनता, आत्म–पहचान और सामाजिक बाधाओं, विवादास्पद सामाजिक संबंधों, भागीदारी एवं सामूहिक कार्यवाही – विषय जो राष्ट्रीय सामाजिक स्तर पर अधिकतर जांच से दूर रहते है, को सम्मिलित करते हैं।

अब जब पीसाक के निष्कर्ष प्रकाशित होने लगे हैं, अर्जेन्टीना के सामाजिक विज्ञान दो नई चुनौतियों का सामना करते हैं। एक तरफ हम एक नये राजनीतिक चक्र के मध्य में है जो नवउदारवादी नीतियों की तरफ झुकाव (पुनः) से चिन्हित होता है। अन्य राष्ट्रों की तरह, इसने शोध निधि में कटौती को जन्म दिया है। अब तक, नये अधिकारियों ने पीसाक से जुड़े पहलों को समर्थन दिया है और नये फंड प्रदान किये गये हैं – यद्यपि इस बात की चिंता है कि क्या पीसाक का विज्ञान एवं प्रौद्योगिक मंत्रालय के अन्तर्गत संस्थानीकरण हो रहा है और क्या यह वृहद–स्तरीय सामाजिक शोध को जारी रखेगा।

दूसरी तरफ, हम सच के विमर्श, विशेष तौर पर सामाजिक मीडिया, में उभार देख रहे हैं जो समाज विज्ञानों को वैचारिक, बेकार और अतः सार्वजनिक वित्तपोषण के अयोग्य के रूप में खारिज करते हैं। इसी तरह जब उच्च स्तरीय सरकारी अधिकारी बार बार ''व्यावहारिक'' शोध एवं 'उपयोगी' या ''दस्तावेजी'' ज्ञान के पक्ष में बोलते हैं, समाज विज्ञानों के मनोरथ की मदद नहीं होती है।

यद्यपि, पीसाक के प्रारंभिक परिणामों को सामाजिक एवं संस्थानिक कर्ताओं के व्यापक स्पेक्ट्रम समाज वैज्ञानिक, विश्वविद्यालयों, सार्वजनिक संगठनों, सामाजिक आंदोलनों, पत्रकारों, राजनेताओं एवं नीति निर्माताओं से मजबूत समर्थन प्राप्त हो रहा है। सभी असफलताओं के बावजूद, पीसाक परिणामों के प्रति उत्साही स्वागत हमें अर्जेन्टीना में समाजशास्त्रीय शोध के भविष्य के बारे में काफी आशावादी बनाता है। ■

सीधा संपर्क करे : जुआन इग्नेसियो पिओवानी <juan.piovani@presi.unlp.edu.ar>

> अर्जेन्टीना के सामाजिक विज्ञानों का मानचित्रण

फर्नान्डा बीगल, क्यूओ राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, अर्जेंटीना, और समाजशास्त्र के इतिहास पर आई. एस. ए. शोध समिति (आर. सी. 08) के सदस्य

ब्यूनोस आयर्स में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय और राष्ट्रीय वैज्ञानिक और तकनीकी शोध संघ। जुआन इग्नासियो पिओवानी द्वारा फोटो।

पिछले 40 सालों में, एक प्रकाशन प्रणाली के माध्यम से, जिसने धीरे धीरे एक ''सार्वभौमिक'' भाषा और लेखन शैली की स्थापना की है, और एक मुख्यधारा सर्किट के माध्यम से, जिसने कुछ मुठ्ठीभर उत्कृष्टता के केंद्रों और कुछ विषयों के लिये प्रतिष्ठा का निर्माण किया है, उन सभी वैज्ञानिक समुदायों को किनारों की ओर धकेलते हुये जिनका कार्य वैज्ञानिक सूचना संस्थान (आई. एस. आई., अब क्लेरीवेट एनालिटिक्स/वैब ऑफ साइंसेज) से जुडी हुयी पत्रिकाओं में दिखायी नहीं दिया था, से विज्ञान के भूगोल का खाका रि से खींचा गया है।

हालांकि, लैटिन अमेरिकन वैज्ञानिक प्रकाशनों की तरह खुली पहुंच के आंदोलन और क्षेत्रीय सर्किटों सहित, वैकल्पिक अकादमिक नेटवर्कों के निर्माण पर अधिकाधिक ध्यान दिया जा रहा है। 1960 के दशक से, लैटिन अमेरिकन सामाजिक विज्ञान प्रतिष्ठा–निर्माण के ''क्षेत्रीयकरण''– क्षेत्रीय केंद्रों के हस्तक्षेप के साथ– और वैज्ञानिक नीतियों के ''राष्ट्रीयकरण'' से गुजर चुके हैं।

इन अंतर्राष्ट्रीय सर्किटों के बाहर, स्थानीय सर्किट कई गैर–अनुक्रमित पत्रिकाओं को शामिल करते हैं जो कि केवल मुद्रित प्रारूप में ही दिखायी देती हैं। इन पत्रिकाओं का प्रसार सीमित हैं, परंतु वे गैर–अंतर्राष्ट्रीयकृत अकादमिक क्षेत्रों की सततता को दर्शाते हैं। इन सीमांत वैज्ञानिक क्षेत्रों की गत्यात्मकता क्या है? मैं तर्क देता हूं कि ये विभिन्न बौद्धिक सर्किट ध्रुवीय उन्मुखतायें बनाते हैं, जिसका परिणाम एक बाहर की ओर देखते हुये और दूसरे अंदर की ओर देखते हुये एक ''द्विमुखी'' अकादमिक अभिजात होता है।

मूल्यांकन और अकादमिक प्रकाशन के मध्य बढते हुये घनिष्ठ संबंध ने वैधता के विविध सिद्धांतों को बढावा दिया है जैसे कि विभिन्न पहचान के सर्किटों (सभी वैध, परंतु विभिन्न पुरस्कारों के साथ) ने राष्ट्रीय क्षेत्र पार कर लिये हैं। वैश्विक अकादमिक व्यवस्था में बौद्धिक सर्किटों के बढते खंडीकरण–और सीमांत के वैज्ञानिकों की स्थिति पर उनके प्रभाव– केवल अंग्रेजी भाषा की सर्वोच्चता का नतीजा नहीं है; ये सर्किट प्रतिस्पर्धात्मक मूल्यांकन संस्कृति और संरचनात्मक असममितताओं से प्रेरित है। एक त्रिस्तरीय पदानुक्रमित सिद्धांत – प्रकाशन भाषा, संस्थागत संबद्धता और संकाय पर आधारित – अकादमिक असमानताओं को आकार देता है।

>>

उत्पादन शैली और प्रसारण के विश्लेषण के लिये अर्जेंटीना एक दिलचस्प उदाहरण है। हाल के वर्षों में, सार्वजनिक वित्तपोषण, विभिन्न पीएचडी कार्यक्रमों के एकीकरण, और अर्जेंटीना की फैलोशिप योजनाओं और शोध नियुक्तियों में एक स्पष्ट ''राष्ट्रवादी'' दवाब में भारी वृद्धि हुई है। बीते दशक में 2003 में 3694 से लेकर 2015 में 9236 तक, पूर्णकालिक शोधकर्ताओं की संख्या में तीन गुना वृद्धि हुई है। इसी दौरान, हालांकि, विश्व अकादमिक व्यवस्था की प्रमुख उत्पादन शैली से वाकिफ अर्जेंटीना के वैज्ञानिकों और वे जो अंतःविकसित एजेंडा के साथ हैं, के बीच दूरी बढ गयी है।

प्रकाशनों का अनुक्रमण मान्यता के संदर्भ में भिन्न भिन्न पुरस्कारों को परिभाषित करता है। राष्ट्रीय अनुसंधान एजेंसी, कोनीसेट, अंतर्राष्ट्रीय (मुख्यधारा) पत्रिकाओं में प्रकाशन, वैब ऑफ साइंसेज या स्कोपस में अनुक्रमणित अत्यधिक अहम है। हालांकि, कोनीसेट में सामाजिक विज्ञान और मानविकी और कृषि विज्ञान सीयेलो या लेटिनडेक्स में अनुक्रमणित लैटिन अमेरिकन पत्रिकाओं में प्रकाशनों को महत्ता देते है। इस मूल्यांकन संस्कृति में, गुणवत्ता और मौलिकता का आकलन अनुक्रमणिकता, इंपेक्ट फैक्टर और एच–इंडेक्स के पक्ष में बदल गया है– सभी बिबलियोग्राफीकल डेटा जिसका गुणवत्ता से संबंध बहस का विषय है।

राष्ट्रीय और स्थानीय, गैर अनुक्रमित पत्रिकाओं में प्रकाशन को आमतौर पर उनके लिये कैरियर निर्माण के रूप में माना जाता हैं जो गैर–महानगरीय विश्वविद्यालयों में शिक्षण कर रहे होते हैं। अर्जेंटीना के उच्च शिक्षा व्यवस्था में, विश्वविद्यालय स्वायत्तता और राजनीतिकरण की मजबूत परंपरा से लंबे समय से चिन्हित, स्थानीय सर्किट की मान्यता एक बहुत अधिक गतिशील जगह रही है, अंतर्राष्ट्रीय मानकों से बहुत दूर, मुख्यतः कागज पर मुद्रित और स्थानीय रूप से संपादित सैंकडों पत्रिकायें, जहां स्थानीय विद्वान अपना काम प्रकाशित करते हैं। क्या ये कार्य बुरी गुणवत्ता हैं? यह मानते हुये कि इन व्यापक स्थानीय सर्किटों का अभी तक अध्ययन नहीं किया गया है, हम इनके वैज्ञानिक मूल्य का अनुमान नहीं लगा सकते, परंतु यह स्थानीय उन्मुखन साफ तौर पर कई संस्थानों में अभी भी प्रचलित है, मुख्यतः सामाजिक विज्ञानों में।

इन विविध (यहां तक कि परस्पर विरोधी) मूल्यांकन संस्कृतियों के साथ, स्थानीय उन्मुखन के अर्जेंटीना के सामाजिक वैज्ञानिक और वे जो एक अंतर्राष्ट्रीय एजेंडे का अनुसरण करते हैं बेचैनी में एक साथ रहते हैं, राष्ट्रीय शोध कैरियर के लिये दो विभिन्न राहों के साथ (एक कोनीसेट में और दूसरी राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में) देश भर के 50 राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में शिक्षक कार्यकालों के लिये विभिन्न नियमों के साथ।

> पांच ''कैरियर के सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन''

सामाजिक वैज्ञानिकों के बीच जो कोनीसेट में शोधकर्ता हैं, जहां अंतर्राष्ट्रीय मानक महत्वपूर्ण हैं, प्रकाशनों की क्या विशेषतायें हैं? हमने 4842 व्यक्तियों (7906 में से) के एक प्रादर्श का अध्ययन किया जिन्होंने पदोन्नति के लिये आवेदन किया था और उन्हें अपने पांच ''कैरियर के सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन'' चुनने के लिये कहा गया। प्रादर्श में आधे से अधिक 2015 से कोनीसेटी के सक्रिय शोधकर्ता शामिल थे, और यह संकाय, आयु और सहायक, अनुबंधक, स्वतंत्र प्रिंसीपल और वरिष्ठ संकाय सदस्यों को शामिल करते हुये पदानुक्रम के संदर्भ में संतुलित है। यह संस्थान साल में एक बार पदोन्नति के लिये आवेदन स्वीकार करता है और आवेदन स्वैच्छिक होते हैं।

महत्वपूर्ण रूप से, आवेदक पांच ''कैरियर के सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन'' चुनते हैं, इस बात पर आधारित जो वे सोचते है कि मूल्यांकन समिति को सबसे अधिक प्रभावित करेगी। इस प्रकार, उनके चुनाव संस्था के अंदर मूल्यांकन मानदंडों पर एकमतता पर अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। कई मामलों में, मुख्यतः सामाजिक विज्ञानों और मानविकी (SSH) में, ये चयनित प्रकाशन शोधकर्ता के सी. वी. पर अन्य प्रकाशनों पर प्रकाश नहीं डालते हैं।

प्रादर्श के अंतर्गत जांच के लिये प्रस्तुत प्रकाशनों के डेटाबेस में शीर्षक, प्रकार (पुस्तक, पुस्तक अध्याय, लेख, सम्मेलन पत्र, तकनीकी रिपोर्ट) और भाषा को सारणीकृत करते हुये 23852 इकाईयां शामिल है। पांच ''कैरियर के सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन'' की भाषा बेहद एकरूप है : अंग्रेजी में कार्य का 5 में से 4.02 (पुरूषों के बीच 4.13 और महिलाओं के बीच 3.91) का औसत है। सबसे पुरानी पीढी (65–85 वर्ष की आयु) के लिये औसत थोडा कम है परंतु अंतर बहुत कम है, यह दर्शाते हुये कि अर्जेंटीना में अंग्रेजी में लेखन कई दशकों से चल रहा है। भाषा की प्रभुता के संदर्भ में, क्षेत्रों के अवलोकन से पता चलता है कि अंग्रेजी में प्रकाशनों की भारी संख्या ''ठोस'' विज्ञानों (औसत 4.77) में है, जबकि सामाजिक विज्ञानों और मानविकी में औसत 5 में से 1.23 है।

प्रकाशन के प्रकार थोडी अधिक विविधता प्रदर्शित करते हैं, पुस्तक और पुस्तक अध्याय वृद्ध विद्वानों, और सामाजिक वैज्ञानिकों के बीच अधिक प्रचलित है। सबसे युवा समूह (31–44 वर्ष की आयु) के, तब भी, पांच ''कैरियर के सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन'' में से 4.4 लेख हैं जो इसका सबूत हैं कि ''लेख'' सभी वैज्ञानिक क्षेत्रों में अधिकाधिक प्रभावी हो रहे हैं। सामाजिक विज्ञानों और मानविकी के शोधकर्ताओं के लिये लेखों की संख्या का औसत 5 में से 2.8 है। दुर्भाग्य से, अकादमिक पुस्तकों के प्रकाशन पर कोई स्थानीय या राष्ट्रीय अध्ययन नहीं हैं।

दिलचस्प रूप से, प्रादर्श में शामिल 941 सामाजिक विज्ञानों और मानविकी शोधकर्ताओं में से अधिकतर राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों या संयुक्त केंद्रों जहां कोनिसेट राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग करता है जैसे कि ब्यूनो आयर्स विश्वविद्यालयों (यू. बी. ए.) में काम करते हैं। उनकी शिक्षा के संदर्भ में, 33.7 प्रतिशत ने अपनी डॉक्टरेट यू. बी. ए. से ली, प्रादर्श औसत से काफी अधिक, और 43.5 प्रतिशत ने अपनी स्नातक यू. बी. ए. से प्राप्त की, प्रादर्श औसत से काफी अधिक। लिंग के संदर्भ में, 56 प्रतिशत सामाजिक विज्ञानों और

चित्र 1 : वैज्ञानिक क्षेत्र के संदर्भ में 2005 में पांच ''कैरियर के सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन'' (n = 23852)
भाषा और प्रकाशन के प्रकार के संदर्भ में औसत (5 में से)[1]

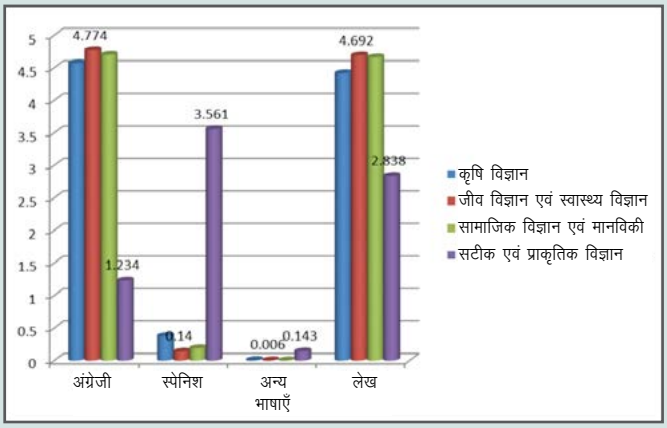

> >

मानविकी शोधकर्ता महिलायें हैं और औसत में, 5 में से 1.14 उनके ''कैरियर के सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन'' अंग्रेजी में हैं। पुरूषों के लिये, अंग्रेजी में कार्यों का औसत 5 में से 1.35 पर थोडा सा ज्यादा है। उन संकायों की तुलना करने पर जिन्हें ''नारीकरण कर दिया'' गया माना जाता है, वहां पर प्रयोग की गयी भाषा में बहुत अधिक भिन्नता है, इसलिये यहां पर लिंग भी एक निर्णायक कारक नहीं है। इस प्रकार, उदाहरण के लिये, साहित्य में प्रकाशन प्रायः स्पैनिश में दिखायी देते हैं, वहीं मनोविज्ञान में प्रकाशन अधिकतर अंग्रेजी में दिखायी देते हैं।

हम इन शोधकर्ताओं द्वारा सूचीबद्ध ''कैरियर के सर्वश्रेष्ठ'' प्रकाशनों के परिसंचरण से क्या सीख सकते हैं? जैसा कि चित्र 2 में देखा जा सकता है, प्रकाशनों का 83 प्रतिशत मुख्यधारा सर्किटों में प्रसारित होता है। बाकी 17 प्रतिशत प्रमुख सर्किट के बाहर सामाजिक विज्ञानों और मानविकी शोधकर्ताओं (76 प्रतिशत) से संबंधित या अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में प्रस्तुत पेपर्स और बौद्धिक संपदा रिकार्ड (24 प्रतिशत) हैं।

कोनिसेट (CONICET) में सामाजिक विज्ञान मौलिकता केबजाय अनुक्रमण के आधार लेखों की गुणवत्ता के मूल्यांकन के सामान्य

चित्र 2 : सर्किटों के संदर्भ में पांच कैरियर के सर्वश्रेष्ठ प्रकाशनों का औसत (n = 7071)

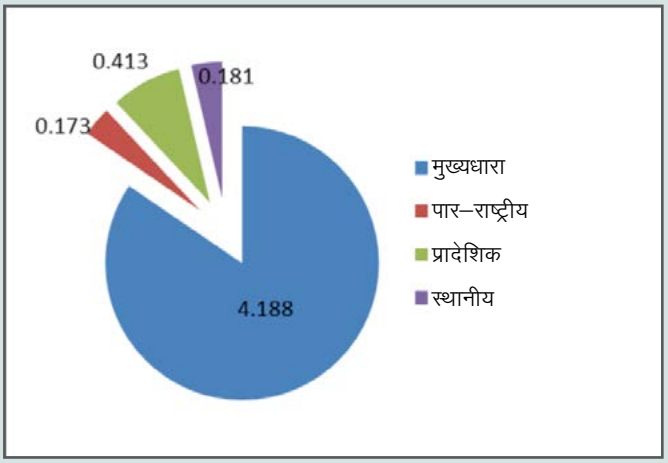

प्रारूप उपयोग करते हैं। हालांकि यह क्षेत्र मुख्यधारा सर्किट पर कम प्रकाशन प्रस्तत करता है, स्थानीय अनुक्रम को दी गयी प्राथमिकताओं देखी जा सकती है। साईलो, लेटिनडेक्स और अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था जेसे डोआज और डायलनेट कोष हैं जहां सामाजिक विज्ञानों और मानविकी के अधिकतर प्रकाशन अनुक्रमित हैं। अर्जेंटीना में प्रकाशन कुल के 7 प्रतिशत से कम हैं और इनमें से अधिकांश प्रकाशन अनुक्रमित हैं। अर्जेंटीना में प्रकाशन कुल के 7 प्रतिशत से कम हैं और इनमें से अधिकांश सामाजिक विज्ञानों और मानविकी से संबंधित हैं। इन संकायों की प्रभावी प्रवृत्ति प्रमुखतः लेटिनडेक्स में अनुक्रमणित लैटिन अमेरिकन पत्रिकाओं में स्पैनिश और पुर्तगाली में प्रकाशित करने की है।

अपने पूर्ण सी. वी. में, अधिकतर सामाजिक विज्ञानों और मानविकी शोधकर्ता अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशनों से प्रमुख रूप से अधिक स्थानीय प्रकाशन दिखाते हैं, परंतु उनके ''कैरियर के सर्वश्रेष्ठ'' प्रकाशनों का यह अध्ययन कोनिसेट में बढती हुयी एकमतता पर अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि वैज्ञानिक और प्रतिष्ठित कार्य क्या है– हालांकि यह अध्ययन यह नहीं सुझाता है कि ये विश्वास इन विद्वानों के कैरियर की प्रक्षेपिता का पूरे तरह से निर्धारण करते हैं। कोनिसेट का पूरे देश भर में अत्यधिक विस्तार हो चुका है, और इस प्रकार पूरे अर्जेंटीना के अकादमिक समुदाय में– यद्यपि विभिन्न डिग्री में– अंतर्राष्ट्रीयकृत मानदंड दिखायी देता है। परंतु अर्जेंटीना के अकादमिक समुदाय में, वैद्यता के सिद्धांतों और मान्यता के सर्किटों की विद्यमानता और विविधता के साथ, प्रतिष्ठा का वितरण एक जटिल प्रक्रिया है। ■

'इन दोनों चित्रों के आंकड़े निम्न में पाये जा सकते हैं : अलातास एवं सिन्हा केरकोफ (सम्पादित) सामाजिक विज्ञानों में अकादमिक निर्भरता : संरचनात्मक यथार्थ एवं बौद्धिक चुनौतियां, नई दिल्ली : मनोहर, पृष्ठ संख्या 183–212 में। बिजेल एफ. (2010) चिले में सामाजिक विज्ञान (1957–1973); (सम्पादित) अकादमिक–निर्माण की स्वायत्त प्रक्रिया के लिए लेबोरेट्री; एवं बिजेल एफ. (2016) एरियल एवं कलिबन में मध्य परिधीय वैज्ञानिक। अर्जेंटीना में संस्थानिक पूंजी एवं पहचान के सर्किट। कोनिसेट में शोधार्थियों के ''कैरियर के सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन'' दादोस 59(4): 215–255।

सीधा संपर्क करे : फर्नान्डा बीगल <mfbeigel@mendoza-conicet.gob.ar>

> अर्जेन्टीना में सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता

अलेजेन्ड्रों ग्रिमसन, सैन मार्टिन राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, अर्जेंटीना

बोलिवियाई आप्रवासी विविधता का जश्न मनाते और साथ ही ब्यूनोस आयर्स गे प्राइड 2016 के दौरान आप्रवासियों के विरूद्ध हुए नस्लवाद का प्रतिरोध करते हुए। फेडेरिको कारूसो द्वारा फोटो।

हर देश सामाजिक सांस्कृतिक मामलों में सामान्यतः लगने वाली स्वयं की छवि से अधिक विषमजातिय होता है, परंतु अर्जेंटीना शायद एक नितान्त मामला है। अधिकांश अर्जेंटीना के लोगों को लगता है कि ब्राजील में अर्जेंटीना से अधिक देशज लोग हैं; परंतु वास्तव में, 2010 राष्ट्रीय जनगणना के अनुसार, जहां ब्राजील में 850000 लोग शामिल हैं जिन्होंने स्वयं की स्वदेशी के रूप में पहचान की, वहीं अर्जेंटीना में 950000 स्व–चिन्हित स्वदेशी नागरिक शामिल थे–आंकड़े जो अर्जेंटीना की जनसंख्या के 2.4 प्रतिशत की तुलना में ब्राजील की जनसंख्या के 0.4 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अर्जेंटीना में, राज्य ने दक्षिण अमेरिका में एक यूरोपियन समाज के रूप में एक स्वयं की छवि का निर्माण किया हुआ है, जैसे कि पूरा देश (पृथ्वी पर आठवां सबसे बडा) ब्यूनोस आयर्स नगर की एक प्रतिकृति हो। परंतु हाल ही के दशकों में, यह तस्वीर संकट में रही है। स्वदेशी आंदोलनों की मांगे, नये विश्वबंधुत्व, राज्य की कमजोरियों और कम एकरूपीय परिप्रेक्ष्यों की धीरे धीरे स्वीकृति, सामाजिक विज्ञानों के व्यापक होते शोधों से जा मिलती हैं जो देश की विशिष्ट यूरोपियन, श्वेत और भौगोलिक रूप से केंद्रीयता के रूप में स्वयं की छवि को चुनौती देते हैं। परंतु शोधकर्ता उस विविधता को नवउदार बहुसंस्कृतिवाद से जुड़े वैश्विक प्रारूपों में संकुचित करने की कोशिश से भी बचते हैं।

> पारंपरिक विवरण : यूरोपियनवाद और मैल्टिंग पॉट

अर्जेंटीना को ''मैल्टिंग पॉट'' के रूप में वर्णित करते हुये विवरण राज्य के राष्ट्रवादी परियोजना से पैदा होते है। इस विवरण के अनुसार, अर्जेंटीना के लोग ''जहाजों से उतरे'' (स्पैनिश, इटालियन, पोलिश, आदि)– एक दृष्टि जो जनसंख्या के प्रचलित श्वेत यूरोपियन चरित्र को सीमित और उसका सामान्यीकरण करती है। एक केंद्रिय

> >

और पोर्टिनो (ब्यूनो आयर्स के निवासी) दृष्टिकोण को विशेषाधिकार देते हुये, प्रदेश के स्थानिक संगठन से जुड़े हुये एक सर्वोच्चता वाली दृष्टि के एक भाग के रूप में, यह स्वदेशी और एफ्रो–वंशज लोगों की स्पष्ट अनुपस्थिति से पूरित होता है।

जैसा कि ब्राजील में, अर्जेंटीना का कल्पित मैल्टिंग पॉट स्वदेशी लोगों और एफ्रो–अर्जेंटीनियन को शामिल नहीं करता है, परंतु केवल यूरोपियन राष्ट्रों से पैदा होने वाली ''नस्लों'' को। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध के बाद से, अर्जेंटीना राज्य का उद्देश्य आप्रवासन और आर्थिक प्रगति को बढावा देकर और सार्वजनिक शिक्षा को विकसित कर एक ''सभ्य'' देश का सृजन करना था। यह परियोजना देशज जनसंख्या की सांस्कृतिक आदतों को उखाड़ने के लिये–प्रभावी परिप्रेक्ष्य से जिन्हें विकास के लिये प्रमुख रूकावट के रूप में देखा गया– यूरोपियन प्रवासियों की प्राक्कल्पनात्मक क्षमताओं पर निर्भर थी।

सामाजिक समावेश उत्पन्न करने की प्रभावी क्षमता के साथ, एक समरूपी संस्कृति वाले एक नृजातिय रूप से परिभाषित राष्ट्र का निर्माण करने के लिये सरकार का दवाब, का मतलब था कि प्रत्येक बदलाव और विशेषता को नकारात्मक रूप से देखा–या प्रत्यक्ष रूप से अदृश्यता में धकेल दिया जाना। जब तक वह समरूपीकरण परियोजना सफल रही, नृजातीयता, संस्थानों में दृढ़ता से हतोत्साहित किया गया, एक निषिद्ध राजनीतिक विषय था।

इस प्रकार अर्जेंटीना ''समानता'' को पूरी तरह से दो अलग–अलग अर्थ प्रदान करते हुये एक समझौते के आधार पर विकसित हुआ : सभी नृजातीय भेदों से बचाव या अदृश्यीकरण, और नागरिकता के वादों को प्राप्त करने के लिये एक शर्त के रूप में सांस्कृतिक एकरूपता।

इस समझौते के माध्यम से, अभिजात या शहरी मध्यम वर्ग में शामिल होने में सक्षम हर अर्जेंटीना निवासी का ''श्वेतीकरण'' हो गया; अंततः कोई भी भेदभाव से बच सकता था। हालांकि, एक अनिवार्य विभाजन ने श्रमिकों और लोकप्रिय वर्गों का अपवर्जन कर दिया, उनको गरीब ''नीग्रों'' बर्बरियों और ''आंतरिक प्रवासी'' मानते हुये– प्रमुख रूप से जब उन्होंने बड़ी राजनीतिक घटनाओं में भाग लिया। इस बर्बरता का विपरीत सभ्यता था जिसे अर्जेंटीनियन, श्वेत, यूरोपियन और शिक्षित माना गया।

लगभग 56 प्रतिशत वर्तमान जनसंख्या की कुछ स्वदेशी वंशावली है, फिर भी इसका यह मतलब नहीं हैं कि उन्हें आज स्वदेशी के रूप में पहचाना जाता है। अर्जेंटीना ने लंबे समय से क्षेत्रीय, धार्मिक और भाषायी विविधताओं की देशज उपस्थिति के साथ साथ नस्लों के संकरण से इनकार किया है, और अर्जेंटीना का अधिकतर राजनैतिक इतिहास मानकीकरण और अपवर्जन के ऐतिहासिक मैट्रिक्स से निकला है।

अर्जेंटीना का सभ्यता मॉडल कठोरता से द्विचर था, और अर्जेंटीना की द्विभक्त सामाजिक स्वछवि इतनी मजबूत रही है कि यह देश की राजनीति सहित ''दिल की आदतों'' में लगातार व्याप्त रह रही है। गोरा या काला; सभ्यता या बर्बरता; राजधानी शहर या प्रांत; परोनिस्टास (परोनिस्ट पार्टी के समर्थक) या परोनिस्ट–विरोधी।

> नस्लवाद और वर्गवाद

अर्जेंटीना ''नस्लीयों के बगैर नस्लवाद'' का उदाहरण है। एक पुराने मिथक के अनुसार : ''अर्जेंटीना में कोई नस्लवाद नहीं है.. .. क्योंकि वहां कोई ''नीग्रोस'' नहीं है।'' हालांकि वहां बहुत थोडे अफ्रीकी वंश के लोग हैं, ''नीग्रो'' या ''नीग्रो दे अल्मा'' (काली आत्मा) की अभिव्यक्ति को प्रयोग अक्सर, खारिज करते हुये, गरीबों को, झोपड़पट्टी निवासियों को, यूनियन के कर्मचारियों को, सडक प्रदर्शनकारियों का, बोका जूनियर्स फुटबाल टीम प्रशंसकों या पैरोनिस्टाज का उल्लेख करने के लिये प्रयोग किया जाता है।

फिर भी, किसी भी राजनैतिक दल ने खुले तौर पर नस्लवाद या विदेशीयों के प्रति घृणा के अभियान से वोट प्राप्त नहीं किये। सभी अर्जेंटीनियन नस्लवादी नहीं हैं, और ना ही सभी की नस्लवादी अभिवृत्ति समान है; पडोसी देशों के प्रवासियों के खिलाफ नस्लवाद, प्रांतों (''अल इंटिरियर'') से आये काले प्रवासियों के खिलाफ, अफ्रो–वंशियों (विशेष रूप से सेनेगल से नये पहुंचे) के खिलाफ, या एशियन प्रवासियों और अन्य समूहों के खिलाफ नस्लवाद से भिन्न है। इसके अलावा, नस्लवाद अक्सर वर्गवाद को काटता है, जैसा कि ''नीग्रो'' अभिव्यक्ति अक्सर ''गरीब'' के पयार्यवाची के रूप में कार्य करती है।

सामाजिक अध्ययन दिखाते हैं कि भले ही नस्लवाद और वर्गवाद ऊंचे रहन सहन वाले श्वेत लोगों के प्रभुत्व वाले क्षेत्रों में केंद्रित होने की प्रवृत्ति रखते हैं, ये अभिवृत्तियां लोकप्रिय वर्गों की भाषा में समाहित हो जाती हैं। इससे भी बदतर, शब्द ''नीग्रो'' रोजमर्रा के जीवन में मित्रों, बच्चों और माता–पिता या जोड़ों के लिये समीपता और प्यार अभिव्यक्त करने के लिये भी उपयोग किया जाता है। ''चे, नीग्रो'' एक प्यार भरी अभिव्यक्ति है जो एक प्यारे दोस्त को संबोधित करते हुये अनौपचारिक रूप से प्रयोग किया जाती है।

> क्षेत्रीय, भाषायी और धार्मिक विविधतायें

अर्जेंटीना का समाज विश्वासों, प्रथाओं और पहचानों में गहराई से विविधतापूर्ण है। हालांकि, एकरूपता वाली अनुदेशात्मक और प्रधानात्मक संस्कृति ना केवल देश की विभिन्न क्षेत्रीय और प्रांतीय स्थितियों की वास्तविकता की उपेक्षा करती है, बल्कि सामाजिक–सांस्कृतिक उत्पादनों को भी नीचा दिखाती है–कलात्मक और वैज्ञानिक–जो प्रत्यक्ष एकरूपता परप्रश्न खडा करते हैं।

अर्जेंटीना की आत्म–पहचान स्पेनिश बोलने और कैथोलिक होने दोनों के विचार पर दृढ़ता से आधारित है। वास्तविकता, हालांकि, अधिक जटिल है। स्वदेशी भाषायें जेसे किचवा और गुआरानी कुछ प्रांतों में बोली जाती है, चीनी और कोरियाई प्रवासियों द्वारा शुरू की गयी और जिसने 1980 से दिखायी देना प्रारंभ किया, और विभिन्न प्रभावों–विशेष रूप से व्यापक स्पेनिश और इटालियन प्रवासीयों के कारण– ने विभिन्न तरीकों जिसमें देशभर में स्पेनिश बोली जाती है, में विभिन्न शब्दों, मुहावरों की अभिव्यक्ति, लहजे, इत्यादि के द्वारा निशान छोडे। धार्मिक विविधता समान रूप से जटिल है; जबकि कई स्वदेशी लोगों ने ईसाई धर्मांतरण को अनुभव किया, कुछ स्वदेशी विश्वास पहचानों को आकार देते रहे, जबकि बहुत से अर्जेंटीनियन आज यहूदी, विभिन्न प्रोटेस्टेंट विश्वास, अफ्रो–ब्राजिलियन धर्म, इस्लाम, बौद्ध धर्म और आत्मावाद का पालन करते हैं।

> सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता और अर्जेंटीना का भविष्य

जब तक अर्जेंटीना अपने देश की विविधता पर अधिक ध्यान देना शुरू नहीं करता, विकट अवस्थाओं जिनसे एक देश गुजर सकता है–जो अर्जेंटीना में चक्रीय दिखते हैं–मतभेदों को नैतिकता, प्रतिष्ठा और अधिकारों के पदानुक्रम में बदलते हुये, भेदभावपूर्ण भाषणों और प्रथाओं को पैदा कर सकता है। दशकों से यह मान लिया गया था >>

कि केवल सही उच्चारण वह है जो ब्यूनोस आयर्स का है, जबकि बाकी दूसरे लहजों को हीनता का सूचक माना गया।

आज, प्रवासियों के एक देश के रूप में, अर्जेंटीनियन ''नये प्रवासियों'' का काम के लिये स्वागत करते हैं, परंतु रोजमर्रा के सामाजिक संबंधों में अस्वीकार करते हैं। ये नये प्रवासी मुश्किल ही नये होते हैंः भेदभाव का प्रमुख केंद्र सीमांत देशों से आये हुये लोग होते हैं जैसे बोलिविया और परागुवे, जिनकी उपस्थिति 1869 की राष्ट्रीय जनगणना के बाद से ही अर्जेंटीना में स्थिर रही है : कभी भी जनसंख्या के 2 प्रतिशत से कम 3.1 प्रतिशत से अधिक नहीं। इन प्रवासियों के अर्जेंटीनियन बच्चे अक्सर बोलिवियन की तरह ही देखे जाते हैं–एक शब्द जो कि उत्तर–पूर्व से अये प्रवासियों को संबोधित करने के लिये उपयोग किया जाता है, और यहां तक कि सामान्य रूप से गरीब लोगों को।

1990 के बाद से यह प्रघटना तेजी से फैली है, जब बेरोजगारी पहले 15 प्रतिशत, बाद में 23 प्रतिशत पहुंच गयी। प्रवासियों के बारे में यह विचार कि जो नौकरियां चुराने आते हैं कई समाजों में विख्यात है, परंतु अर्जेंटीना विचित्र है : 2002 के आर्थिक संकट ने अचानक विदेशियों का डर कम कर दिया, और वास्तव में, 2004 में प्रवासियों के अधिकारों को मजबूत करने वाला एक कानून सर्वसम्मति से पास कर दिया गया। शोध बताते हैं कि एक प्रकार के सामाजिक नस्लवाद को पैदा करते हुये कट्टर नस्लवाल और वर्गवाद चल रहा है, परंतु बिना किसी विदेशियों के प्रति डर की राजनैतिक अभिव्यक्ति के।

फिर भी, हर बार मंदी के दौरान बेरोजगारी बढ जाती है, सार्वजनिक स्थानों में भेदभावपूर्ण भाषण प्रभाव और प्रासंगिकता हासिल करने लगते हैं। जब तक विविधता यूरोपियन के रूप में अर्जेंटीना की पारंपरिक स्वछवि को सिर्फ अस्थिर करती है पर इसे एक अधिक लोकतांत्रिक, समावेशी और अंर्तसांस्कृतिक दृष्टिकोण से बदलती नहीं है, नस्लीय और वर्ग अन्याय जारी रहेंगे। ■

सीधा संपर्क करे : अलेजेन्ड्रो ग्रिमसन <alegrimson@gmail.com>

> समकालीन अर्जेन्टीना में सामाजिक असमानता

ऑगस्टिन साल्विया एवं **बर्निस रूबियो,** ब्यूनोस आयर्स विश्वविद्यालय, अर्जेंटीना

ब्यूनोस आयर्स के धनी एवं निर्धन इलाके। जुआन इग्नासियो पियोवानी द्वारा फोटो।

अधिकांश लैटिन अमेरिकन समाज अल्पविकास और गंभीर असमानताओं से अंकित रहा है। बीसवीं सदी के मध्य में, हालांकि, अर्जेंटीनियन समाज एक विकल्प उद्धरित करता दिखायी देता है : उच्च शहरीकरण पूर्ण रोजगार, सार्वभौतिक स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा, उन्नत मध्यवर्ती औद्योगीकरण और एक विशाल मध्यम वर्ग– मध्यम असमानता और बहुत सामाजिक गतिशीलता वाला एक अपेक्षाकृत एकीकृत समाज।

>>

परंतु यह समाज इसकी भविष्य की चाही गयी प्रगति से दूर होते हुये नाटकीय ढंग से परिवर्तित हुआ है। वास्तव में, विशेष रूप से बींसवी सदी के अंत में, नवउदारवादी संरचनात्मक सुधारों के संदर्भ में, अर्जेंटीनियन समाज अल्पविकास के जाल से नहीं बच सका : आर्थिक उदारवाद, व्यापारिक खुलापन और वित्तिय लचीलेपन का परिणाम बिगड़ती हुई सार्वजनिक स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा के साथ अस्थिरता, बढती बेरोजगारी, गरीबी और सामाजिक सीमांतता हुआ।

इन प्रक्रियाओं ने गहरी असमानताओं, आंतरिक संघर्षों और सामाजिक असंतोषों से चिन्हित एक समाज का निर्माण किया, एक चक्र जिसने अर्जेंटीना के आधुनिक इतिहास को सबसे गहरे 2001–2 के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक संकट को पैदा किया।

इसके विपरीत, इक्कीसवीं सदी के पहले दशक ने एक अनुकूल अंतराष्ट्रीय संदर्भ की मदद से साबित किया कि कुछ आर्थिक, व्यावसायिक, सामाजिक, राजनीतिक और संस्थागत पुर्ननिर्माण संभव था। परंतु यह समय लंबा नहीं चला : अर्थव्यवस्था ठहर गयी, और समाज का संरचनात्मक विखंडन एक बार फिर स्पष्ट हो गया। 2015 तक, अर्जेंटीनियन समाज में हाशियाकृत, गरीब और बहिष्कृत हिस्सों की विभिन्न परतें शामिल थी। अपने परिवार के लिये पर्याप्त भोजन जुटाने में असमर्थ, अत्यधिक गरीबी में रहने वाले 6 प्रतिशत के साथ, जनसंख्या के लगभग 30 प्रतिशत को गरीब माना जा सकता था। व्यापक शहरी सीमांतता के द्वारा गरीबी बदतर हो गयी : 35 प्रतिशत घरों में सीवर नहीं थी, 20 प्रतिशत के पास पानी के नलों की कमी थी और 15 प्रतिशत अनियमित आवासों में रहते थे।

इन दरिद्र सामाजिक परिस्थितियों के जवाब में, विभिन्न पठन इनकार, अंधराष्ट्रता और उत्पीड़न के मध्य घूमते हैं। बहुत प्रायः सभी अर्जेंटीनियन सोचते हैं कि वे एक ऐसे समाज में रहते हैं जो समरूप, एकजुट, एकीकृत और योग्यतापूर्ण है, राज्य द्वारा राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में प्रचारित, और बाद में अपेक्षाकृत समृद्ध शहरी मध्यम वर्ग के विकास द्वारा सुदृढ़ की गयी एक रूढिवादी पौराणिक छवि। परंतु कई अन्य अर्जेंटीनियन विश्वास करते हैं कि वे दुनिया की सबसे बुरी सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं वाले दुनिया के सबसे गरीब और सबसे बदनाम देशों में से एक में रहते है।

ये विरोधाभासी छवियां–एक गौरवशाली अतीत और एक पतनशील वर्तमान– सामान्य ज्ञान के साथ साथ मीडिया और राजनीतिक बातचीतों में समा गया। इस संदर्भ में, अर्जेंटीना का सामाजिक संरचना का राष्ट्रीय सर्वेक्षण (ENES), समकालीन समाज पर राष्ट्रीय अनुसंधान कार्यक्रम (PISAC) की प्रमुख परियोजनाओं में से एक, मजबूती से संबंधित दो प्रक्रियाओं का अन्वेषण कर रही है : सामाजिक असमानताओं की संरचनायें; और जनसंख्या, कमजोर समूहों और विशिष्ट सामाजिक भागों की रहन–सहन की स्थितियां। चूंकि अर्जेंटीना में ठोस सामाजिक आंकड़ों या समाज के विस्तृत संरचनात्मक अध्ययनों का अभाव है, प्राथमिक आंकडे प्रदान करके और महत्वपूर्ण मुद्दों जैसे स्तरीकरण और सामाजिक गतिशीलता, आवास, जीवन की स्थितियों और विभिन्न क्षेत्रों, भागों और सामाजिक समूहों की पुनरूत्पादक सामाजिक नीतियों की जांच करके, दोनों में ENES ने महान योगदान दिया है। समान रूप से महत्वपूर्ण, ENES ने, रूढ़िवादी और पौराणिक स्व–प्रस्तुतीकरण को चुनौती देते हुये, समाज की एक अनुभव–आधारित छवि के निर्माण में मदद की है।

वास्तव में, आंकड़े दर्शाते हैं कि अर्जेंटीना की वर्तमान सामाजिक संरचना विषम, असमान और खंडित है। सबसे ऊपर, परंपरागत परिवारों से निर्मित एक राजनीतिक और आर्थिक अभिजात वर्ग और एक नया पूंजीपति वर्ग समाज के 3 प्रतिशत से कम हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस शिखर के नीचे, एक उच्च–मध्यम वर्ग कॉर्पोरेट निदेशकों, पेशेवरों, उद्यमियों, कृषि उत्पादकों और मध्यम आकार के व्यापारियों के साथ साथ कुशल तकनीशियनों और अर्थव्यवस्था के सबसे अधिक गतिशील क्षेत्रों के कर्मचारियों को शामिल करता है। अभिजात वर्ग के साथ, ये वर्ग समाज का एक तिहाई भाग का निर्माण करते हैं। ये सामाजिक भाग, दक्षिण यूरोप के मध्यम वर्ग के शिक्षा के स्तरों, जीवन की गुणवत्ता और उपभोग स्वरूपों से मेल खाती पश्चिमी संस्कृति में मजबूती से एकीकृत हैं। इनमें से अधिकांश व्यक्ति ब्यूनोस आयर्स के शहर और समीप के उपनगरों, केंद्रीय पंपास के प्रमुख शहरों और प्रांतीय राजधानी शहरों के सुरक्षित पडोस में केंद्रित हैं।

इसके आगे, जनसंख्या का बाकी 33 प्रतिशत मध्यम या निम्न–मध्यम वर्ग बनाता है, एक वर्ग जिसमें छोटे प्रतिष्ठानों के कर्मचारी, मध्यम और निम्न योग्यताओं वाले श्रमिक और कर्मचारी, सेवानिवृत्त पेंशनधारी और कुछ स्वतंत्र पेशेवर शामिल हैं। हालांकि, उनके पास गरीबी रेखा से ऊपर आमदनी और कुछ नौकरी की स्थिरता (महत्वपूर्ण रूप से, राष्ट्रीय सुरक्षा व्यवस्था से काम के माध्यम से संबद्धता सहित) है, यह समूह सामाजिक गतिशीलता बहुत कम या बिल्कुल नहीं दर्शाता है, और ये व्यक्ति आर्थिक उतार–चढ़ावों और तकनीकी परिवर्तनों के लिये अत्यधिक चपेट में हैं। जैसे कि सार्वजनिक सेवायें बदतर हो गयी हैं, इस निम्न–मध्यम वर्ग के व्यक्ति प्रायः निजी परिवहन, स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा तक पहुंच तलाशते हैं जो उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर सके–हालांकि ये प्रयास अक्सर असफल होते हैं।

अंत में, पिरामिड में सबसे नीचे, अर्जेंटीना के अंतिम 33 प्रतिशत विभिन्न परतें जोडते हैं : गरीब होते पूर्व मध्यम वर्ग, नये गरीब और अपवर्जित। सामान्यतः, यह स्तर अयोग्य स्वरोजगार श्रमिकों, सूक्ष्म उद्यमों के अनौपचारिक मजदूर, परिधिय क्षेत्रों के ग्रामीण श्रमिक या छोटे कृषि उत्पादकों को शामिल करता है। आमतौर पर, इनकी आमदनी अस्थिर और सामयिक कामों से, और सामाजिक सहायता कार्यक्रमों से आती है। ये निम्न–गुणवत्ता वाली सार्वजनिक सेवाओं और सार्वजनिक शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के निम्न ढांचे के प्रमुख उपयोगकर्ता हैं। ये निचले उपनगरों में या बड़ी सार्वजनिक आवास परियोजनाओं, विशेषकर अर्जेंटीना के उत्तर–पूर्व और उत्तर–पश्चिम में रहते हैं।

इस आखिरी समूह में, कई घर गंभीर वंचना, आधारभूत संरचना की कमी और पर्यावरणीय जोखिम अनुभव करते हैं। इसके अलावा, देश के बेरोजगारों का अधिकांश (9 प्रतिशत) और अनौपचारिक श्रमिकों का (30 प्रतिशत) इस भाग से संबंधित हैं। यह भाग 45 प्रतिशत युवाओं को शामिल करता है जिन्होंने हाईस्कूल खत्म नहीं किया है, और साथ ही 15 प्रतिशत बाल श्रमिक और 8 प्रतिशत बच्चे जो खाद्य असुरक्षा से ग्रसित हैं। इसके अतिरिक्त, इन घरों की महिलायें सबसे कठोर आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अपवर्जन से पीडित हैं, घरेलु जिम्मेदारियों के कारण या अनौपचारिक श्रम बाजार में काम करने के लिये प्रायः कुछ ही वर्षों में वे विद्यालय छोड देती हैं।

शोधकर्ताओं की एक बहुसंस्थागत टीम वर्तमान में ENES के द्वारा उत्पादित आंकड़ों का विश्लेषण कर रही है, संकलन करते हुये कि जो समकालीन अर्जेंटीना का अब तक का सबसे विस्तृत विवरण साबित हो सकता है। जैसा कि ये विश्लेषण पूरे हो चुके हैं,

>>

गरीबी और संबंधित सामाजिक असफलताओं के अर्जेंटीना के विभिन्न अनुभवों पर प्रकाश डालते हुये, ये हमारे समाज की गहरी विषमता और असमानता को उजागर कर रहे हैं। निष्कर्ष अर्जेंटीना और क्षेत्र में प्रचलित व्यापक नवउदारवादी चर्चाओं को भी चुनौती देते हैं, जो प्रतिभाशाली समाज में व्यक्तिगत प्रयासों के एक परिणामस्वरूप सामाजिक उपलब्धियों का वर्णन करते हैं और, इसके बदले, गरीबी के लिये व्यैक्तिक असफलता को दोष देते हैं। अर्जेंटीनियन समाज की नाजुक जीवन की स्थितियां और असंतुलित अवसर संरचना के विश्लेषण करके, हमारे आंकडे विशिष्ट क्षेत्रों और निश्चित सामाजिक समूहों में असमानता के गुंथे हुये रूपों के केंद्रित होने के तरीकों को दर्शाते हैं, एक बहुत ही कठोर सामाजिक संरचना जिससे बहुत कम ही बच सकते हैं।

देश के सभी प्रांतों में से 2000 से अधिक निवासी वाले 339 कस्बों के 27000 से अधिक व्यक्तियों और 8000 घरों से अधिक को शामिल करने वाले एक प्रादर्श को उपयोग करते हुये, ENES के निष्कर्ष दिखाते हैं कि कैसे असमानता के विविध रूप– वर्ग, लिंग, आयु, निवास क्षेत्र, पर्यावरण, शैक्षिक उपलब्धि, इत्यादि,– आपस में मिलते हैं। आंकडे समाज की एक जटिल छवि प्रस्तुत करते हैं, अंर्तक्षेत्रीय तुलना के साथ साथ क्षेत्रीय स्तर पर सामान्यीकरण करने की अनुमति देते हुये, और आंतरिक सामाजिक दूरियों और विषमजातियताओं पर अंतदृष्टि प्रदान करते हुये, जो पिछले अध्ययनों में छुप गयी थी जो सिर्फ सबसे बड़े शहरी केंद्रों पर ध्यान केंद्रित करते थे।

इस प्रकार के अध्ययन अर्जेंटीना में गरीबी, सीमांतीकरण और सामाजिक असमानताओं की बेहतर समझ प्रदान करते हैं। ना केवल शिक्षा के क्षेत्र में, बल्कि जनता की राय के लिये अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करके, हम लोकतंत्र की बहस को प्रदीप्त करने की आशा करते हैं कि कैसे आगे बढना है। हम आशा करते हैं कि वैज्ञानिक जानकारी जो हमने इकट्ठा की है, आम बहसों को समृद्ध और व्यस्त करेंगी, न्यूनकारी और सरलीकृत सामाजिक चर्चाओं को चुनौती देंगी, और सार्वजनिक नीतियों का निर्माण करने में योगदान देंगी जो अर्जेंटीना के संचित सामाजिक मुद्दों को संबोधित कर सकती हैं। ■

सीधा संपर्क करे :
ऑगस्टिन साल्विया <alegrimson@gmail.com>
बर्निस रूबियो <beer.rubio@gmail.com>

> अर्जेन्टीना में सामाजिक पूंजी की खोज

गेब्रियल केसलर, ला प्लाता राष्ट्रीय विश्वविद्यालय एवं आई एस. ए. के सदस्य, भविष्य शोध (आर. सी. 07), सामाजिक स्तरीकरण (आर. सी. 28) एवं सामाजिक मनोविज्ञान (आर. सी. 42) पर शोध समिति के सदस्य

2016 में सत्य एवं न्याय के स्मरण के दिन, सैन्य तख्तापलट की चालीसवीं सालगिरह पर युवा नर्तकों का एक समूह नृत्य करते हुए। हजारों अर्जेन्टाइनी सार्वजनिक प्रदर्शनों, विशेष रूप से मानवाधिकार के समर्थन में, सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।
जुआनजो डोमिन्यूज द्वारा फोटो

अर्जेंटीना के सूक्ष्म–सामाजिक रिश्ते किस प्रकार दिखते हैं? वो किस प्रकार अपने देश के अन्दर विभिन्नता रखते है एवं किस प्रकार विश्व के अन्य क्षेत्रों से अर्जेंटीना तुलना करता है? किस प्रकार वो अर्जेंटीना के अतीत से प्रभावित होते है एवं किस प्रकार वो अभी हाल ही के उत्तर उदारवादी काल से प्रभावित होते है? पी. आई. एस. ए. सी. (समसामयिक समाज पर अर्जेंटीना का राष्ट्रीय शोध कार्यक्रम) नेशनल सर्वे ऑन सोशल रिलेशन्स (ई. एन. आर. एस.) इन प्रश्नों के उत्तर खोजेंगे। प्रश्नों के उत्तर के अन्वेषण के दौरान वो, सामाजिक पूंजी, सामाजिकता, आत्म–पहचान एवं सामाजिक अवरोध, चिंताये, सहभागिता एवं सामूहिक क्रिया पर ध्यान केंद्रित करेंगे। भौगोलिक क्षेत्र एवं विषयों के अनुसार, यह सर्वे अपने आप में अलग प्रकार का है, इस प्रकार यह अर्जेंटीना के लिये नई जानकारी प्रदान कर पायेगा एवं अन्य लेटिन अमेरिकन देशों के सर्वे के लिये भी एक ढ़ांचे का कार्य कर पायेगा। अर्जेंटीना में पूर्व में किये गये अध्ययनों में नेटवर्क एवं सामाजिक पूंजी पर परम्परागत परिप्रेक्ष्य से अध्ययन किया गया है। उन्होंने सबसे अधिक अलाभप्रद सेक्टर में सोशल सपोर्ट नेटवर्क पर विश्लेषण किया, उदाहरण स्वरूप 2001 के संकट के उपरान्त। ई. एन. आर. एस. की परिकल्पना में, जो कि अंतराष्ट्रीय अध्ययनों से हमने ली है, यह उम्मीद करते हुये कि तुलना हो पायेगी, परन्तु हमने सूचकों को भी व्यवस्थित किया है ताकि स्थानीय लक्षण भी प्रतिबिंबित हो सके। अभी हाल ही के सफलतापूर्वक किये गये पॉयलट टेस्ट (गुणात्मक एवं गणनात्मक) के उपरान्त, हमारा क्षेत्रीय अध्ययन नवम्बर 2017 के लिये योजनाबद्ध है। यहां पर हम इस विस्तृत अनुसन्धान के मुख्य विचार एवं परिकल्पना प्रस्तुत कर रहे है, जो अर्जेंटीना में सूक्ष्म–सामाजिक संबंधों पर आधारित है।

लोगों का व्यक्तिगत नेटवर्क किस प्रकार अलग अलग सामाजिक समूहों में भिन्न रहता है? क्या हम कुछ पैटर्न एवं नियमितताओं का पता लगा सकते है–यदि ऐसा है तो, वे कौन से पैटर्न है? इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिये हमने ''नाम उत्पादन'' का प्रयोग किया, जिससे हम साक्षात्कर्ताओं के व्यक्तिगत सामाजिक नेटवर्क का पुनर्निर्माण कर पाये। एक अहम मुद्दा है उन अवशेषों को निर्धारित करना जो अधिक एकताबद्ध अरजेनटाइन के पुराने समाज एवं नये नव–उदारवदी काल, दोनों के द्वारा ही छूट गये (जैसा कि साल्विय एवं रूबियों ने वैश्विक संवाद 7.4 के संस्करण में समझाया है)। विशेषतः हम आश्चर्यचकित है कि क्या बुजुर्ग वर्ग के सामजिक नेटवर्क, युवा वर्ग के सामाजिक नेटवर्क से ज्यादा विभिन्नता लिये हुये हैं। इसका आधार है कि बुजुर्ग वर्ग का सामाजीकरण ज्यादा खंडित समाज में हुआ है। दूसरी तरफ, अधिक विकसित देशों में एवं लेटिन अमेरिका में, अंतराष्ट्रीय साक्ष्य यह दर्शाते है कि जैसे जैसे हम सामाजिक संरचना में नीचे की ओर अग्रसर होते

> >

हैं, सामाजिक नेटवर्क, ज्यादा रिश्तेदारों एवं समीप के संबंधों का होता जाता है। हमारी यह परिकल्पना है कि विभिन्नता के दूसरे निर्धारक – जैसे राजनीतिक संबद्धता, सांस्कृतिक एवं उपभोक्तावादी संबद्धतायें – वर्ग विपाटन का अंशपात करेंगे। लैंगिक संबंधों में बदलाव भी अहमियत रखता है एवं हम युवा महिलाओं के नेटवर्क में ज्यादा विभिन्नतायें पाने की अपेक्षा रखते हें। ऐसा इसलिये क्योंकि उनका सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं में बढ़ती हुयी भागीदारी है। हम यह भी देखने की कोशिश करेंगे कि युवा वर्ग का आभासी दुनिया में बढ़ती हुयी संलग्नता इंटरनेट से बाहर भी उनके नेटवर्क को प्रभावित करती है क्या। सर्वे देश के सबसे अधिक आधुनिक एवं सबसे अधिक परम्परागत क्षेत्रों में अंतर खोजने की भी कोशिश करेगा।

सामजिक पूंजी से हम क्या समझते है? और उसका किस प्रकार मापन किया जा सकता है? यह सर्वे के दूसरे मॉड्यूल की थीम है। हम सामाजिक पूंजी के विचार को गम्भीरता से ले रहे है, उसको संबंधों एवं संसाधनों के संदर्भ में परिभाषित करते हुये। हालांकि, सभी संबंधों की एक जैसी ''अहमियत'' नहीं होती है, क्योंकि उनके ''मूल्य'' का निर्माण होता है, संसाधनों के गुणों एवं मात्रा के द्वारा जिसको वो प्रयोग कर सकते है। नव–उदारवादी काल के चरम पर, बहुराष्ट्रीय संस्थायें शायद यह ''भूल'' गयी है। कई नीति निर्माताओं ने माना कि गरीबों को सामाजिक संबंधों में बदला जा सकता है (जिसे उन्होंने ''सामाजिक पूंजी'' का नाम दिया), विषम परिस्थितियों के पार पाने के लिये, बिना इस पर ध्यान दिये हुये कि उनके संबंधियों के संसाधनों की कमी, पूंजी के मूल विचार को ही चुनौती देती है।

लेटिन अमेरिका में दो विपरीत विचार इस मुद्दे को घेरे रहते हैं। एक तरफ नैतिक अर्थव्यवस्था के पुराने परिप्रेक्ष्य (यह संबंधित है चिली के मानवशास्त्री लैरिसा लोम्निटज के उल्लेखनीय कार्य से जो उन्होंने 1970 में किया) ने दावा किया कि, सामाजिक सेक्टर राज्य एवं बाजार के द्वारा अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ रहते है या बने रहने के लिये नेटवर्क का निर्माण करते है। इसलिये ज्यादा हाशिये की तरफ, ज्यादा ताकतवर जीवन निर्वाह नेटवर्क की अपेक्षा की जा सकती है। दूसरी तरफ, रोबर्ट केस्टल के असंबद्धता के विचार से यह लिया कि, नवउदारवाद के दौरान श्रम बाजार से बहिष्कार को सामाजिक पतन से सह–संबद्ध करके व्यापक रूप से स्वीकार किया गया। श्रम बहिष्कार, सूक्ष्म–सामाजिक संबंधों को मजबूत करने की बजाय कमजोर करता है। हमारी परिकल्पना यह है कि दोनों ही स्पष्टीकरण सबसे अधिक अलाभप्रद सामाजिक सेक्टर में वैध होते हैं। इस प्रकार चुनौती यह होगी कि हम यह समझाये कि हमने कुछ केस में अ–संबद्धता पायी एवं दूसरों में मजबूत सामाजिक नेटवर्क।

हम नेटवर्क एवं संसाधनों के मध्य कड़ी को भी खोजने का प्रयास करेंगे : क्या चक्रित होता है? किसके मध्य? एवं किन तरीको से। आदान प्रदान में शामिल होते है – वस्तु, श्रम अनुबंध, देखभाल, सलाह एवं विभिन्न प्रकार के सहारे। हम उम्मीद करते है कि असमान सामाजिक समूहों के द्वारा संसाधनों के आदान–प्रदान के अंतरों को समझ पायेंगे। साथ ही, हमें यह जानने में भी दिलचस्पी है कि धन किस प्रकार चक्रित होता है : कर्ज, उपहार, तीसरे पार्टी के द्वारा किया गया भुगतान आदि के रूप में। हम यह जानने की उम्मीद करते है कि क्या दिया गया एवं क्या प्राप्त किया गया, ताकि हम चक्र एवं आदान–प्रदान का नक्शा बना सके। यहां पर फिर से हम सामाजिक पूंजी के विचार को गम्भीरता से लेते हैं, जैसे हम ''गोल्डन कान्टेक्ट'' को खोजते है। इसका अर्थ है, कोई भी रिश्ता जो शक्ति, धन अथवा सामाजिक जानकारी के कारण लाभित पद पर हो एवं जिन्होंने महत्वपूर्ण क्षणों में किसी प्रकार का विशेष उपकार किया हो। सामाजिकता के विभिन्न प्रकार क्या है? यह प्रश्न चौथे मॉड्यूल का जो केन्द्रित है दोस्ती, परिवार एवं ज्यादा अर्थपूर्ण संपर्क पर, जो या तो आभासी है या आमने सामने वाले है जहां पर न तो पूंजी न ही आदान प्रदान दांव पर लगा हो। हम संबंधों के प्रकार एवं संपर्क की आवृत्ति को भी जानने में दिलचस्पी रखते है जो विभिन्न सामाजिक समूह के अपने संबंधियों के साथ होते हैं।

आभासी दुनिया के संदर्भ में, हम यह अपेक्षा करते है कि सामाजिकता में कमी लाने से परे, आभासी संबंध एवं आमने सामने वाले संबंध एक दूसरे को सुदृढ़ करते है, विशेषतः युवाओं में। परन्तु, क्योंकि अर्जेंटीना एक ऐसा देश है जिसमें गहन शहरी सामाजिक जीवन है, हम ऐसी जगहों के लिये भी चिंतित है जहां सामाजिकता का प्रचलन है एवं उनके मुठभेड़ के क्षेत्रों का भी अध्ययन करने में हमारी दिलचस्पी है। साथ ही, दूसरे देशों के लोगों से भी हम संबंध खोजेंगे। परिकल्पना यह है, कि यह संबंध प्रवासी जनसंख्या एवं उच्च वर्ग में तुलनात्मक रूप से अधिक होगा, उनके अंतराष्ट्रीय संपर्कों के कारण। अरजेनटाइन समाज में दोस्ती एक आवश्यक मूल्य है; हम दिलचस्पी रखते है यह निर्धारित करने में कि इनका उद्भव कैसे हुआ एवं किन जगहों पर हुआ। इसके लिये सामाजीकरण के विभिन्न आयामों को संदर्भ में लिया जायेगा।

स्व पहचान एवं सामाजिक अवरोध पर मॉड्यूल, स्व–पहचान के प्रकार एवं नेटवर्क–निर्माण से उनकी संबद्धता की खोज करेंगे। हम उम्मीद करते है, हम उन भेदभावों व रूढ़िवादी कारकों को खोज पायेंगे जो संबंध नेटवर्क को स्थापित करने में अवरोधों की भूमिका निभाते है। संघर्ष सूक्ष्म सामाजिक संबंधों के भाग है, इसलिये सर्वे तनावग्रस्त संबंधों एवं संघर्षों के प्रकार को भी जानने का प्रयास करेगा।

आखिर में, परन्तु काफी महत्वपूर्ण हम उन संस्थानों को भी जानने का प्रयास करेंगे जिससे विभिन्न लोग संबंधित है, समय जो लोग उन संस्थानों को देते है एवं क्रियायें जिनमें वो भाग लेते हे, ताकि हम उन रास्तों को टटोल पायें जो सहभागिता बताते है। सामान्य रूप से, पूर्व में किये गये अध्ययन बताते है कि संस्थागत सहभागिता का स्तर अपेक्षाकृत कम है, इसलिये हम यह जानना चाहते है कि क्या सोशल मीडिया ने इसे बदला है। हम समझना चाहते हैं, सहभागिता के विभिष्ट एवं अनियमित प्रकार जो हो सकता है पुराने सर्वे में नजरअंदाज कर दिये गये हो।

सिर्फ कुछ आयाम एवं मुद्दे है जिन्हें ई. एन. आर. एस. शामिल करने का प्रयास करेगी। पी. आई. एस. ए. सी. के दूसरे प्रोजेक्टों के साथ, हम उम्मीद करते है कि पहली बार अर्जेंटीना समाज का गहन चित्र उभर पायेगा। यह न केवल हमें हमारे समाज को बेहतर तरीके से जानने में मदद करेगा, अपितु समाजशास्त्र की समसामयिक चर्चाओं में ज्यादा सहभागिता में भी मदद करेगा। यह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है कि, हम यह उम्मीद करते हैं कि सर्वे जन चर्चाओं में नवीन प्रकार की सहभागिता एवं जन नीतियां, जो समाज विज्ञान के ज्ञान से जानकारी प्राप्त करती है के विकास के लिये उच्च प्रतिबद्धता की नींव रखेगा। ■

सीधा संपर्क करे : गेब्रियल केसलर <gabriel_kessler@yahoo.com.ar>

> अली शरीयात,
इस्लाम का भूला हुआ समाजशास्त्री

सुहील रसूल मीर, कश्मीर विश्वविद्यालय, भारत

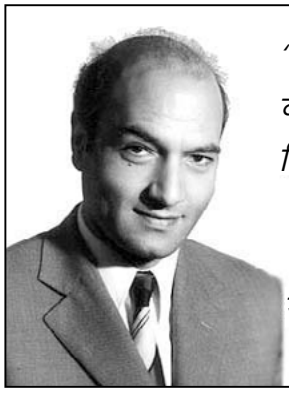

''ऐसे राष्ट्र जहां सिर्फ सरकार को बोलने की स्वतन्त्रता है, वहां किसी का भी विश्वास मत करो।''

"در مملکتی که فقط دولت حق حرف زدن دارد، هیچ حرفی را باور نکنید."

डॉ. अली शरीयाती

अली शरीयाती

अली शरियाती (1933–1977) को व्यापक रूप से ईरान की 1979 की क्रांति के वॉल्टेयर के रूप में जाना जाता है। उनका जन्म एक धार्मिक परिवार में हुआ था, एवं उन्होंने अपनी डॉक्ट्रेट की उपाधि 1963 में सोरबोन के फैकल्टी डेस लैट्रीस एत साइंसिस हयूमेन्स से ली थी। उनकी मृत्यु 1977 में इंग्लैंड में हुयी थी। पेरिस में, शरियाती ने पश्चिम के सामाजिक–राजनीतिक विचारों को उत्साहपूर्वक पढ़ा एवं वे कार्ल मार्क्स, जीन–पॉल सारतरे, जार्जस गुरविच, फ्रेन्ज फेनन एवं लुई मैसिगनन से काफी प्रभावित हुये। क्रांति पूर्व के ईरान में उनकी व्यापक प्रशंसा होती थी। वहाँ पर उनको परिधीय ''बागी'' माना जाता था–एक ''परेशान करने वाला इस्लामी मार्क्सवादी'' जिसको चुप कराना आवश्यक था। उनकी मौलिकता इसमें निहित है कि उन्होंने धर्म को अन्य बौद्धिक विरासतों के साथ किस प्रकार पिरोया।

डॉ. अली शरियाती उन मुस्लिम बुद्धिजीवियों में से एक हैं जिन्होंने उन समस्यातओं के उत्तर ढूंढनें की कोशिश की है, जो पश्चिमी–प्रभुत्व वाले विश्व में मुसलमानों के समक्ष आती हैं। उनके विचार में नवीन सांस्कृतिक पुनरविन्यास, व्यक्ति के अस्तित्व को स्वायत्तता को पहचानने, मुस्लिम समाज की स्थिरता एवं अल्पविकास के संरचनात्मक कारणों पर काबू पाने में मदद कर सकता है। अपने उपनिवेशवादी विरोधी विमर्श में शरियाती ने समाज की मुक्ति में धर्म की भूमिका पर जोर डाला है। फ्रेन्टज फेनन के ''नव मानव'' की गूंज को सुनाते हुये, शरियाती ने ''नवीन सोच'', ''नवीन मानवता'', एवं एक ज्यादा मानवीय आधुनिकता का आवाहन किया है, जो तीसरी दुनिया को दूसरे यूरोप, यूनाइटेड स्टेट्स, या सोवित संघ में बदलने की इच्छा न रखती हो।

बीसवीं सदी के एक प्रभावशाली मुस्लिम विचारक के रूप में, अली शरियाती ने 1960 एवं 1970 के दौरे में, ईरान में उग्र सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन के धार्मिक विभक्त विमर्श की अभिव्यक्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इसी कारण वश कई विद्वान शरियाती को राजनीतिक इस्लाम के समर्थक के रूप में देखते हैं। समाजशास्त्रीय संदर्भ में धर्म की भूमिका एवं प्रकार्य को मार्क्स वेबर एवं एमाइल दुर्खीम के तर्ज पर देखना, शरियाती एवं उल्मा के बीच अलगाव का एक स्त्रोत बना। शरियाती के कार्य का बड़ा भाग मार्क्सवाद से संबंधित है। उन्होंने मार्क्सवाद की अवधारणाओं जैसे ऐतिहासिक निर्धारकतावाद एवं वर्ग संघर्ष को इस्लाम की ''पुनः व्याख्या'' के लिये प्रयोग में लिया। यह ''धार्मिक मार्क्सवाद'' या ''मार्क्सवाद का धार्मिकरण'' शरियाती का सबसे नवीन बौद्धिक योगदान है। उनके अनुसार, जहां मार्क्सवाद असफल होता हुआ प्रतीत हो रहा था, वहां सफल होने के लिए इस्लाम के संशोधित संस्करण की आवश्यकता थी।

शरियाती के अनुसार, धर्म एक आन्दोलन के रूप में एक आधुनिक विचार धारा है एवं धर्म एक संस्था के रूप में रूढ़ियों का संग्रह है। उनकी पुस्तक 'रेलिजियन अगेंस्ट रेलिजियन' में शरीयाती ने इस्लाम की व्याख्या पर पादरी के एकाधिकार नियंत्रण, की आलोचना की, जो तानाशाही को स्थापित करने के लिये थी। उनके शब्दों में, यह मानव इतिहास की सबसे बुरी एवं दमनकारी तानाशाही होगी। यह ''समस्त अधिनायकवाद एवं तानाशाही की माता'' होगी। शरियाती ने स्वयं परानुभूति पूर्ण इन अन्तरों पर जोर डाला : ''धर्म के दो आयाम है; एवं वो एक दूसरे के विरोधी है। उदाहरण स्वरूप, धर्म से कोई इतनी नफरत नहीं कर सकता जितनी मैं करता हूं एवं धर्म में कोई इतनी उम्मीद भी नहीं रख सकता जितनी मैं रखता हूं।'' शरियाती एक ऐसे उग्र आदमी का धर्म उत्पन्न करने में सफल हुये जिसने अपने आप को पुरातन पादरीवाद से अलग किया एवं सामाजिक आन्दोलन, तकनीकी नवीनीकरण एवं सांस्कृतिक आत्म–अभिकथन के धर्म त्रिमूर्ति से खुद को जोड़ा।

>>

शरियाती मानते थे कि सामजिक परिवर्तन तभी सफल होगा जब जागरूक चिंतक, बुद्धिजीवी वर्ग, अपने विश्वास की सच्चाई को पहचानेंगे। शरियाती तर्क देते थे कि बुद्धिजीवी वर्ग, समाज के महत्व पूर्ण विवेक है एवं समाज में पुनर्जागरण और सुधार लाने के लिये जिम्मेदार है। इस प्रकार, युवा शरियाती ने ''प्रतिबद्ध/मार्गदर्शित प्रजातन्त्र'' की अवधारणा का समर्थन किया। 'कम्यूनिटी एंड लीडरशिप' में उन्होंने ''प्रतिबद्ध/मार्गदर्शित प्रजातन्त्र'' की विचार धारा की वकालत की। इसका अर्थ बताया गया कि यह बुद्धिजीवियों की जिम्मेदारी है कि वो क्रांति के बाद के संक्रमण काल में जन चेतना जगाये एवं जनता की राय का मार्गदर्शन करे। एक सामजिक न्याय का संदेश दिया एवं समानता आधारित समाज के निर्माण की कोशिश की। शरियाती के लिये मौजूदा प्रजातन्त्र न्यून्तर है। शरियाती ने अधिकतमवाद के लिये उग्र प्रजातन्त्र का आवाहन किया।

शरियाती की पुरजोर समानतावादी विचारधारा एवं निरंतर वर्ग असमानता की आलोचना ने उन्हें सामाजिक चिंतक बना दिया। हालांकि उनके लिए समाजवाद सिर्फ उत्पादन का तरीका नहीं था बल्कि जीवन जीने का ढंग था। वे राज्य समाजवाद के आलोचक थे जो व्यक्तित्व, पार्टी एवं राज्य की पूजा करता था एवं उन्होंने ''मानवतावादी समाजवाद'' को प्रस्तावित किया। शरियाती के अनुसार, राज्य की वैधता जन चैतन्य एवं जन की स्वतन्त्र सामूहिक मर्जी से उत्पन्न होती है। उनके लिये, स्वतंत्रता एवं सामाजिक न्याय को आधुनिक आध्यात्मिकता के साथ पूर्ण करना चाहिये। उनकी स्वतंत्रता, समानता एवं आध्यात्मिकता की त्रिमूर्ती आधुनिक विकल्प की विचारधारा के लिये एक महत्वपूर्ण योगदान है।

शरियाती की विरासत एवं उनके समकालीन अनुयाइयों ने इस्लाम/आधुनिकता, इस्लाम/ पश्चिम एवं पूर्व/ पश्चिम के गलत युग्मकों के विखंडन में योगदान दिया। दो चरम सीमाओं के मध्य, तीसरे रास्ते के लिये वकालत करते हुये, शरियाती के विचारों ने दूसरे समकालीन सुधारक जिसमें अब्दोलकारिम सोरोश एवं अब्दुलाही अहमद अन–नेइम के इस्लामी उदारवाद विचार शामिल है के साथ एक सामान्य जमीन ढूंढी। अली शैरिआती का समाजशास्त्र में योगदान है कि उन्होंने अ–पश्चिमी समाजों में पश्चिम सभ्यता का निरंतर प्रभुत्व को प्रिमाइस के रूप में लिया। उनके ज्यादातर लेख समकालीन विश्व में भी उतने ही प्रासंगिक एवं उपयोगी है, जितने वे तब थे जब वो पहली बार लिखे गये थे। ■

सीधा संपर्क करे : सुहैल रसूल मीर
<mirsuhailscholar@gmail.com>

> वैश्विक संवाद का
चीनी संस्करण

जिंग माओ हो

जिंग माओ हो 2010 में *वैश्विक संवाद* से जुड़े। उस वक्त वो डंग–शेंग चेन, जो कि राष्ट्रीय ताइवान विश्वविद्यालय के विलक्षण प्रोफेसर थे, के शोध सहायक के रूप में कार्य कर रहे थे। शुरूआत के कुछ वर्षों में डॉ. चेन ने अनुवाद एवं संपादन कार्य का निरीक्षण किया। यह कार्य वो कभी कभी माऊ कयूई चेंग, जो कि अकेडमिआ सिनिका ताइवान में समाजशास्त्र के रिसर्च फैलो के रूप में कार्य कर रहे थे, के साथ करते थे। जिंगमॉओ हो ने अंग्रेजी *ग्लोबल डायलॉग* को दोनों पारंपरिक एवं सरलीकृत चीनी भाषा में अनुवाद के दौरान काफी कुछ सीखा एवं आनंद का अनुभव किया। उन्होंने यह अनुवाद *वैश्विक संवाद* के प्रथम संस्करण के प्रथम संस्करण से ही शुरू कर दिया। अब वो यू. एस. ए. की कोरनेल विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के शोध विद्यार्थी है। इससे पहले उन्होंने कम्प्यूटर साइसं में एम. एस. एवं समाजशास्त्र में एम. ए. की उपाधि राष्ट्रीय ताइवान विश्वविद्यालय से ली है। उनकी मास्टर डिग्री की थीसिस 'सार्वजनिक बुद्धिजीवियों का सांकेतिक संघर्ष' को ताइवान के समाजशास्त्रीय संघ ने सर्वश्रेष्ठ मास्टर थीसिस अवार्ड से सम्मानित किया है। उनकी डॉक्टोरल थीसिस ने सांख्यिकी एवं राष्ट्र–राज्य निर्माण के मध्य संबंध का अध्ययन करने के लिये तुलनात्मक एवं ऐतिहासिक उपागम का प्रयोग किया। वो व्यापक रूप से राजनीतिक समाजशास्त्र, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी अध्ययन, अन्तराष्ट्रीय समाजशास्त्र, गुणात्मक प्रणाली एवं सिद्धांतों के विषयों पर शोध में संलग्न है। ■

सीधा संपर्क करे : जिंग माओ हो <hojingmao@gmail.com>